₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

फ़रवरी 2015

- अल्लामा इक़बाल का चिंतन
  –प्रो॰ अब्दुल हक़
- मृत्यु के पश्चात क्या ?
  –सैयद शाहिद अली
- स्रष्टा की पहचान भी हो
  –मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद
- महिला विरोधी कुप्रथाएं
  –डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- पर्यावरण प्रदूषण का निदान
  –डॉ॰ सुरेश उजाला

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 24 अंक 8 फ़रवरी 2015

इन्सान के लिए कुछ नहीं है मगर वह जो उसने प्रयास किया है और यह कि उसका प्रयास जल्द ही देखा जाएगा फिर उसका पूरा बदला उसे दे दिया जाएगा ।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

शीशमहल कुछेक ने क्या हुआ गर बना लिये
रंज न कीजिए कि संग आप भी एक उछालिये

जब भी पड़ा कठिन है वक़्त सबने ही मुंह फिरा लिये
हमसफ़र और हमनवा जितने थे आज़मा लिये

आइये, मिल के तय करें प्यार की हर हसीं डगर
दिल है मुहब्बतों का घर, दिल से गिले निकालिये

औरों पे धरना तोहमतें काम तो है बहुत सहल
ऐसे अमल से पहले आप ख़ुद को भी तो खंगालिये

वक़्त बदल चुका है आज, वक़्त का देखिये मिज़ाज
ख़ुद में न वक़्त ढालिये, वक़्त में ख़ुद को ढालिये

देखता रह गया समाज, विष भी असर न कर सका
कुछ इस अदा से मीरा ने मन में सजन बसा लिये

देश के नाख़ुदा तो हैं अपनी ही परवरिश में गुम
कश्ती बची रहे ख़ुदा, आ के इसे संभालिये

वो न कभी सुलझ सकी, बात जो भी उलझ गयी
रिश्तों में पेचो-ख़म ज़रा सोच-समझ के डालिये

सच ही तो है कहा गया, इनसे न कोई बच सका
ग़ैर तो ग़ैर हैं इन्हें आस्तीं में न पालिये

एक ख़ुदा को छोड़कर सजदा करे है दर-ब-दर
आज हर एक शख़्स ने कितने ख़ुदा बना लिये

तेरी रिज़ा को है सलाम, तेरी अता क़बूल है
तूने दिये जो रंजो-ग़म, हंस के तमाम उठा लिये ।

● **'दरवेश' भारती**

संपादक : 'ग़ज़ल के बहाने'



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–दरवेश भारती	3
क़ुरआन ज्योति		5
अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी)		6
कुछ विचारणीय बातें (संपादकीय)		7
लापता बच्चे (आपके पत्र)		8
कविताएं	–जय प्रकाश बाल्मीकि	12
मृत्यु के पश्चात क्या ? (आस्था)	–सैयद शाहिद अली	13
ग़रीबी (कविता)	–रुस्तम हुसैन	16
स्रष्टा की पहचान को भी बनाएं पाठ्यक्रम का अंश (भेंटवार्ता)		17
पर्यावरण प्रदूषण : समस्या एवं समाधान	–डॉ॰ सुरेश उजाला	21
महिला विरोधी कुप्रथाएं (फेसबुक उवांच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	24
अल्लामा इक़बाल का आर्थिक दृष्टिकोण (विशेष आयोजन)	–प्रो॰ अब्दुल हक़	26-27
एक ही जगह दो अनुभव (संस्मरण)	–जय प्रकाश बाल्मीकि	32
भाषा (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	32
बातों-बातों में (कहानी)	–डॉ॰ सलीम ख़ां	33
लघुकथाएं		36
लेखन में सावधानी बरतें–सुषम बेदी (साहित्यिकी)		37
गीत	–प्रो॰ शरदनारायण खरे	40
मधुमेह : कुछ महत्वपूर्ण सवाल-जवाब (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ बी॰ बी॰ अग्रवाल	41
जनप्रतिनिधि, मर्यादा और लोकतंत्र (अभिमत)	–डॉ॰ मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी	44
दोषियों को बचाने की प्रतिस्पर्धा ! (ज्वलंत सामयिक)	–राजीव यादव	45
ग़ज़ल	–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'रसा'	46
विलुप्त हो रही है दुर्लभ सोन चिरैया (बालवीथी)	–पंकज चतुर्वेदी	47
साबुन का इतिहास	–विद्या प्रकाश	49

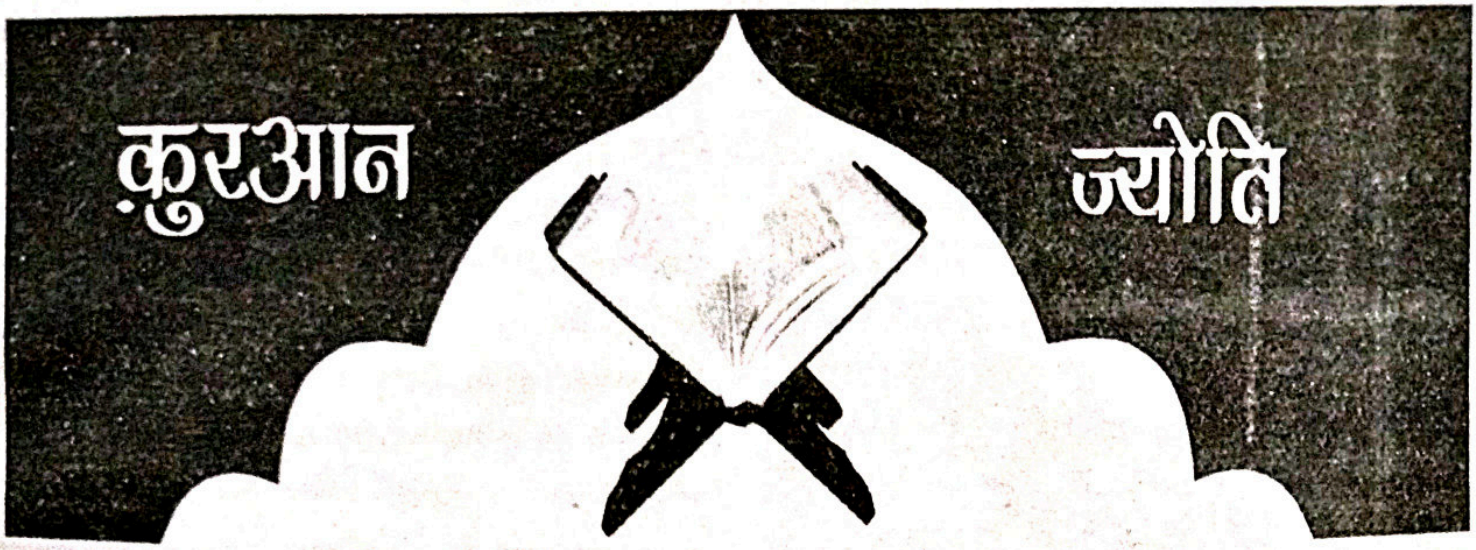

(67) मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें, सब एक-दूसरे के हमरंग हैं, बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से मना करते हैं और अपने हाथ भलाई से रोके रखते हैं ।[75] ये अल्लाह को भूल गये तो अल्लाह ने भी इन्हें भुला दिया । निश्चित रूप से ये मुनाफ़िक़ ही अवज्ञाकारी हैं । (68) इन मुनाफ़िक़ मर्दों और औरतों और काफ़िरों (इन्कार करने वालों) के लिए अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा किया है जिसमें वे हमेशा रहेंगे, वही इनके लिए उचित है । उन पर अल्लाह की फिटकार है और उनके लिए सदैव स्थिर रहने वाला अज़ाब है–(69) तुम लोगों के[76] रंग-ढंग वही हैं जो तुमसे पहले के लोगों के थे । वे तुमसे अधिक बलशाली और तुमसे बढ़कर माल और औलाद वाले थे । फिर उन्होंने दुनिया में अपने हिस्से के मज़े लूट लिए और तुमने भी अपने हिस्से के मज़े उसी तरह लूटे जैसे उन्होंने लूटे थे, और वैसे ही वाद-विवादों में तुम भी पड़े रहे जैसे वाद-विवादों में वे पड़े थे ।

–क़ुरआन, 9 : 67-69

---

75. ये तमाम मुनाफ़िक़ों की संयुक्त विशेषता है । इन सबको बुराई से दिलचस्पी और भलाई से दुश्मनी होती है । कोई आदमी बुरा काम करना चाहे तो उनकी सहानुभूति, उनके मशविरे, उनका प्रोत्साहन, उनकी सहायताएं, उनकी सिफ़ारिशें, उनकी प्रशंसाएं सब इसके लिए हर समय प्राप्त होंगी, दिल व जान से स्वयं इस बुरे काम में शरीक होंगे, दूसरों को उसमें हिस्सा लेने पर उभारेंगे, करने वाले की हिम्मत बढ़ाएंगे और उनकी हर गति से यह प्रकट होगा कि इस बुराई के परवान चढ़नें ही से कुछ उनके दिल को राहत और उनकी आंखों को ठंडक पहुंचती है । इसके विपरीत कोई भला काम हो रहा हो तो उसकी ख़बर से उनको सदमा होता है, उसे सोचकर उनका दिल दुखता है । उसका प्रस्ताव तक उन्हें गवारा नहीं होता, उसकी ओर किसी को बढ़ते-देखते हैं तो उनकी आत्मा बेचैन होने लगती है । हर संभव तरीक़े से उसकी राह में रोड़े अटकाते हैं और हर तरीक़े से यह कोशिश करते हैं कि किसी तरह वह इस नेकी से बाज़ आ जाए और बाज़ नहीं आता तो इस काम में सफल न हो सके । फिर यह भी इन सबकी संयुक्त विशेषता है कि नेकी के काम में ख़र्च करने के लिए उनका हाथ कभी नहीं खुलता, चाहे वे कंजूस हों या बड़े ख़र्च करने वाले, बहरहाल उनका धन या तो तिजोरियों के लिए होता है या फिर हराम रास्तों से आता और हराम ही रास्तों में बह जाता है । बदी के लिए चाहे वे अपने समय के क़ारून हों, परन्तु नेकी के लिए इनसे ज़्यादा 'दरिद्र' कोई नहीं होता ।

76. मुनाफ़िक़ों का परोक्ष वर्णन करते-करते यकायकी उनसे सीधा संबोधन शुरू हो गया है ।

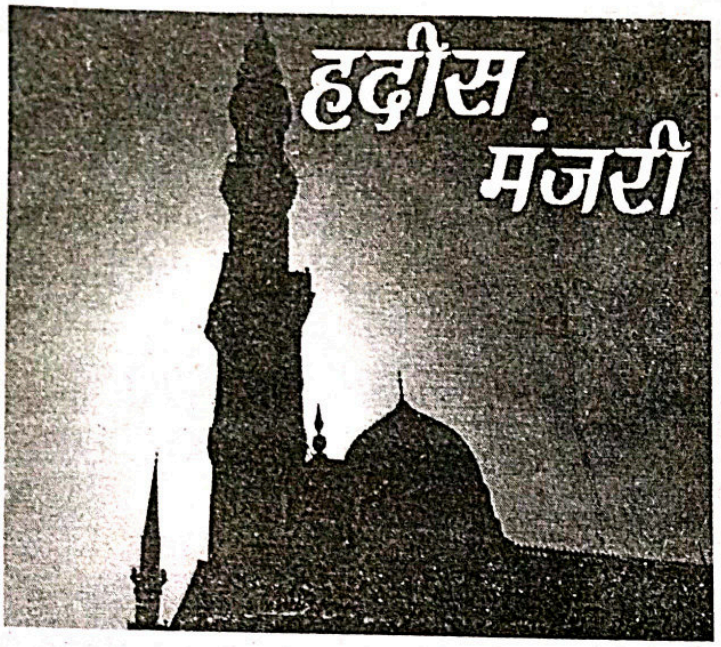

अल्लाह का ज़िक्र

● हज़रत अबू मालिक अल-अशअरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "सुथराई आधा ईमान है और 'अलहम्दो लिल्लाह (प्रशंसा अल्लाह के लिए है) तुला को भर देता और 'सुबहानल्लाह' (महान है अल्लाह) और 'अलहम्दोलिल्लाह' आसमानों और ज़मीन के मध्य के अंतराल को भर देते हैं–या प्रत्येक भर देता है ।"

–मुस्लिम

● हज़रत सौबान (रज़ि॰) से रिवायत हे । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब नमाज़ से निवृत्त होते, तो तीन बार क्षमा-याचना करते और कहते : "अल्ला हुम्मा अन्तस सलामु व मिन्कस्सलामु, तबारकता या जलजलालि वल इकराम ।" (ऐ अल्लाह, तू सर्वथा सलामती है और सलामती तेरी तरफ़ से है, बड़ा बरकत वाला है तू प्रताप और प्रतिष्ठा के स्वामी ।) औज़ाई से, जो हदीस के एक रावी हैं, पूछा गया कि क्षमा-याचना क्या है ? कहा : आप पढ़ते थे : 'अस्तग़फ़िरुल्लाह, अस्तग़फ़िरुल्लाह' (मैं अल्लाह से क्षमा-याचना करता हूं, मैं अल्लाह से क्षमा-याचना करता हूं ।)

–मुस्लिम

● हज़रत मुग़ीरह बिन शोअबह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब नमाज़ से निवृत्त होते और सलाम फेरते तो कहते : "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है और प्रशंसा उसी के लिए है और उसे हर चीज़ पर पूर्व सामर्थ्य प्राप्त है । ऐ अल्लाह, तू जो प्रदान करे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं और तेरे मुक़ाबले में किसी साधन-सम्पन्न व्यक्ति का साधन उसे कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकता ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) से रिवायत है कि हर नमाज़ के बाद जब सलाम फेरते तो यह कहते : अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है और प्रशंसा उसी के लिए है और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है, न कोई ताक़त है और न कोई शक्ति किन्तु अल्लाह के द्वारा, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, और हम केवल उसी की बन्दगी करते हैं, उसी का अनुग्रह है और उसी का उदारदान और उसी के लिए अच्छी प्रशंसा है । अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, हमारे यहां दीन (भक्ति और बन्दगी) केवल उसी के लिए है । चाहे विधर्मियों को यह बुरा ही लगे । हज़रत इब्न ज़ुबैर (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) हर अनिवार्य नमाज़ के बाद इन्हीं शब्दों के द्वारा अल्लाह के एकमात्र पूज्य होने की अभिव्यक्ति करते थे ।

–मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

कुछ विचारणीय बातें

अभी कुछ दिनों पहले मीडिया में यह ख़बर आयी कि यूरोप में मुस्लिम सार्वजनिक तौर पर ईसाई धर्म अपना रहे हैं । यह बात भी कही गयी कि उन्हें इस बात की भी परवाह नहीं है कि धर्म का त्याग करने के बारे में कोई क्या सोचेगा । जानकारों का मानना है कि दुनिया भर में जिहाद और आतंक के नाम पर मुस्लिम समुदाय की बदनामी भी इसका एक प्रमुख कारण है । इस ख़बर में तीन उदाहरण भी दिये गये हैं, जिनके आधार पर निष्कर्ष निकालने की कोशिश की गयी है । इस विषय पर फ्रांस में फ़िल्मकार चैयने कैरन ने फ़िल्म 'द अपोस्ट्ल' नामक फ़िल्म का बना डाली है । जो उदाहरण दिये ये हैं, उनमें से एक फ्रांसीसी 46 वर्षीय सईद ओजीबाऊ भी हैं, जिनके बारे में बताया गया कि वे मुसलमान से पादरी बने हैं । इनके बारे में एक विचारणीय बात यह है कि कोई ईसाई धर्म अपनाते ही पादरी कैसे बन सकता है ? अतः इस धर्मान्तर मामले में लोभ-लालच की अधिक संभावना है । ओजीबाऊ का यह कथन भी विरोधाभासी एवं भ्रामक है कि 'विशेषज्ञ भले ही कहे कि यूरोप में ज़्यादातर लोग मुसलमान बन रहे हैं, लेकिन सच यह है कि मुसलमान तेज़ी से ईसाई धर्म अपना रहे हैं ।' ख़बर के एक और उदाहरण में वास्तविक नाम ही नहीं दिया गया है, जिसके कारण ख़बर मनगढ़ंत मालूम पड़ती है । तीसरा उदाहरण लंदन के 25 वर्षीय इम्तियाज़ का है, जिनके बारे में कहा गया कि उन्होंने एक भूमिगत मुस्लिम समुदाय ज्वाइन कर लिया है । इस समुदाय में मात्र तीन सौ सदस्य हैं । यह ईसाई समुदाय क़तई नहीं है । अतएव इस ख़बर में दिये गये तीनों उदाहरण संदिग्ध हैं ।

इन तीनों के अतिरिक्त न तो कोई सर्वेक्षण किया गया है और न ही अन्य कोई विश्वसनीय उदाहरण, जिसके कारण पूरी की पूरी ख़बर प्रायोजित/पेड लगती है, जिसे इस्लाम-मुस्लिम विरोधियों ने प्रकाशित/प्रसारित करवा दी है, ताकि इस्लाम की छवि ख़राब करने और मुसलमानों पर कीचड़ उछालने की एक और कोशिश की जा सके । वास्तव में यूरोप में इस्लाम के बढ़ते प्रभाव से इस्लाम विरोधी काफ़ी चिंतित हैं । विश्वविख्यात विचारक बर्नार्ड लिविस ने कई साल पहले 2002 में विश्लेषण करते हुए पूर्वानुमान किया था कि 21वीं शताब्दी के समाप्त होते-होते यूरोप का इस्लामीकरण हो जाएगा । प्रसिद्ध लेखक प्रो॰ सैम्यूअल हन्टिंगटन के अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि इस्लाम प्रसार की दृष्टि से यूरोप में सबसे आगे है । प्रो॰ सैमुअल हन्टिंगटन की सभ्यता-संघर्ष की अवधारणा की तरह बर्नार्ड लिविस यह तो नहीं कहते हैं कि यह विश्व को किसी संभावित महायुद्ध की ओर धकेल रहा है, पर वे यह मानते हैं कि शायद लोग चौकेंगे नहीं यदि यूरोप का धीरे-धीरे इसी सदी के अंत तक इस्लामीकरण हो जाए । फ्रांसीसी समाचार एजेंसी ए॰एफ॰पी॰ और एसोसिएटेड प्रेस द्वारा 'द फोरम आन रिलिजन एंड पब्लिक लाइफ' के एक तीन वर्षीय अध्ययन से यह तथ्य उजागर हुआ है कि आज विश्व भर में हर चार में से एक व्यक्ति इस्लामी आस्था को मानता है । दुनिया की सबसे बड़ी मुस्लिम जनसंख्या वाले 90 देशों में भारत का स्थान आज तीसरा है । अतः उक्त प्रचार, दुष्प्रचार है ही, भ्रामक और निराधार भी है !

लापता बच्चे

आये दिन समाचार पत्रों के किसी न किसी कोने में देश के किसी न किसी भू-भाग में अवयस्क तथा अबोध बच्चों के लापता हो जाने की ख़बर पढ़ने को मिलती रहती है । देश विशाल है और आबादी बड़ी है । संभव है आपके आसपास कोई ऐसा परिवार न मिले जिसके बच्चे होश संभालने से पहले ही गुमशुदा हो चुके हों । इसलिए आपको जानकर थोड़ा विस्मय होगा लेकिन वास्तविकता यह है कि देश भर में छोटे-बड़े लगभग 800 गैंग सक्रिय हैं तथा वे तमाम छोटे-छोटे कमसिन बच्चों को ग़ायब कर मानव तस्करी के ख़तरनाक धंधे में लिप्त हैं । यह रिकार्ड सी॰बी॰आई॰ का है । मां-बाप का नूरे चश्म तथा लख़्ते जिगर जो ममता की शीतल सुखमय छांव में दुखों के कंटक से सुरक्षित रहता है, इस गैंग के ज़ालिम चंगुल में एक बार फंस जाने के बाद एक ऐसे संवेदनाशून्य संसार में गुम हो जाता है जहां उसके नसीब में न पिता का लाड-प्यार रहता है और न मां का ममतामय स्नेहित आंचल । इन ज़ालिमों के चंगुल में फंसने के उपरांत किसी बच्चे का अंग दूसरे के शरीर में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है, किसी को जिस्मफ़रोशी के कारोबार में ढकेल दिया जाता है, किसी को मज़दूरी और भिक्षाटन की भेंट चढ़ा दिया जाता है तथा उसे जीवनपर्यंत नारकीय यातना झेलनी पड़ती है । ऐसे बदनसीब बच्चों में अधिकतर दलित और विपन्न परिवार से संबंधित होते हैं, जिनको गुब्बारा, मिष्ठान्न, खिलौना अथवा अच्छे वस्त्र का प्रलोभन देकर बहकाना अपेक्षाकृत आसान होता है ।

इस संबंध में उपलब्ध सामान्य आंकड़ों के अनुसार देश में औसतन प्रत्येक एक घंटे में एक बच्चा ग़ायब होता है यानी प्रतिदिन 24 लोगों के जिगर के टुकड़ों को छीनकर ज़िन्दगी के नारकीय अंधकार में बेरहमी से ढकेल दिया जाता है । राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में प्रत्येक वर्ष लगभग 44,000 बच्चे लापता हो जाया करते हैं, जिनमें से मात्र 11,000 बच्चों का ही पता लग पाता है तथा शेष बच्चों को ज़मीन खा गयी अथवा आसमान निगल गया और वे बदनसीबी की काल कोठरी में कहां खो गये, इसकी जानकारी नहीं हो पाती । भारत में मानव तस्करी से संबंधित यू॰एन॰ की ताज़ा तरीन रिपोर्ट तथा अध्ययन के अनुसार भारत मानव तस्करी का बड़ा बाज़ार बन चुका है तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली मानव तस्करों की पसन्दीदा जगह बनती जा रही है, जहां देश भर से बच्चों और महिलाओं को लाकर न केवल निकटवर्ती इलाक़ों बल्कि विदेशों में भी भेजा जा रहा है ।

वर्ष 2009 से 2011 के मध्य लगभग 1,77,660 बच्चे गुम हुए जिनमें से 1,22,190 बच्चों का पता चल सका, जबकि 55,000 से अधिक बच्चे आज भी लापता हैं जिनमें से 64 प्रतिशत अर्थात लगभग 35,615 नाबालिग़ लड़कियां हैं । इसी कालावधि में लगभग एक लाख 60 हज़ार महिलाएं लापता हो गयीं, जिनमें से सिर्फ़ एक लाख 3 हज़ार महिलाओं का ही मुश्किल से पता चल सका जबकि लगभग 56 हज़ार महिलाएं अब भी लापता हैं तथा वे कहां किस हाल में हैं, जीवित हैं अथवा मुर्दा इस संबंध में स्पष्ट जानकारी नहीं है ।

रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2011-12 के दौरान एन॰जी॰ओ॰ की सहायता से 1532 बच्चों को सुरक्षित बचाया जा सका जबकि वर्ष 2009-2011 के बीच लापता हुए लगभग 3094 बच्चों के संबंध में अभी तक कोई सुराग़ हाथ नहीं लग पाया है जिनमें से 1636 बालिकाएं हैं । इसी दौरान ग़ायब हुई या ग़ायब कर दी गयी लगभग 3786 महिलाओं के संबंध में कोई जानकारी नहीं प्राप्त है ।

ग़ायब हुए बच्चों के माता-पिता की आंखों से रो-रोकर आंसू सूख चुके हैं । बच्चों से जुड़ी स्मृतियां क्षण-क्षण उनके मन को कचोटती रहती हैं । बच्चे का शीघ्र पता कर सूचना देने के लिए शासन-प्रशासन को प्रार्थना पत्र देते-देते, फ़रियाद करते-करते वे थक हार कर बैठ चुके हैं । अब किंकर्त्तव्यविमूढ़ वे करें भी क्या करें । ऐसी बात नहीं है कि बच्चों के अपहरण जैसे अमानवीय अपराध की रोकथाम तथा अपराधियों की धर-पकड़ और उन्हें दंडित करने से संबंधित क़ानून देश में नहीं है । क़ानून तो है परंतु उनका कारगर तरीक़े से क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है । यदि येन केन प्रकारेण क्रियान्वयन संभव भी होता है तो इसमें इतनी

ख़ामियां हैं कि चाहते हुए भी तथा हाथ-पैर मारने के बावजूद मानव तस्करों के गिरोह पर मज़बूती से नकेल नहीं कसी जा सकती है । अनेक प्रकरणों में तो यहां तक देखा गया है कि ऐसे क़ानूनी प्रावधानों के संबंध में थानों-कोतवालियों में तैनात पुलिस विभाग के आला अधिकारियों तथा कर्मचारियों तक को पता नहीं होता हालांकि सरकारी स्तर पर गृह मंत्रालय की ओर से देश में लगभग 225 मानव तस्कर विरोधी इकाइयां स्थापित और सक्रिय हैं । इन इकाइयों की तरफ़ से वर्ष 2011 से लेकर अब तक देश भर में 4000 से अधिक बचाव अभियान संचालित किये गये तथा न केवल 13742 पीड़ितों को सुरक्षित बचाया गया बल्कि 7087 मानव तस्करों को गिरफ़्तार कर उनके ख़िलाफ़ वर्तमान वैधानिक प्रावधानों के अंतर्गत दंडात्मक कार्रवाई भी की गयी ।

सरकारी स्तर पर शीघ्र ही 100 और मानव तस्करी विरोधी ऐसी नयी इकाइयों का गठन होने वाला है । लेकिन सरकार की मानव तस्करी विरोधी गतिविधियां जिस रफ़्तार से सक्रिय हैं, उससे कहीं ज़्यादा तेज़ तस्करों का गिरीह है । जिसके चंगुल में फंसकर दूरदराज़ के ग्रामीणांचलों तथा आदिवासी क्षेत्र के बच्चों का जीवन नारकीय व बरबाद हो रहा है । भारत में मानव तस्करी रोकने के उद्देश्य से अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संधियों को स्वीकृति प्रदान की गयी है, जिनमें संयुक्त राष्ट्र ट्रांसनेशनल संगठित अपराध संधि तथा महिलाओं और बच्चों की तस्करी से जुड़ी दक्षेस संधि जैसे समझौते सम्मिलित हैं । इसके अलावा बंगलादेश के साथ भारत का द्विपक्षीय समझौता भी मानव तस्करी की समस्या के निराकरण के उद्देश्य से किया गया है । इसके बावजूद बंगलादेश और नेपाल से लगी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर मानव तस्करी ज़ोरों पर जारी है । इस सरहद इलाक़े में मानव तस्करों का संगठित गिरोह सक्रिय है मगर स्वदेश में ऐसे कड़े कारगर क़ानून का अभाव है अथवा उनका सख़्ती से अनुपालन नहीं हो पाता जिससे मानव तस्करों के मन में ख़ौफ़ व दहशत पैदा हो सके । इसके साथ ही मानव तस्करी से निबटने के उद्देश्य से स्वदेश में सीमा रक्षक दल, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तथा राज्यों की क़ानून प्रवर्तन एजेंसियों के मध्य त्वरित समन्वय तथा सक्रियता का भी अभाव है जिसके चलते इस प्रकार के आपराधिक कृत्यों पर नियंत्रण तथा उन्मूलन की दिशा में व्यावहारिक स्तर पर रुकावट पैदा हो रही है तथा उसका सार्थक परिणाम नहीं निकल पा रहा है । इस दिशा में आज संगठित, समन्वित तथा सार्थक प्रयास की आवश्यकता है ।

विद्या प्रकाश

अचला घाट मार्ग, सिपाह, जौनपुर (उ०प्र०)

सवाल सर्वत्र बढ़ती नारी नग्नता और अश्लीलता का

आज सर्वत्र नारी नग्नता और अश्लीलता का बोलबाला हो गया है । मुझे एक घटना याद आ रही है आज से 20 साल पहले मेरे शहर में आन्दोलन हुआ था जिसके समर्थन में स्कूल कॉलेज बंद कर दिये गये थे । इस आन्दोलन का उद्देश्य था–''शहर में दूरदर्शन की डिस्क की स्थापना । क्योंकि उन दिनों दूरदर्शन से बुनियाद जैसा सिरियल आ रहा था । बाद में रामायण और महाभारत सिरीयल को लोकप्रियता प्राप्त हुई । परंतु इनमें किसी तरह की अश्लीलता और भोंडापन नहीं था । किन्तु इसी बीच विगत 20 वर्षों में टी०वी० सिरीयलों का और चैनलों का उदय हुआ । आज तो टी०वी० में 100-150 टी०वी० चैनल देखने की सुविधा है और बच्चों के हाथ में रिमोट हैं जिसे वे मनमाने ढंग से देख और पलटा सकते हैं ।

किसी ज़माने में माता-पिता यह देखते थे कि बच्चा क्या पढ़ रहा है और क्या देख रहा है अथवा लिख-पढ़ रहा है । आज जब माता-पिता दोनों आर्थिक कारणों से नौकरी करते हैं अथवा किसी काम में लगकर धन कमाते हैं और ऐसा करना आज अनिवार्य भी हो गया है तब ये माता-पिता बच्चों को कहते हैं कि तुम टी०वी० देखो ।

दूसरी ओर टी०वी० पर कितनी अश्लीलता छायी हुई है कि उसका ज़िक्र करने का कोई महत्व नहीं है क्योंकि जिन सिनेमा और बुरी फ़िल्मों तथा सिरीयलों को सिनेमा घरों में छोड़ आये थे वे आज हमारे घर चौबीस घंटे चलते हैं ।

आज हमारे घर सिनैमा घर हो गये और हमारे अबोध बालक उसके अबोध दर्शक हैं । इस प्रकार हमने बालकों एवं पूरे परिवार को टी०वी० एवं सिनेमा के हवाले कर दिया है । मुझे तो लगता है कि आज नहीं तो कल फिर हमें आन्दोलन करना पड़ेगा कि टी०वी० के चैनल्स कम करो या बंद करो । आज उन पर सेंसर लगाने की बात चल रही है किन्तु यदि उन पर सेंसर लगा दिया जाए तो फ़िल्में आधी

हो जाएंगी क्योंकि हमारी फ़िल्मों में एक चौथाई कहानी भी नहीं होती और मारकाट, हिंसा तथा बलात्कार, लूट-पाट तथा ठगने के ही दृश्य दिखाये जाते हैं क्योंकि ये इन्हीं सब बातों से भरे होते हैं । बच्चों को सर्वाधिक कुशिक्षा टी०वी० सिरीयलों, दूरदर्शनों और टी०वी० चैनलों से मिल रही है । इन्होंने हमारे आचार-विचार और भारतीय संस्कृति को गहरी ठेस पहुंचायी है । कहते हैं कि यदि किसी देश को बरबाद करना हो तो उसकी नयी पीढ़ी को बरबाद कर दो । पूरा देश बरबाद हो जाएगा । इसी प्रकार किसी समय चीन अफ़ीम के लत में पड़ गया था और पूरा देश बरबादी के कगार पर पहुंच गया था ।

अभी-अभी एक नया शब्द चला है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारवाद कहते हैं । इस व्यापारवाद में नारी को सबसे बड़ी कठपुतली बनाया गया है और नारी के शरीर को इसका माध्यम बनाया गया है वैसे तो पुरुषों को भी लगभग नग्न अवस्था में दिखाया जाता है परन्तु स्त्रियों की नग्नता से पूरे मानव समाज का नुक़सान होता है । मैं यहां पर फ़ैशन नामक टी०वी० चैनल का उल्लेख करूंगा । इसमें महिलाओं को इतने कम वस्त्रों में दिखाया जाता है कि मानव मात्र का मन शर्म से झुक जाता है एवं संसार भर में नारी की महत्ता, इज़्ज़त एवं महत्व को एवं आदर को ठेस पहुंचती है क्योंकि नारी संसार भर में आदरणीय है एवं उसे एक सा महत्व मिलना अनिवार्य है ।

आज केवल नारी का ही नहीं नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं एवं किशोरियों का भी अनेक तरह से शोषण हो रहा है और उन्हें मानसिक प्रताड़ना दी जा रही है । शीघ्र ही यह एक बहुत बड़ी समस्या न जाएगी और हमारे घरों में ही बालिकाएं असुरक्षित हो जाएंगी । करोड़ों अपराध हो रहे हैं मेरा मतलब भ्रूण हत्या से है परंतु आज तक किसी को भी सज़ा नहीं मिली है । इसी प्रकार इन अपराधों के होते हुए भी किसी को भी कोई सज़ा न मिलने का परिणाम यह होगा कि भारतीय समाज अस्तित्व खो बैठेगा । इसका परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ेगा । भारतीय संस्कृति में नारी केवल बच्चे को जन्म देने वाली मशीन अथवा शोषण करने वाली मशीन नहीं है उसे सब तरह से आदर दिया जाता है । वर्तमान दशाओं में नारी के देह शोषण और प्रदर्शन से नारी की प्रतिष्ठा को गहरी चोट पहुंची है ।

केन्द्र सरकार इन सब बातों पर विचार कर रही है कि इन पर किस तरह से रुकावट लगायी जाए किन्तु ऐसा संभव नहीं लगता क्योंकि यह परिवर्तन आकाश मार्ग से हो रहा है और इसे रोकना वह भी केवल क़ानूनों के सहारे ऐसा संभव प्रतीत नहीं होता । हमें व्यापारवाद तथा नारी शोषण की वृत्ति को बदलना होगा । तभी इन सब परिस्थितियों में परिवर्तन आएगा । वास्तव में यह काम बहुत कठिन है एवं आसानी से होने वाला नहीं है फिर भी हमें आशा रखनी चाहिए कि इन सब विचारधाराओं में परिवर्तन एवं सुधार होगा ।

ललित नारायण उपाध्याय
96, आनंद नगर, पुराने आर०टी०ओ० कार्यालय के पास, खण्डवा

विज्ञापन की होड़

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का दिसम्बर 2014 का अंक मुझे प्राप्त हुआ । यह अंक पढ़कर मुझे सारांश रूप से ज्ञात हुआ कि जो भी कार्य हो रहे हैं, चाहे वे राजनीति प्रेरित हों, सामाजिक हों या आध्यात्मिक, व्यावहारिक नहीं होकर दिखावटी प्रतीत हो रहे हैं । कोई भी कार्य हो, ठोस नहीं होने से जीवन में व्यावहारिक रूप से परिपालना नहीं होती है । इसका एक उदाहरण इस उपरोक्त अंक में विचार के अंतर्गत 'विज्ञापनों का मायाजाल थोड़ी हक़ीक़त, पूरा फ़साना' लेखक सी०के० रहमानी के विचारों का मैं पूर्णतया समर्थक हूं ।

प्राय: यह देखा जा रहा है कि अधिकांश फैशन की कृत्रिम वस्तुएं हैं । शरीर को सुन्दर बनाने के नक़ली ढोंग नारी को जिसे अर्द्धनग्न प्रदर्शित करना, ब्यूटी पार्लर का अधिकतम खुलना, जिनमें कृत्रिम फ़ैशन की वस्तुओं का प्रयोग होता है । सारांश रूप में जीवन में काम में आने वाली वस्तु उदाहरण के लिए साबुन, तेल, क्रीम, सफ़ेद बालों को काला करना आदि । इन सबका विज्ञापन समाचार पत्रों, टी०वी० आदि में अधिकतम दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । अधिकांश मानव इनसे आकर्षित हो रहे हैं, पैसे का भी दुरुपयोग हो रहा है । क्षणिक सुख के लिए भविष्य में हम अनेक प्रकार की बीमारियों के शिकार हो रहे हैं तथा मरणासन्न में पहुंच रहे हैं । इन उपरोक्त कारणों से वर्तमान समय भयावह हो गया है ।

खान-पान, रहन-सहन व आचार-विचार में विज्ञापन वाली वस्तुओं का प्रयोग करने से मानव जीवन में सहनशीलता नम्रता सदाचारिता का अभाव होता जा रहा है । इनके स्थान

पर क्रोध, अहंकार आदि का अम्बार बढ़ता जा रहा है । मैंने यह भी सारांश निकाला कि विज्ञापन वाली वस्तुओं का प्रयोग करने में स्थायीपन नहीं होता है । हम ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं । मैं इसके बारे में अधिक क्या लिखूं । यदि यही हाल रहा तो हम सब सच्चे आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भटक जाएंगे ।

फिर भी मैं आशावादी हूं । समय अवश्य ही आएगा । जीवन सच्चे अर्थों में प्रदर्शित होगा ।

"जीवन जीने की कला है" जिसको जीने की कला आ गयी, उसका जीवन सार्थक है ।

रामस्वरूप झैवर

शास्त्रीनगर-विस्तार, भीलवाड़ा (राज०)

पूर्वाग्रहों का त्याग करें

जो लोग अपने अज्ञानवश अथवा निहित स्वार्थजनित दुर्भावनावश इस्लाम को विदेशी धर्म निरूपित करते नहीं थकते उन्हें 'अल्लोपनिषद' एवं 'भविष्य पुराण' के इन दो प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए ताकि 'इस्लाम', 'मुहम्मद', आदि के बारे में दृष्टा ऋषियों द्वारा हज़ारों वर्ष पूर्व जो सुस्पष्ट भविष्य कथन किया गया है उसे समझकर अपनी ग़लती ठीक कर सकें । अल्लोपनिषद : गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'कल्याण' (मासिक) के उपनिषद अंक में प्रकाशित उपनिषद नाम सूची के 220 नामों में क्रमशः 14वें, 15वें व 16वें क्रम पर–अमृत बिन्दु उपनिषद, अल्लोपनिषद एवं अवधूतोपनिषद (पद्य) का उल्लेख है । पाठ झलक–

ओम् अल्ला/इल्लल्ला/अनादि स्वरूपाय/अथर्वण् श्यामा/हुं हीं जनान् पशून सिद्धान/जलवरान अदृष्टं कुरू कुरू फट्/असुरसंहारिणी हं हीं अल्लो रसूल/महमद रकबरस्य अल्लो अल्लाम/इल्लल्लेति इल्लल्ला

श्लोक–9 एवं 10

भविष्य पुराण : प्रतिसर्ग पर्व-3, अध्याय-3, खंड-3

कलियुग समुच्चय श्लोक क्र० 25 एवं 26 दृष्टव्य–

लिंगच्छेदी शिखाहनः शमश्रुधारी स दूषकः
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम
विना कौलं च पशवस्तेषां भक्ष्या मता मम
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति ।

इस्लाम में परमात्मा को अल्लाह उच्चारित किया जाता है जो संस्कृत शब्द, अल्लः (अल्लह्) अर्थात All अर्थात समस्त के लिए, से बना है । इसी प्रकार खुदा=खुदः=स्वयंभू=शंभू में जो लयबद्ध एकरूपता है उसे कोई भी देख सकता है । इस्लाम में प्रार्थना रीति के लिए नमाज़ शब्द का चलन है जो संस्कृत के नमस्=> नमः अर्थात झुकना से बना है । यदि मन का मैल हटा दिया जाए तो सनातन धर्म व इस्लाम के बीच ऐसे कई अंतर्सम्बन्धों को समझा व समझाया जा सकता है ।

सनातन धर्म का पुष्प है इस्लाम । धर्म हमें 'असतो मा सद्गमय' अर्थात सत्य की तरफ़ बढ़ने, सत्य को स्वीकार करने का उपदेश देता है, अतः हिन्दू-मुसलमान दोनों को, अपने समस्त पूर्वाग्रहों-दुराग्रहों का सर्वथा परित्याग करके आपसी संबंधों की एक नयी शुरुआत करनी चाहिए ।

स्वामी तृप्तानंद

देवास, मध्य प्रदेश

जनता का शासन

नेता भरे तिजोरी और जनता हुई कंगाल
भ्रष्टाचार ने देश का किया कैसा बुरा हाल
हाहाकार है चहुओर हो रही है बेईमानी
जनता की अनदेखी है और नेता की मनमानी
शासन रहे कोई भी पर जनता रही बेहाल
पहले लूटा अंग्रेज़ों ने अब अपनों का जाल
जनता के ही वोट से नेता हुए दबंग
बदलाव की नहीं रही अब हम में ही उमंग
नेताओं ने देश में बड़े किये हैं घोटाले
सत्ता में भी हैं यही कौन इन पर हाथ डाले
यही सोचकर के शायद थे 'अन्ना' आगे आये
लोकपाल आया नहीं, हां अन्ना नज़र न आये
लोकतंत्र तो सुनते थे हम, जनता का है शासन
जनता तो बंधक होती है, यह भ्रष्ट का शासन ।

डॉ० प्रेम सिंह चेतन

श्री गणेश नगर, पंच कुटीर, मुंबई-76

उपकार

भाईचारा बांटकर, देते हो उपहार ।
सद्भावों की रोशनी, से जगमग संसार ।।
अपनापन हो, नेह हो, यही आपका सार ।
'शरद' आपका मानता, हरदम ही उपकार ।।

प्रो० (डॉ०) शरद नारायण खरे

मंडला (म०प्र०)

दर्द

मेरा दर्द जानकर भी
अनजान हो गये ।
जो अपने थे
वे सभी ख़ुदग़र्ज़ हो गये ।
किसके कंधे पर
सिर रखकर रोऊं
यही ख़याल मुझे
दर्द से ज़्यादा रूला गया ।

मेरे दिन अंधियारे

मुझे इतनी बेहयाई से गिराया गया
कि उनके दिलो ज़मी पर
मेरे नामों-निशां का क़तरा भी न रहा
इतना बेवफ़ा भी न था मैं
जितना मुझे बताया गया ।
उनकी रातें रोशन
मेरे दिन अँधियारे
शायद यही मेरा क़सूर हो गया ।

ख़ंजर

मेरे दिल पर जिन्होंने ख़ंजर चलाये
वे ही आकर पूछते हैं, अब तबियत कैसी है ?
मेरी नेकियों का बदला दग़ाबाज़ियों से दिया
उन्हीं ख़ुदग़र्ज़ों से आज
फिर दोस्ती का पैग़ाम आया है
जयप्रकाश ! कितने बदनसीब होते हैं, वे लोग
जिन्हें मिलते हैं, ऐसे लोग
परिवार, रिश्तेदार और दोस्तों के तौर पर ।

रिश्ता

चलो अच्छा हुआ
उनसे रिश्ता टूट गया
टूट तो बहुत पहले गया था
आज टूटने का बयां हो गया
न मैं उनकी यादों में था
न मैं उनकी आंखों का अश्क बन पाया
न मैं तबस्सुम बनकर
उनके होठों पर खेलता था
वे ढो रहे थे रिश्तों का बोझ
चलो अच्छा हुआ
रिश्तों का यह बोझ
कांधे से उतार देने का
उनसे ही इज़हार हो गया ।

ज़ख़्म

अपनों ने दिये इतने ज़ख़्म
गिनना मुश्किल हो गया
ग़ैरों ने रखा उन पर इतना मरहम
मेरा फिर से जीना मुमकिन हो गया
मेहरबानियां उनकी इतनी
मेरा शुक्रिया करना भी
रस्म जैसा हो गया ।

● जय प्रकाश बाल्मीकि
म०नं० 14, बाल्मीकि कॉलोनी,
शास्त्रीनगर, जयपुर

मृत्यु के पश्चात क्या ?

■ डॉ॰ सैयद शाहिद अली

"तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो, हालांकि आख़िरत अधिक उत्तम व बाक़ी रहने वाली है।"
(क़ुरआन, 87:16,17)

"वे सांसारिक जीवन के केवल वाह्य रूप को जानते हैं, किन्तु आख़िरत की ओर से वे बिल्कुल असावधान हैं। क्या उन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया ? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, सत्य के साथ और एक नियत अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत से लोग तो अपने प्रभु के मिलन का इन्कार करते हैं।"
(क़ुरआन, 30:7,8)

इस दुनिया में पूरा इन्साफ़ नहीं हो सकता। एक आदमी ने दस लोगों का क़त्ल किया, उसे पकड़ा गया और एक बार फांसी पर लटका दिया गया। यह पूरा न्याय नहीं है। पूरा न्याय तब होता, जब क़ातिल को दस बार मारा जाता और दस बार जीवित किया जाता। इसके अलावा मरने वालों को भी जीवित किया जाता और उनके सामने, उनके क़ातिल को मारा जाता, ताकि वे खुश होते और मानते कि हां, हमें न्याय मिला। क्या ऐसी दुनिया है, जहां ऐसा हो सके ?

❖ एक आदमी ने चोरी की, उसे सज़ा मिली, क़ैद कर दिया गया। चोर को तकलीफ़ हुई, मगर जब तक वह क़ैद में रहा, उसकी मां को भी तकलीफ़ होती रही। अपराध तो बेटे ने किया था, सज़ा मां को क्यों मिल रही है ? मां को तकलीफ़ इसलिए होती रही, क्योंकि मां और बेटे के बीच एक भावनात्मक संबंध होता है। यह लिंक, अगर काट दिया जाता, तो बचपन में बच्चे की परवरिश व देख-भाल कैसे होती। सर्दी की रात में तीन बजे, जब बच्चा सूसू करता और रोता, तो मां क्यों उठती, बच्चे को नमूनिया हो जाता और वह मर जाता। पूरे इन्साफ़ के लिए ज़रूरी है कि एक ऐसी दुनिया हो, जहां मां-बेटे दोनों जवान हों और दोनों के बीच भावनात्मक संबंध न हो, ताकि सज़ा की तकलीफ़ केवल अपराधी को हो, किसी और को न हो। क्या ऐसी दुनिया है ?

एक बहुत अच्छा इन्सान, जिसके अच्छे कामों से लाखों लोगों को लाभ पहुंचा। इसी तरह एक बहुत बुरा इन्सान जिसने अपनी बुराई से लाखों लोगों को हानि पहुंचाई। इस छोटे से जीवन में इन दोनों को उनके अच्छे या बुरे कामों का पूरा-पूरा अच्छा या बुरा बदला नहीं दिया जा सकता। ऐसा क्यों है ?

इस जीवन में इन्सान को जो भी नेमत मिलती है, वह अपने साथ ज़िम्मेदारी और जवाबदेही ज़रूर लाती है। इसके अतिरिक्त मिली हुई हर नेमत के साथ डर और दुख ज़रूर लगा होता है। जितनी बड़ी नेमत उतना ही बड़ा उसके छिन जाने का डर और उतना ही बड़ा उसके जाने का दुख। ऐसा क्यों होता है ?

❖ दुनिया में हर काम (Action) की प्रतिक्रिया (Re-action) नज़र आती है। एक आदमी ने दूसरे आदमी को मारा, वह बेहोश हो गया। भूखे आदमी ने खाना खाया, उसकी भूख ख़त्म हो गयी। बीमार ने दवा खायी, वह ठीक हो गया। मगर दुनिया में कुछ काम ऐसे भी हैं, जिनकी प्रतिक्रिया नज़र नहीं आती। आपने किसी अंधे को सड़क पार करा दी। रास्ते से केले का छिलका हटा दिया। खुद भूखे रहकर, भूखे को खाना खिला दिया। ऐसे कामों की प्रतिक्रिया कहां है ?

❖ इस जीवन में इन्सान को जो भी नेमत मिलती है, वह अपने साथ ज़िम्मेदारी और जवाबदेही ज़रूर लाती है। इसके अतिरिक्त मिली हुई हर नेमत के साथ डर और दुख ज़रूर लगा होता है। जितनी बड़ी नेमत उतना ही बड़ा उसके छिन जाने का डर और उतना ही बड़ा उसके जाने का

दुख । ऐसा क्यों होता है ?

❖ सभी रिश्तों (Relationship) में एक मिलने की जगह (Meeting-Place) भी होती है। डॉक्टर और मरीज़ का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, क्लीनिक । वकील और मुवक्किल का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, कोर्ट । टीचर और छात्र का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, क्लास रूम । माता-पिता और संतान का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, घर । ईश्वर (Creator) और इंसान (Created) का रिश्ता, मीटिंग प्लेस कहां है ?

❖ सम्पूर्ण खुशी पाने के लिए इन्सान को चाहिए कि उसकी सभी आवश्यकताएं पूरी हों । उसकी सभी इच्छाएं पूरी हों । वर्तमान और भविष्य में उसे सुरक्षा (Security) मिले । उसके सभी रिश्तेदार मौजूद हों (मैं खुश नहीं हो सकता, जब तक मेरे बाप न मौजूद हों, मेरे बाप खुश नहीं हो सकते, जब तक उनके बाप जीवित न हों । मेरे बाप के बाप खुश नहीं हो सकते, जब तक उनके बाप मौजूद न हों.....), सभी तन्दुरुस्त हों, सभी के पास दौलत हो, कोई बीमार न हो, कोई बूढ़ा न हो, कोई किसी दुर्घटना का शिकार न हो, कोई मरे न, इत्यादि । मगर दुनिया में ऐसा नहीं होता । इंसान को दुनिया में सम्पूर्ण खुशी क्यों नहीं मिलती?

❖ सोचो ! अगर इस धरती से सभी इन्सानों को हटा दिया जाए, तो क्या होगा ? कुछ भी अन्तर नहीं पड़ेगा । सूरज निकलेगा, उसकी गर्मी से समुद्र में भाप बनेगी, भाप से बादल बनेंगे, जिनसे बारिश होगी, Water-Cycle (जलचक्र) इसी तरह चलता रहेगा ।

सोचो ! अगर इस धरती से सभी इन्सानों को हटा दिया जाए, तो क्या होगा ? कुछ भी अन्तर नहीं पड़ेगा । सूरज निकलेगा, उसकी गर्मी से समुद्र में भाप बनेगी, भाप से बादल बनेंगे, जिनसे बारिश होगी, जलचक्र इसी तरह चलता रहेगा ।

सोचो ! अगर इस धरती में इन्सान तो हों, मगर सूरज या हवा व पानी में से किसी भी एक चीज़ को निकाल दिया जाए, तो क्या होगा ? धरती का पूरा निज़ाम ख़त्म हो जाएगा । इससे प्रमाणित होता है कि इन्सान इस निज़ाम से ज़्यादातर फ़ायदा उठाने वाला है, न कि फ़ायदा पहुंचाने वाला, जबकि दूसरी सभी चीज़ें इन्सान को केवल फ़ायदा पहुंचा रही हैं । मालूम होता है कि धरती का यह ढांचा इन्सान के लिए है, तो फिर इन्सान किस ढांचे के लिए है ?

❖ एक ज़िन्दा और मुर्दा इन्सान में अन्तर होता है । ज़िन्दा इन्सान के दिमाग़ में विचार आ रहे होते हैं । वह बात कर सकता है । वह हरकत कर सकता है ।

मनोविज्ञान के अनुसार, इन्सानी दिमाग़ के दो हिस्से होते हैं : चेतन और अचेतन । अचेतन, इन्सानी दिमाग़ का गोदाम होता है । इसमें इन्सान की छोटी-बड़ी सभी सोचें जमा होती रहती हैं । एक इन्सान की याद्दाश्त खो गयी, वह सब कुछ भूल गया । जब उसकी याद्दाश्त (स्मृति) वापस आयी, उसे सब कुछ याद आ गया । या, कभी-कभी सपनों में बचपन की बातें नज़र आती हैं । इससे प्रमाणित होता है कि इन्सान की सभी सोचें, कहीं सुरक्षित होती रहती हैं, तभी तो वापस आती हैं । इन्सान की छोटी-बड़ी सभी सोचें उसके अचेतन मस्तिष्क में दर्ज हो रही हैं । सोचों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ?

भौतिक विज्ञान के अनुसार, इन्सान जो आवाज़ निकालता है या जो कुछ बातचीत करता है, वह कभी ख़त्म नहीं होती, बल्कि एक लाख, छियासी हज़ार मील फ़ी सैकंड की रफ़्तार से हवा में घूमती रहती हैं । साइंस ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि गुज़रे हुए समय की आवाज़ों को रिकार्ड कर सके, सुन सकें । मगर ये सब आवाज़ें मिली-जुली हैं, अभी इन्हें अलग नहीं किया जा सका है । साइंस कोशिश कर रही है, इन आवाज़ों को अलग-अलग करके सुनने की । मालूम होता है कि इन्सान की छोटी-बड़ी सभी आवाज़ें रिकार्ड की जा रही हैं । आवाज़ की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ?

इन्सान के शरीर से हरारती लहरें ऊष्म तरंगें (Heat waves) निकलती हैं । यह इन्सान की हर-हर हरकत (खड़े, बैठे, लेटे) का फ़ोटो बनाती हैं । नवम्बर, 1960 ई० के Readers Digest नामक पत्रिका में लिखा था कि अमेरिका के ऊपर से एक हवाई जहाज़ गुज़रा । दो घंटे बाद उस ख़ाली जगह से, जहाज़ में बैठे मुसाफ़िरों के फ़ोटो ले लिए गये । वह कैमरा, जो इन्सान के जाने के बाद, ख़ाली जगह से, उस इन्सान का फ़ोटो ले सके, "Evaporagraph" कहलाया । साइंस में बहस इस बात पर है कि किसी इन्सान के हटने के बाद, उस ख़ाली जगह, उस इन्सान का फ़ोटो चंद घंटे बाक़ी रहता है, या हमेशा-हमेशा । संभव है, यह

फ़ोटो हमेशा रहता हो । अभी साइंस ने इतनी तरक़्क़ी नहीं की है कि कई साल बाद भी ख़ाली जगह से फ़ोटो ले सके, मगर ऐसा संभव है । मालूम हुआ कि इन्सान की एक-एक हरकत रिकार्ड हो रही है । इन्सान की हरकतों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ?

इन्सान की सोचों, बातों और कामों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ? क्या किसी अदालत के लिए, जहां यह पेश की जाएंगी और इसके आधार पर कोई फ़ैसला होगा ?

❖ इन्सान के इन सभी सवालों का जवाब ख़ुदा ने दिया है । ख़ुदा (ईश्वर) ने बताया कि इन्सान को कभी न ख़त्म होने अर्थात हमेशा-हमेशा के लिए पैदा किया गया है । इन्सान की ज़िन्दगी के दो हिस्से हैं । एक, मरने से पहले वाली ज़िन्दगी जो बहुत थोड़े समय और इम्तिहान के लिए है । दूसरे, मरने के बाद वाली ज़िन्दगी जो हमेशा-हमेशा के लिए है । जिसमें मरने से पहले वाली ज़िन्दगी में किये गये कामों के आधार पर, सज़ा (जहन्नम) या इनाम (जन्नत) मिलेगा । मरने के बाद कभी न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी को ख़ुदा ने "आख़िरत" (परलोक) का नाम दिया है । आख़िरत को मानना इन्सान के सभी सवालों का जवाब है ।

❖ ज़िन्दगी की कहानी मौत के साथ ख़त्म नहीं होती । बिल्कुल इसी तरह जैसे टी॰वी॰ पर एक फ़िल्म चल रही हो और अचानक बीच में ही यह कह दिया जाए कि फ़िल्म ख़त्म हो गयी । या कोई उपन्यास बीच में ही ख़त्म कर दिया जाए । अगर ऐसा होगा, तो फ़िल्म देखने वाला या उपन्यास पढ़ने वाला, इस बात को नहीं मानेगा । वह जानना चाहेगा कि, अंजाम क्या हुआ ? फ़िल्म के बनाने वाले, उपन्यास के लिखने वाले से यह उम्मीद की जाती है कि वह अंजाम ज़रूर दिखाए । बिल्कुल इसी तरह क्या कोई अक़्लमंद इन्सान यह मान सकता है कि हमारी ज़िन्दगी की कहानी, हमारी मौत के साथ ख़त्म हो जाएगी, जबकि अभी कहानी पूरी नहीं हुई, ख़ुदा हमें हमारे अंजाम तक नहीं पहुंचाएगा । हक़ीक़त में पारलौकिक जीवन ही हमारी कहानी का अंजाम (परिणाम) है ।

मरने के बाद जीवन की परिकल्पना तक़रीबन सभी धर्मों में पायी जाती है, यहां तक कि हिन्दू मत में भी । वेद में पुनर्जीवन की बात कही गयी है, जिसका अर्थ मृत्यु के पश्चात् हमेशा के एक जीवन से है । वेदों में आवागमन और पुनर्जन्म नहीं पाया जाता । पुनर्जन्म और आवागमन दो अलग-अलग चीज़ें हैं । वेदों में पुनर्जीवन है, जिसका अर्थ मनुष्य को अपने कर्मों के फल हेतु दोबारा जन्म लेना है, जबकि आवागमन का अर्थ मोक्ष प्राप्ति तक कर्मानुसार 84 लाख योनियों में बार-बार जन्म लेना है । उपनिषद काल में पुनर्जन्म और आवागमन को एकार्थी बना डाला गया । छान्दोग्य उपनिषद ने सबसे पहले पुनर्जन्म (परलोक में ही नहीं, इस लोक में भी कर्मानुसार प्राणी जन्म लेता है) की बात कही गयी है ।

पुनर्जन्म का आरंभिक "पुनः" शब्द का अर्थ होता है "दोबारा" न कि "बार-बार"। फिर भी "बार-बार" का अर्थ ग्रहण करके उपनिषदों के द्वारा इसकी स्थापना कर डाली गयी और पुराणों, रामायण, महाभारत एवं धर्मशास्त्रों आदि में इसको अत्यधिक विस्तार दे दिया गया । इनमें श्राद्ध-सिद्धांत अर्थात मृतक की आत्मा को शांति पहुंचाने का कर्मकांड भी विद्यमान है, जो पुनर्जन्म के पूर्णतः विपरीत है । कुरआन के अनुसार हर इन्सान को मरने के बाद दोबारा पैदा किया जाएगा । यह एक न ख़त्म होने वाला जीवन होगा । यह सांसारिक जीवन अच्छे या बुरे कर्म करने की जगह है और मरने के बाद का शाश्वत जीवन इन कर्मों के आधार पर अच्छा या बुरा बदला पाने की जगह ।

❖ इस ग्रह अर्थात पृथ्वी पर पैदा होने वाला हर ज़िन्दा इन्सान अपने साथ वापसी का टिकट लेकर पैदा होता है और जीवन भर उसे इसके कंफर्म होने का इन्तिज़ार रहता है । वापसी के टिकट के इसी पुष्टिकरण का दूसरा नाम "मृत्यु" है ।

❖ इन्सान का बीमार, बूढ़े और अर्थी को देखकर यह नतीजा निकालना कि जीवन दुख है, सही नहीं है । क्योंकि यह किसी एक इन्सान का ख़्याल हो सकता है, जबकि सही बात वह है, जो बीमारी, बूढ़ापा और मौत देने वाला (ख़ुदा) ख़ुद बताता है।

ख़ुदा बताता है कि सांसारिक जीवन इन्सान के लिए एक इम्तिहान है । बीमारी, इस इम्तिहान का एक परचा है, बुढ़ापा इम्तिहान के ख़त्म होने की चेतावनी है और मौत इम्तिहान के ख़त्म होने का एलान है ।

❖ डेढ़ लाख इन्सान, प्रतिदिन इस दुनिया से मर कर चले जाते हैं । ये सब लोग कहां जाते हैं ? यह एक अहम सवाल है । इससे आंखें बन्द नहीं की जा सकतीं । दुनिया

का कोई विज्ञान इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता, केवल धर्म ही इस सवाल का जवाब दे सकता है । धर्म में से भी केवल वही एक धर्म इसका सही जवाब दे सकता है, जिसने ज़िन्दगी और मौत देने वाले की वाणी को विशुद्ध व पूर्णतः सुरक्षित कर रखा है ।

❖ क्या हर इन्सान के मरने का समय अर्थात उसके इम्तिहान ख़त्म होने का टाइम तय है ? कुरआन कहता है "हां" हर इन्सान के मरने का समय पहले ही से तय है ।

"अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई व्यक्ति मर नहीं सकता । हर व्यक्ति एक लिखित निश्चित समय का अनुपालन कर रहा है ।" (कुरआन, 3:145)

मौत को बार-बार याद करने को इस्लाम पसन्द करता है । क्योंकि इस बात का इन्सान पर अच्छा प्रभाव पड़ता है । अच्छा काम करने के रास्ते में जो सुस्ती आती है वह दूर होती है । इन्सान अच्छा काम करने में जल्दी करता है । गुनाहों (पापों) को छोड़ने व तौबा (पश्चाताप) करने में भी जल्दी करता है और इन्सान अत्याचार करने से भी रुक जाता है ।

मौत को अपनी मर्ज़ी से बुलाने अर्थात आत्महत्या करने को इस्लाम अवैध (Prohibited) बताता है । क्योंकि यह खुदा से मायूस (निराश) होने और इन्सान के बारे में उसकी स्कीम से विद्रोह करने जैसा है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"तुममें से कोई (किसी भी वजह से) मौत की तमन्ना न करे और न जल्द मौत आने की दुआ करे । क्योंकि जब मौत आ जाएगी, तो उसके कर्म का सिलसिला रुक जाएगा और खुदा को (उसके बताए गये तरीक़े के अनुसार) मानने वाले के लिए उसकी आयु भलाई को बढ़ाने का कारण बनती है ।" (हदीस : मुस्लिम)

"मौत की दुआ न करो और न उसकी तमन्ना करो । अगर किसी व्यक्ति के लिए ऐसी दुआ करनी ज़रूरी हो, तो वह इस तरह कहे, "ऐ अल्लाह ! मुझे ज़िन्दा रख जब तक कि मेरे लिए ज़िन्दगी बेहतर हो और मुझे (दुनिया से) उठा ले, जब मौत मेरे लिए बेहतर हो ।" (हदीस : नसई)

उपर्युक्त बातों का सारांश यह है कि ईश्वर के एक होने के सिद्धांत को हम इस तरह स्वीकार करें कि उसकी हस्ती (अस्तित्व) गुण, अधिकार, सत्ता व स्वामित्व में किसी को शरीक न करें । अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ईश्वर की इबादत का पूरा तरीक़ा हमें बताया व करके दिखाया है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अन्तिम ग्रंथ पवित्र कुरआन अवतरित हुआ, जो पूर्णतया विशुद्ध रूप से सुरक्षित है । यह किताब समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शन है । इस सांसारिक व पारलौकिक जीवन में सफलता व मुक्ति के लिए इन सच्चाइयों को स्वीकार करते हुए ईश्वर के बताए हुए मार्ग पर चलना ज़रूरी है ।

ग़रीबी

ये देखकर दर्दे दिल, और भी बढ़ जाता है ।
हज़ारों टन अनाज देश में, यूं ही सड़ जाता है ।
जहां तीन हज़ार बच्चे रोज़
कुपोषण से मर जाते हैं ।
जहां तेईस करोड़ लोग रोज़
भूखे पेट साते हैं ।
वहां हज़ारों टन अनाज, यूं ही सड़ जाता है ।।
ये देखकर.....
जान-बूझकर ख़ामोश हैं ऐसे
जैसे हमको कुछ ख़बर नहीं
इस देश के नेताओं को भी
इन सबकी कोई फ़िकर नहीं ।
ये बेबसी क्यों सोच के मन, दुविधा में पड़ जाता है ।
ये देखकर.....
ख़ामोशी भी एक वजह है
कितनो के भूखे सोने की
आती है याद जब अपने
भाई बहनों के भूखे होने की ।
अचानक मेरे खाने का, ज़ायक़ा बिगड़ जाता है ।
ये देखकर.....
न हमारे लिए ये चिंता का विषय
न नेताओं के लिए ये कोई मुद्दा
ग़रीबी की बातें तो सभी करते हैं
पर ग़रीबों का तो बस खुदा
आओ देखें ग़रीब कब तक, भूख से लड़ पाता है ।
लोगों की ऐसी सोच देख, दिल का दर्द बढ़ जाता है ।।
ये देखकर.....

● रुस्तम हुसैन

भेंटवार्ता

स्रष्टा की पहचान को भी बनाएं पाठ्यक्रम का अंश

जमाअत इस्लामी हिन्द के केन्द्रीय शिक्षा सचिव जनाब मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद से 'कान्ति' ने शिक्षा, विशेषकर देश के मुसलमानों की शैक्षिक स्थिति एवं शिक्षा प्रसार आदि विभिन्न मुद्दों एवं समस्याओं पर एक प्रश्नावली के द्वारा विस्तृत उत्तर देने का अनुरोध किया था। आपने हमारे सभी प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दिया, जिसके लिए हम आभारी हैं। यहां इसके कुछ संपादित अंश 'कान्ति' के पाठकों के समक्ष पेश किये जा रहे हैं। –संपादक

■ हमारे देश में शैक्षिक पिछड़ापन मुस्लिम समुदाय की एक बड़ी समस्या है। इसका मुख्य कारण क्या है ? आपके विचार में इस समस्या का समाधान क्या है और इसके लिए क्या प्रयास किये जा रहे हैं ?

जवाब : मुसलमानों में शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ेपन का एक कारण नहीं बल्कि कई कारण हैं। मेरे विचार में सबसे मुख्य कारण मुस्लिम समुदाय के अन्दर दीन (इस्लाम) की जानकारी और चेतना का अभाव है। इस्लाम जितना शिक्षा पर बल देता है, समुदाय के लोग उससे अवगत नहीं हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि धर्मों में इस्लाम ही शिक्षा पर सबसे अधिक बल देता है। कुरआन मजीद की आरंभिक सूरह में "इक़रा" पढ़ो का आदेश इसका प्रमाण है। नबी (सल्ल०) का यह कथन कि–शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है भी विचारणीय है। आज हमारी सरकार ने 2009 ई० में 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का नियम बनाया है। नबी (सल्ल०) ने आज से 1400 वर्ष पहले शिक्षा की प्राप्ति करना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य किया था।

नबी (सल्ल०) के विभिन्न कथनों में शिक्षा प्राप्ति पर जितना बल दिया गया है इससे भी यह अन्दाज़ा होता है। स्वयं नबी (सल्ल०) ने अपना परिचय यह कहकर कराया कि–"मैं शिक्षा देने वाला बनाकर भेजा गया हूं।" कुरआन ने भी नबी (सल्ल०) की जो ज़िम्मेदारी बतायी है उससे भी आपकी शिक्षा देने वाली छवि पर रोशनी पड़ती है। "वह अल्लाह (ईश्वर) ही है जिसने उम्मियों (अनपढ़) लोगों के बीच रसूल खुद उन्हीं में से उठाया, जो उनको कुरआन की आयतें पढ़कर सुनाता है उनकी ज़िन्दगी संवारता है और उन्हें किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है हालांकि इससे पहले वे खुली गुमराही में पड़े हुए थे।" सूरह अलजुमुआ की यह पंक्ति भी नबी (सल्ल०) की ज़िम्मेदारी में कुरआन की आयतों को पढ़ाना, लोगों का जीवन संवारना और किताब व तत्वदर्शिता की शिक्षा का बहुत स्पष्ट अन्दाज़ में उल्लेख करता है।

खुद नबी (सल्ल०) ने जिस तरह रात-दिन अपने प्रयास करके लोगों को शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित किया है वह स्वयं भी इसका स्पष्ट प्रमाण है। फ़रमाया–

"शिक्षक एवं शिष्य दोनों ही प्रतिफल में बराबर के सहभागी हैं।"

आप (सल्ल०) ने कहा–"एक मां-बाप अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा-दीक्षा से श्रेष्ठ कोई उपहार नहीं दे सकता।"

चूंकि मुस्लिम समुदाय ने उन शिक्षाओं को भुला दिया है, इसलिए शिक्षा की ओर उसका ध्यान नहीं है। देश में 2011 ई० की जनगणना के अनुसार साक्षरता दर इस प्रकार है। कुल साक्षरता 74.04 प्रतिशत पुरुषों की साक्षरता 82.14 प्रतिशत महिलाओं की साक्षरता 65.46 प्रतिशत, 2001 ई० की जनगणना में मुसलमान पुरुषों की साक्षरता 63 प्रतिशत और महिलाओं की साक्षरता लगभग 50 प्रतिशत थी।

2001 ई० की तुलना में देश की कुल साक्षरता में 10 प्रतिशत की वृद्धि मान ली जाए तो इसका मतबल यह है कि पुरुषों में 73 प्रतिशत और महिलाओं में 60 प्रतिशत हो सकती है। हम यह भी जानते हैं कि पूरे देश में साक्षरता

की दर में बहुत अन्तर है । अगर केरल की साक्षरता दर 93.91 प्रतिशत है तो बिहार की साक्षरता दर 65.36 प्रतिशत है । उत्तर और दक्षिण के राज्यों, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, महिलाओं और पुरुषों की साक्षरता दर और विभिन्न धर्मों के मानने वालों की साक्षरता दर में भी बड़ा अन्तर है । जैन धर्म के मानने वाले लोग साक्षरता दर में सबसे आगे हैं और मुसलमान सबसे पीछे हैं । यह तो अक्षर ज्ञान और शब्द ज्ञान के आधार पर साक्षरता की दर है जब हम मुसलमानों के दृष्टिकोण से उनकी शिक्षा के विषय में विचार करते हैं तो वहां केवल अक्षर ज्ञान काफ़ी नहीं है, बल्कि ईश-ज्ञान भी आवश्यक है । इस आधार से तो कोई खोज-बीन या आंकड़ा हमारे पास नहीं है । परन्तु सरसरी तौर पर शिक्षित पुरुषों और महिलाओं और स्कूल जाने वाले छात्रों की धार्मिक जानकारी मालूमात की सूरतेहाल को जांचने से यह अन्दाज़ा होता है कि बुनियादी दीनी जानकारी के लिहाज़ से भी वे पीछे हैं। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार मदरसों में हमारे केवल 4 प्रतिशत बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

अधिकतर मुसलमान बच्चे सरकारी स्कूलों में, अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाओं में, या फिर कॉवेंट स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करते हैं । यह बात भी सर्वविदित है कि सरकारी स्कूलों और कॉवेंट स्कूलों में दीनी शिक्षा का कोई प्रश्न ही नहीं है । आश्चर्य तो यह है कि संविधान की धारा 29/30 की उपस्थिति के बावजूद अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाएं अल्पसंख्यक की भाषा और उनकी सभ्यता की रक्षा के महत्व से अनभिज्ञ हैं । उन संवैधानिक धाराओं की उपस्थिति में तो बड़ी आसानी से दीनी शिक्षा का अपने प्रबंधन में चल रही संस्थाओं में स्कूल के समय से एक घंटा या एक पीरियड अधिक रखकर दीनी शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है । कुछ दीनी शिक्षा की आवश्यकताओं को अंशकालिक मकतबों जो शाम या सुबह के समय मस्जिदों में, या अलग से मदरसों में, या घरों में चलाये जाते हैं, एक सीमा तक पूरा करते हैं । लेकिन वहां पढ़ने वाले छात्रों की संख्या और कुल शिक्षा प्राप्त करने योग्य बच्चों की संख्या में कोई अनुपात नहीं है ।

इस लिहाज़ से मुसलमानों को जहां सामान्य शिक्षा के लिए प्रयास करना है वहीं दीनी शिक्षा के लिए भी अभियान के रूप में प्रयास करना होगा तभी जाकर उनकी वास्तविक शिक्षा की ज़रूरत पूरी होगी मुस्लिम समुदाय को हर क्षेत्र और प्रत्येक स्तर पर मस्जिदों में, मुहल्लों में, घरों में, हर जगह विशेष रूप से दीनी शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी । क़ुरआन की आयात के अनुसार यह उनका दायित्व भी है–

''ऐ ईमान लाने वालो अपने आपको और अपनी पत्नी और बच्चों को नरक की आग से बचाओ ।''

(क़ुरआन;66:6)

इस आयत की मांग तो यह है कि प्रत्येक परिवार का मुखिया स्वयं और अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की चिंता करे उन्हें नरक की आग से बचाए और स्वर्ग के रास्ते की ओर मार्गदर्शन करे ।

शिक्षा के प्रसार के काम में केवल सरकारी संसाधन पर निर्भर नहीं रहा जा सकता क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति के 67 वर्षों बाद भी हम 6 से 14 वर्षों की आयु के बच्चों के लिए नि:शुल्क आवश्यक शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर सके हैं । इसका मतलब यह है कि इस सिलसिले में हर व्यक्ति, चाहे वह महिला हो या पुरुष जो शिक्षा के महत्व से परिचित है और ख़ुद शिक्षित है शिक्षा को आम करने के लिए प्रयास करना होगा । मुस्लिम समुदाय का हर शिक्षित पुरुष और महिला अगर यह ठान ले कि कम-से-कम दो-दो पुरुष और महिला को शिक्षित बनाएगा उन अर्थों में जिन में इस्लाम चाहता है अर्थात अक्षर-ज्ञान के साथ-साथ ईश्वर-ज्ञान भी तो मैं समझता हूं कि मुस्लिम समुदाय की शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ेपन का दाग़ जो समुदाय के लिए कलंक बन गया है, कुछ ही वर्षों में धुल जायेगा इन्शा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) यह कोई असंभव काम नहीं है । कितने ही ऐसे देश हैं जिन्होंने हमारे साथ या हमारे बाद स्वत्रंता प्राप्त की है और उनकी साक्षरता दर 90 से 95 प्रतिशत और इससे भी अधिक है, इसका मतलब यह है कि सरकार की भी राजनीतिक इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प हो और मुस्लिम समुदाय के व्यक्ति और संस्थाएं भी इसके लिए स्वेच्छा से सेवा प्रदान करें तो यह ऐसा सपना नहीं है जो साकार न हो सके ।

जमाअत इस्लामी हिन्द अपने सीमित संसाधनों के साथ मुस्लिम समुदाय को लोगों और संगठन के सहयोगियों के साथ शिक्षा के प्रसार के लिए बराबर ध्यान दिला रही है । शिक्षा के प्रति जागरूकता अभियान का आयोजन प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और महाविद्यालय स्तर की धार्मिक एवं सांसारिक शिक्षण संस्थान की स्थापना, प्रौढ़

शिक्षा केंद्र, अंशकालीन मदरसे और स्कूल, पत्राचार शिक्षण केंद्र, संडे स्कूल, छुट्टियों के दिनों की क्लासें जैसे औपचारिक-अनौपचारिक प्रयास विभिन्न राज्यों में जारी हैं । शिक्षा के व्यापक उद्देश्य के परिप्रेक्ष में जमाअत के ये प्रयास कुछ भी नहीं हैं । इसलिए मुस्लिम समुदाय की तमाम जमाअतों, संस्थाओं और व्यक्तियों को प्रयास करना होगा ।

■ एक बड़ी समस्या शिक्षा के स्तर की भी है, जिस में बराबर गिरावट आती जा रही है बल्कि यह कहना अनुचित न होगा कि शिक्षित वर्ग में आपराधिक प्रवृत्ति अधिक बढ़ रही है, इस विषय में आप की क्या राय है और आपकी नज़र में इस समस्या का समाधान क्या है ?

जवाब : यह बात सही है कि शिक्षा का स्तर बराबर गिर रहा है । शिक्षाविद् इस विषय से अत्यधिक चिंतित हैं । कई शोध प्रकाशित हो चुके हैं । प्रथम एजूकेशन फ़ाउंडेशन और ए॰एल॰ए॰आ॰ के अनुसार लिखने-पढ़ने और गणितीय दक्षता में बच्चे अपनी क्लास से दो तीन क्लास पीछे रह जाते हैं । इस विषय में विभिन्न प्रकार से प्रयास किये जा रहे हैं । निरंतर जांच और सक्षमता माप के द्वारा छात्रों में कम-से-कम योग्यता और विस्तार शिक्षण, उपचार शिक्षण (C.C.E) Competency Continuous Comprehensive (Remedial Teaching) Evaluation के नियम पर जांच को सम्मिलित किया गया है ।

जहां तक इस बात का संबंध है कि शिक्षित वर्ग में आपराधिक रुझान बढ़ रहा है । यह एक सच्चाई है जिससे कोई भी दूरदृष्टि रखने वाला व्यक्ति नज़र नहीं बचा सकता । बड़े-बड़े राजनीतिक और आर्थिक स्कैंडल और घपले बराबर सामने आते रहते हैं, और उन सब में शिक्षित ही लिप्त पाये गये हैं । रातों-रात धनवान बनने की इच्छा ने मनुष्य को भौतिकतावादी बना दिया है। वह विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए हर तरह के उचित-अनुचित तरक़े अपनाने को तैयार हो जाता है । नैतिक मूल्य गिरावट के दौर से गुज़र रहे हैं । भ्रष्टाचार एक भयानक रूप धारण कर चुका है । इन्सानी जान-माल की सुरक्षा विशेष रूप से महिलाओं की सुरक्षा महत्वपूर्ण समस्या बनती जा रही है । लड़कियों को मां के गर्भ में ही समाप्त कर देने की प्रवृत्ति ने महिलाओं और पुरुषों के अनुपात को अधिक प्रभावित किया है । 2011 ई॰ की जनगणना के अनुसार 1000 पुरुषों पर केवल 937 महिलाएं हैं । और अलग-अलग राज्यों के अनुपात में और भी अधिक अन्तर है । हरियाणा में यह अनुपात 1000 पर 861 महिलाओं का है । युवा पीढ़ी में नशे की लत भी एक गंभीर समस्या है ।

नैतिक मूल्यों से परे और ईश्वर विमुख शिक्षा व्यवस्था के ये कड़वे फल हैं जिनको देशवासी चख रहे हैं । नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा नीति और अपने पालनहार, रचयिता के निर्देश और मार्गदर्शन से विमुख होकर नैतिक मूल्यों का पालन करने वाली पीढ़ी तैयार करना कठिन है । जितनी जल्दी हम इस बात को समझ लें उतना ही जल्द हम विभिन्न प्रकार की संकटों और दुष्परिणामों से बच सकते हैं ।

■ अच्छे स्कूल और अच्छे शिक्षकों के लिए क्या उपाय किये जा रहे हैं ?

जवाब : स्तरीय शिक्षा के लिए अच्छी शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और स्तरीय शिक्षक अति आवश्यक हैं । मुस्लिम समुदाय की संस्थाएं कई दृष्टि से ध्यान देने योग्य हैं । उचित इमारतें, खेल का मैदान, बड़े कमरे और संबंधित संसाधन का अभाव है । पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, और दूसरी शिक्षण समाग्री का अभाव है । सूचना प्रौद्योगिकी का भी स्तर शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में सहायक हो सकता है । लेकिन इस क्षेत्र में भी हमारी शिक्षा संस्थाओं को अभी बहुत कुछ करना है । अच्छे और उच्च स्तरीय शिक्षक बहुत-सी कमियों को पूरा कर सकते हैं । लेकिन शिक्षा संस्थाओं की सीमित संसाधन, कम फ़ीस, और शिक्षा अनुदान के अभाव के कारण बड़ी रुकावटें हैं ।

साधारण वेतन पर अच्छे शिक्षकों की सेवाएं न मिल सकने के कारण अप्रशिक्षित और साधारण योग्यताओं के अध्यापक शिक्षण के काम में लगे हैं । उनके प्रयास भी सराहनीय हैं, लेकिन बढ़ती महंगाई भी अपनी जगह एक सच्चाई है । मुस्लिम शिक्षित महिलाओं की सेवाओं की सराहना न करना भी अकृतज्ञता होगी । साधारण वेतन पर वे मुसलमान बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के कार्य में लगी हैं । सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार मुसलमानों में पुरुषों की तुलना में महिला अध्यापिकाएं अधिक संख्या में शिक्षण कार्यों से जुड़ी हैं ।

यह भी एक हक़ीक़त है कि शिक्षा क्षेत्र में हो रहे निरन्तर शोध एवं प्रयोगों ने शिक्षा को बाक़ायदा एक कला बना दिया है । अब प्रशिक्षित अध्यापक को ही सरकारी

नौकरियों में अवसर दिया जाता है । लेकिन निजी क्षेत्र में बहुत बड़ी संख्या अप्रशिक्षित अध्यापकों ही की है जो शिक्षण में कार्यरत हैं । विशेष रूप से हमारे मुस्लिम समुदाय की शिक्षा संस्थाएं इस सूरतेहाल से जूझ रहे हैं । जिसका अनिवार्य प्रभाव शिक्षा के स्तर पर भी पड़ता है ।

जमाअत इस्लामी हिन्द अपने तौर पर शिक्षकों की ट्रेनिंग के लिए राष्ट्रीय, राज्यकीय, और स्थानीय स्तर पर शिक्षकों के लिए विभिन्न प्रोग्राम आयोजित करती है । उनमें नये प्रकार के शिक्षा रुझान से शिक्षकों को अवगत कराना, उन्हें बच्चों की मानसिकता, शिक्षा पद्धति, शिक्षण संस्थानों की व्यवस्था, जांच की नवीन विधि से अवगत कराना, और उनके प्रशिक्षण जैसे उद्देश्य सामने रहते हैं । इस उद्देश्य के लिए जमाअत ने शिक्षकों के लिए विभिन्न अवधियों के लिए कोर्सेज़ तैयार किये हैं । जो एक-दो दिन से लेकर एक महीने तक के कोर्सेज़ पर आधारित है । शिक्षण विषयों पर अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए 75 DVDs, 50 Model Lesson, अंशकालिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए 34 DVDs स्तरीय शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों पर DVOs और प्री प्राइमरी शिक्षा पर 10 DVOs तैयार किये हैं । इसके पीछे यह उद्देश्य रहा है कि विभिन्न राज्यों में पाये जाने वाली शिक्षा संस्थाओं और अध्यापकों से लाभांवित हुआ जा सके । आशा है कि इससे लाभ उठाकर अध्यापक अपने प्रशिक्षण की ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं ।

बहरहाल यह स्वीकार्य किये बिना चारा नहीं कि प्रयास अप्रर्याप्त हैं संसाधन सीमित हैं। ज़रूरत इस बात की है कि इस विषय में मुस्लिम समुदाय के विभिन्न विचारधारा और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संगठनों को आगे बढ़कर इन प्रयासों में सहयोग करना होगा ।

■ मदरसों से शिक्षा प्राप्त लोगों के संबंध में ये बात महसूस की जा रही है कि वे न तो समाज के निर्माण में कोई सकारात्मक भूमिका निभाते हैं और न ही दीन (इस्लाम) की सेवा कर पाते हैं । इसका क्या कारण है ?

जवाब : मेरा एहसास है कि मुस्लिम समुदाय की शिक्षा और विकास का काम इतना बड़ा चैलेंज है कि उसमें किसी विशेष वर्ग के प्रयास अपूर्ण प्रतीत होते है । ज़रूरत बहुत विस्तृत हैं और काम करने वाले बहुत कम हैं । ये सब सामूहिक प्रयास और टीम वर्क चाहते हैं । दुर्भाग्य से मुस्लिम समुदाय में सामूहिक रूप से इस प्रकार के काम करने का रुझान नहीं है । हालांकि इस्लाम जिस तरह सामूहिकता की शिक्षा देता है और जिस तरह सामूहिक जीवन व्यतीत करने की व्यावहारिक तर्बियत करता है । इसकी अपेक्षा तो यह थी कि मुस्लिम समुदाय स्वेच्छा से सामूहिक Voluntary Organization मार्गदर्शन की भूमिका निभाता, लेकिन अफ़सोस कि यह सूरतेहाल पैदा करने के सिलसिले में अभी काफ़ी सकारात्मक अन्दाज़ में काम करने की ज़रूरत है । मुस्लिम समुदाय के लोगों की दीन से दूरी, मस्जिदों में नमाज़ियों की संख्या और अस्ल जनसंख्या का अनुपात इस सच्चाई का प्रतीक है कि सही समझ व जागरूकता के लिए उच्च स्तर पर काम करने की आवश्यकता है ।

इस स्थिति का एक और बड़ा कारण यह है कि हमारे बीच प्राथमिकता का चुनना भी एक ज़रूरत है । छोटी-छोटी समस्याएं हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण हो गयी हैं । हमारा पिछड़ापन और दीन से दूरी, इस्लाम की दावत आदि मुद्दे जो तुरंत ध्यान चाहती हैं ।

■ क्या मदरसों के पाठ्यक्रम अथवा पूरी शिक्षा व्यवस्था पर पुनर्विचार की आवश्यकता नहीं है ?

जवाब : न केवल मदरसे बल्कि पूरी शिक्षा व्यवस्था पर पुनर्विचार की आवश्यकता है, जहां दीनी पाठ्यक्रमों में सांसारिक चीज़ों को बढ़ाने की आवश्यकता है वहीं देश की शिक्षा व्यवस्था में भी नैतिक मूल्यों को महत्व देने की आवश्यकता है ।

सच्चाई तो यह है कि हरेक को अपने रचयिता एवं पालनहार को पहचानने वाला होना चाहिए ।

■ शिक्षा तो अस्ल में एक ही है । उसको दीनी और सांसारिक में विभाजित कर दिया गया है और उनके बीच दूरी बढ़ती गयी, आपका इस बारे में क्या विचार है क्या इस विभाजन को समाप्त करने की ज़रूरत नहीं नहीं ?

जवाब : शिक्षा एक समपूर्ण इकाई है उसको बांटना उचित नहीं । सही बात तो यही है कि हम दीन की शिक्षा की रोशनी में ही नयी पीढ़ी को प्रशिक्षित कर सकते हैं । हम ऐसी शिक्षा व्यवस्था स्थापित करें जो एक ही साथ संसार में उपस्थित संसाधनों का ज्ञान भी दे और उनको ईश्वरीय इच्छानुसार इस्तेमाल करने के लिए भी तैयार करे । इसी प्रकार यह द्वेत समाप्त हो सकता है । और मानवता उसके प्रतिफल से लाभांवित हो सकती है । जैसे आज से 1400 वर्षों पूर्व अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और सच्चे ख़लीफ़ाओं के दौर में लाभांवित हुई थी ।

पर्यावरण प्रदूषण : समस्या एवं समाधान

■ डॉ॰ सुरेश उजाला

पाश्चात्य दृष्टि ने आग में घी का काम किया है । वहां की अंध स्वार्थवृत्ति एवं भोग लिप्सा ने प्रकृति-चक्र को ऐसा ध्वस्त किया है कि सारे विश्व का पर्यावरण संतुलन गड़बड़ा गया है । पर्यावरण की उपेक्षा करके किया गया विकास बारूद के ढेर पर प्रसाद निर्मित करने के समान है । आज हमारा वायुमंडल अत्यधिक दूषित हो चुका है, जिसकी वजह से मानव का जीवन ख़तरे में आ गया है । आज यूरोप के कई देशों में प्रदूषण इतना ज़्यादा बढ़ गया है, जिसके कारण वहां कभी-कभी अम्ल-मिश्रित वर्षा होती है । ओस की बूंदों में भी अम्ल मिला रहता है । यदि समय रहते हुए हमने इस तरफ़ ध्यान नहीं दिया तो एक दिन विश्व में संकट छा जाएगा ।

वर्तमान समय में मनुष्य जैसे-जैसे विकास की तरफ़ बढ़ा है, वैसे-वैसे उसके नज़रिये में बदलाव आया है, वह भौतिकता की ओर अग्रसर हुआ है । उसकी आवश्यकताएं-ज़रूरतें बढ़ती गयीं, निष्कर्षतया प्रकृति का दोहन बढ़ा और मनुष्य के सामने संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी । मनुष्य निरंतर विकास की ओर उन्मुक्त है । वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक क्षेत्र में प्रगति के चरमोत्कर्ष को प्राप्त कर रहा है । वहीं प्रगति की यह तेज़ गति हमारे लिए घातक सिद्ध हो रही है जिसका सबसे ज़्यादा प्रभाव हमारे पर्यावरण पर पड़ रहा है । पर्यावरण आंग्ल शब्द एनवायरमेंट का हिन्दी रूपांतरण है, जो 'एनवायन' तथा मेंट से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है चारों तरफ़ का घेरा, जो चारों ओर से घेरे हैं, वहीं पर्यावरण है, जो प्राकृतिक वातावरण को चारों तरफ़ से आवृत्त किये हुए हैं । प्राकृतिक वातावरण में हवा, पानी, धरती, मौसम, वन, तापमान, खनिज पदार्थ सभी आ जाते हैं ।

जीवधारी अपनी प्रगति और व्यवस्थित जीवनक्रम हेतु संतुलित वातावरण पर निर्भर करते हैं । संतुलित वातावरण में प्रत्येक तत्व एक निश्चित मात्रा में मौजूद रहते हैं । जब ये तत्व असंतुलित हो जाते हैं तब वातावरण प्रदूषित हो जाता है जो मनुष्य को किसी न किसी रूप में नुक़सान पहुंचाता है । इसे ही प्रदूषण कहते हैं । मनुष्य जब से धरती पर आया तब से अपने-आपको पर्यावरण में पाया और उसमें रुचि रखता रहा है । ऐतिहासिक विकास के क्रम में अध्ययन करने से पता चलता है कि मनुष्य सदैव से प्रकृति पर निर्भर रहा है । मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य था । सृष्टि की उत्पत्ति की जो धारणा है वहीं से प्रकृति एवं मनुष्य के मध्य समन्वयात्मक संबंधों के प्रमाण मिलते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि प्रकृति तथा मनुष्य में समता का भाव है । प्राणी को सभी तत्वों के बराबर समझा गया है ।

आज के समय में अनेक प्रकार के वाहन यथा-बस-मोटरकार, ट्रैक्टर, जेट विमान, लाउडस्पीकर बाजे तथा सायरन एवं अनेक प्रकार की मशीनों के शोर से ध्वनि-प्रदूषण पैदा होता है । ध्वनि की लहरें या तरंगें प्राणिजगत की क्रियाओं को प्रभावित करती हैं । अधिक तेज़ शोर से व्यक्ति के सुनने की शक्ति का नाश होता है, ठीक प्रकार से निन्द्रा भी नहीं आती । ध्वनि-प्रदूषण के प्रभाव के कारण स्नायु तंत्र पर कभी-कभी इतना दबाव पड़ जाता है कि पागलपन की बीमारी पैदा हो जाती है ।

प्रदूषण की समस्या का जन्म जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ उत्पन्न हुआ है । प्रगतिशील शब्दों में औद्योगिक तथा रासायनिक कचरे ने पानी ही नहीं बल्कि हवा और धरती को भी प्रदूषित किया है । भारत जैसे राष्ट्र में तो घर के कचरे तथा गंदे पानी की निकासी का सवाल विकराल रूप से खड़ा हो गया है । विकसित एवं विकासशील देशों में अनेक प्रकार के प्रदूषण विद्यमान हैं । हवा-प्रदूषण व्यक्ति के स्वास्थ्य पर बुरा असर छोड़ता है जिससे श्वास संबंधी

अनेक रोग जन्म लेते हैं । यथा फेफड़ों का कैंसर, दमा आदि । हवा में मौजूद धातुओं के कण, सीसे के कण नाड़ीमंडल संबंधी बीमारी फैलाते हैं । कैड्मियन खसन-विष का काम करते हैं, जो रक्तदाब बढ़ाकर हृदय से संबंधित बीमारी उत्पन्न कर देते हैं । नाइट्रोजन ऑक्साइड से फेफड़ों-हृदय तथा आंखों से संबंधित बीमारी हो जाती है । ओजोन आंखों की बीमारी, खांसी तथा सीने में पीड़ा पैदा करती है ।

इस तरह दूषित हवा एग्जीमा तथा मुहांसे आदि बीमारी पैदा करती है । वातावरण में तमाम प्रकार की गैसें एक विशेष अनुपात में रहती हैं । जीवधारी अपनी क्रियाओं से ऑक्सीजन एवं कार्बनडाई ऑक्साइड का संतुलन वायुमंडल में बनाए रखते हैं । हम खसन-क्रिया द्वारा आक्सीजन लेते हैं और कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ते हैं । हरे पौधे प्रकाश संश्लेषण क्रिया द्वारा कार्बन डाईऑक्साइड ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन निकालते हैं । इससे वातावरण में ऑक्सीजन तथा कार्बन डाईऑक्साइड का संतुलन बना रहता है । लेकिन मनुष्य अपनी नासमझी की वजह से इसके संतुलन को बिगाड़ता चला आ रहा है ।

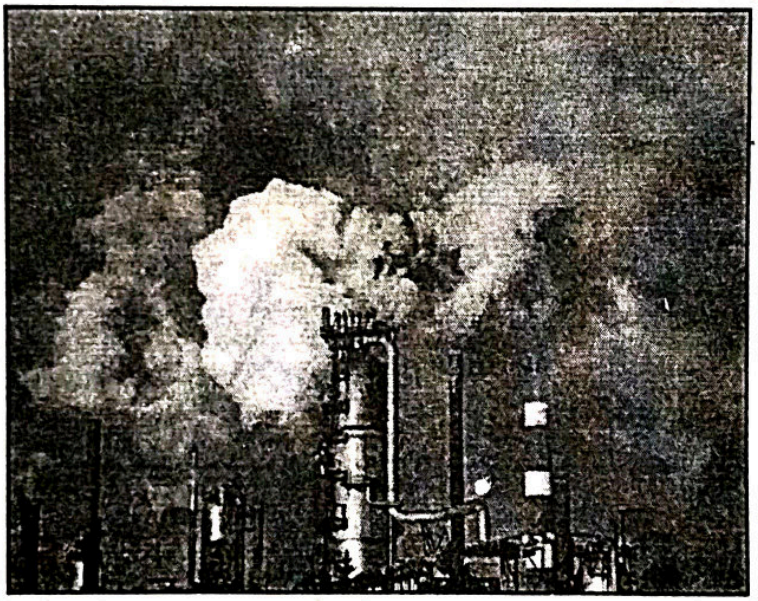

आज हमारे देश में अधिकतर नदियों का पानी प्रदूषित होता जा रहा है । 'केन्द्रीय जल-स्वास्थ्य इंजीनियरिंग संस्थान' के अनुसार भारत में एक लाख लोगों में से तीन सौ साठ लोगों की मृत्यु आंत्र शोध (टाइफाइड, पेचिश इत्यादि) से होती है, जिसका मूल कारण अशुद्ध पानी है जबकि सभी प्राणियों हेतु शुद्ध पानी नितांत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है । पेड़-पौधे अपना भोजन भी जल के द्वारा ही प्राप्त करते हैं । यह भोजन जल में ही घुला रहता है । पानी में विभिन्न प्रकार के खनिज तत्व, कार्बनिक पदार्थ और अनेक प्रकार की गैसें घुली रहती है ।

पानी में विभिन्न प्रकार के खनिज तत्व, कार्बनिक अकार्बनिक पदार्थ और अनेक प्रकार की गैसें घुली रहती हैं । यदि पानी में ये पदार्थ आवश्यकता से ज़्यादा मात्रा में है तो पानी प्रदूषित होकर हानिकारक हो जाता है ।

आज के समय में अनेक प्रकार के वाहन यथा-बस-मोटरकार, ट्रैक्टर, जेट विमान, लाउडस्पीकर बाजे तथा सायरन एवं अनेक प्रकार की मशीनों के शोर से ध्वनि-प्रदूषण पैदा होता है । ध्वनि की लहरें या तरंगें प्राणिजगत की क्रियाओं को प्रभावित करती हैं । अधिक तेज़ शोर से व्यक्ति के सुनने की शक्ति का नाश होता है, ठीक प्रकार से निन्द्रा भी नहीं आती । ध्वनि-प्रदूषण के प्रभाव के कारण स्नायु तंत्र पर कभी-कभी इतना दबाव पड़ जाता है कि पागलपन की बीमारी पैदा हो जाती है ।

किसान आज अधिक पैदावार हेतु कीटनाशक शाकनाशक तथा रोगनाशक दवाइयों और रसायनों का उपयोग करते हैं जिसका प्रभाव प्राणि जगत पर विपरीत पड़ता है । आधुनिक पेस्टोसाइट्स का अधिक प्रयोग भी हानिकार सिद्ध हो रहा है । ये रसायन वर्षा के पानी के संग बहकर नदियों द्वारा समुद्र तक पहुंच जाते हैं जो समुद्री जीव-जंतुओं तथा वनस्पति को नुक़सान पहुंचाते हैं । साथ ही किसी न किसी रूप में व्यक्ति के शरीर को भी नुक़सान पहुंचाते हैं । परमाणु शक्ति उत्पादन केन्द्रों तथा परमाणु-परीक्षण के बाद पानी, हवा और पृथ्वी का प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है ।

यदि प्रदूषण आज की पीढ़ी के लिए नहीं अपितु आने वाली पीढ़ियों के लिए भी हानिकारक है । विस्फोट के वक़्त उत्पन्न रेडियो धर्मी पदार्थ वायुमंडल की बाहरी पर्त में प्रवेश कर जाते हैं जहां वे ठंडे होकर संघनित अवस्था में बूंदों का रूप ले लेते हैं तथा बहुत छोटे-छोटे धूल-कणों के रूप में हवा के झोंकों के साथ संपूर्ण विश्व में फैल जाते हैं । द्वितीय महायुद्ध में नागासाकी और हिरोशिमा में हुए परमाणु बम के विस्फोट से बहुत से व्यक्ति अपंग हो गये थे । इतना ही नहीं अपितु इस प्रकार के प्रभावित क्षेत्रों की भावी संतति भी अनेक प्रकार की बीमारी से ग्रस्त होती है ।

आधुनिकता की चाहत में मनुष्य सरपट प्रगति की राह

पर दौड़ता जा रहा है । विकास की दौड़ में व्यक्ति अपने लिए सुविधाएं तो जुटा रहा है, किंतु संकट भी उत्पन्न कर रहा है । इन संकटों में सबसे अधिक संकट पर्यावरण की समस्या है जो बढ़ते शहरीकरण के कारण और अधिक बढ़ रहा है । इस अनियोजित शहरीकरण में, धरती, पेड़-पौधे, जंगली जानवर, पारंपरिक जल-स्रोत आदि तेज़ी के साथ सभी नष्ट हो रहे हैं । यदि हम समय रहते नहीं चेते तो पछतावे के अलावा कुछ नहीं रह जाएगा, क्योंकि प्रकृति के इन तत्वों के नष्ट होने का सीधा-सा अर्थ है–मानवता का अंत ।

जैसे-जैसे व्यक्ति अपनी वैज्ञानिक शक्तियों का विकास करता जा रहा है वैसे-वैसे प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है । विकसित राष्ट्रों द्वारा वातावरण का प्रदूषण सबसे अधिक बढ़ रहा है । यह एक ऐसी समस्या है जिसे किसी विशिष्ट क्षेत्र या राष्ट्र की सीमाओं में बांधकर नहीं देखा जा सकता, यह विश्वव्यापी समस्या है । सभी राष्ट्रों का संयुक्त प्रयास ही इसे दूर करने में सहायक हो सकता है । पर्यावरण में होने वाले प्रदूषण को रोकने व समुचित संरक्षण हेतु पिछले कुछ सालों में संपूर्ण विश्व में एक नयी जागृति उत्पन्न हुई है । औद्योगिकरण और जनसंख्या दोनों की वृद्धि ने दुनिया के सामने प्रदूषण की गंभीर समस्या पैदा कर दी है ।

तूफ़ानों ने अमेरिकी महाद्वीप में घोर कहर बरपाया है । भारतीय प्रायद्वीप में भी भारत और पाकिस्तान दोनों ही देश प्राकृतिक प्रकोप से अछूते न रहे, जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र में आये भयंकर भूकंप से हुई जन-धन की हुई अपार क्षति का अनुमान लगा पाना अत्यंत कठिन है । जापान की सुनामी ने भी भारी तबाही मचाई । मुंबई, कोलकाता, चेन्नई तथा बंगलौर जैसे महानगरों में अप्रत्याशित वर्ष से लाखों की जानें गयीं और लाखों लोग बेघर हो गये । हमें गंभीरतापूर्वक इस विभीषिकाओं के कारणों पर विचार करना होगा और समय रहते-रहते उनका निदान भी खोजना होगा । क्योंकि मनुष्य की स्थिति धरती के संरक्षक की है–न कि विनाशक की । अतः प्रकृति के विभिन्न घटकों के मध्य आंतरिक सह-संबंधों एवं जैव वैविध्य को समझना और उसके सहज प्राकृतिक स्वरूप को संरक्षित करना उसका कर्तव्य है ।

प्रदूषण रोकने के लिए व्यक्तिगत और सरकारी दोनों ही स्तरों पर प्रयास की सख़्त आवश्यकता है । जल-प्रदूषण के निवारण एवं नियंत्रण हेतु भारत सरकार ने वर्ष 1974 से 'जल-प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड' गठित किये निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम लागू किया है । इसके अंतर्गत एक 'केन्द्रीय बोर्ड' व सभी प्रदेशों में प्रदूषण हैं । इन बोर्डों ने प्रदूषण-नियंत्रण योजनाएं तैयार की हैं तथा औद्योगिक कचरे हेतु भी मानक निर्धारित किये हैं ।

उद्योगों के कारण पैदा होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण निर्णय यह लिया है कि नये उद्योगों को लाइसेंस दिये जाने से पूर्व उन्हें औद्योगिक कचरे के निस्तारण की समुचित व्यवस्था तथा पर्यावरण विशेषज्ञों से स्वीकृति भी प्राप्त करनी होगी । इसी प्रकार उन्हें धुएं तथा अन्य प्रदूषणों के समुचित ढंग से निष्कासन और उसकी व्यवस्था का भी दायित्व का निर्वहन करना होगा । वनों की अनियंत्रित कटाई को रोकने के लिए कठोर नियम बनाए गये हैं । इस बात के प्रयास किये जा रहे हैं कि नये वनक्षेत्र विकसित किये जाएं और जनमानस को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित किया जाए । पर्यावरण के प्रति जागरूकता से ही हम आने वाले समय में और अधिक बेहतर तथा स्वास्थ्यवर्धक जीवन व्यतीत कर सकेंगे और आने वाली पीढ़ी को प्रदूषण की समस्या से आज़ादी दिला सकेंगे ।

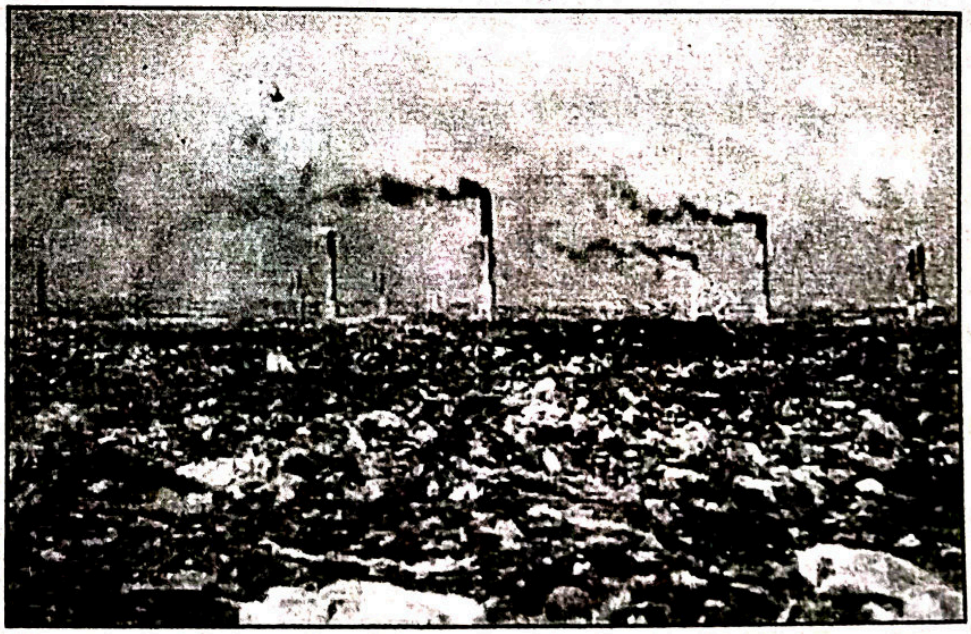

महिला विरोधी कुप्रथाएं

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

हमारे देश में कई महिला विरोधी कुप्रथाएं प्रचलित हैं । इनमें एक डायन कुप्रथा भी है, जिसके ख़िलाफ़ अभियान भी छेड़ा जाता है, लेकिन रोक लगने या इसमें कमी आने की ख़बर अभी तक नहीं मिल सकी है ! एक अध्ययन में यह बात आयी है कि देश में हर साल लगभग दो सौ महिलाओं को डायन होने के आरोप में अपनी जान गवानी पड़ती है । स्वयं सेवी संस्था 'रूरल लिटिगेशन एंड एनटाइटलमेंट सेन्टर' के प्रभारी अवधेश कौशल के अनुसार, झारखण्ड, ओडिशा और हरियाणा के साथ ही दक्षिण भारतीय राज्य आंध्र प्रदेश में भी इस तरह की घटनाएं अधिक होती हैं । इस कुप्रथा की ज़्यादातर पीड़ित अकेले रहने वाली विधवा महिलाएं हैं, जिनकी ज़मीन या सम्पति हड़पने के लिए डायन बना दिया जाता है ।

इस संस्था के एक अध्ययन में यह बात भी कही गयी है कि महिलाओं को डायन घोषित करने पर ही बस नहीं किया जाता, अपितु हद से बहुत आगे बढ़कर इन महिलाओं को बहुत ही बेहरहमी से सार्वजानिक रूप से क़त्ल किया जाता है । पहले इन्हे पेशाब पीने या फिर मानव मल तक खाने के लिए विवश किया जाता है फिर सब लोगों के सामने इन्हे निर्वस्त्र करके पूरे गांव में घुमाया जाता है । फिर पेड़ में बांध कर उस समय तक ईंट और पत्थरों से मारा जाता है, जब तक वह महिला खुद को डायन (चुड़ैल, डाकिनी) न स्वीकार कर ले । फिर बहुत ही वीभत्स और निर्मम ढंग से गला रेत कर उसकी हत्या कर दी जाती है । साथ-साथ सभ्य समाज होने का ढोंग और दावा समानांतर रूप से चलता रहता है । राष्ट्रीय महिला आयोग के मुताबिक़ भारत में विभिन्न प्रदेशों के पचास से अधिक ज़िलों में यह कुप्रथा सबसे ज़्यादा फैली है ।

देश के इन ज़िलों में ऐसी औरतों की सूची लंबी है जिन्हें डायन क़रार देकर ज़ुल्मो-सितम का शिकार बनाया जा चुका है । यह सिलसिला अब भी जारी है । इस कुप्रथा की कुछ मिसालें इस प्रकार हैं– राजस्थान में टोंक ज़िले की रहने वाली कमला मीणा तीन बच्चों की मां है । पति ने एक दिन उसे डायन क़रार दे दिया और दूसरी शादी कर ली । कमला ने पत्रकारों को बताया, "दस साल हो गये मुझे दर-दर की ठोकरें खाते हुए । जिसके भी दरवाज़े पर दस्तक दी, ख़ाली हाथ लौटा दी गयी । क़स्बे में कोई मकान तक किराये पर नहीं देता । जैसे ही पता चलता है, मुझे मकान ख़ाली करने के लिए कह दिया जाता है ।" कमला ने पत्रकारों को बताया कि उसे आधी रात को घर से निकाल कर मारा-पीटा गया । उसने अपने जिस्म पर उभरे कुल्हाड़ी की मार के ज़ख़्म के निशान भी दिखाये । कमला के मुताबिक़ न उसे पुलिस से मदद मिली और न ही अदालत से न्याय ।

हिमाचल प्रदेश की निर्मल चंदेल जब 24 साल की थी, उसके पति का देहावसान हो गया, जिसके लिए उसे ज़िम्मेदार ठहराया गया । दक्षिण राजस्थान की सुन्दर बाई विधवा है । उन्हें उनके भतीजे ने ही डायन घोषित कर दिया । एक दिन मृत घोषित कर पेंशन बंद करा दी । क्योंकि वह मेरी सम्पति हड़पना चाहता है । अब पेंशन वापस शुरू हो गयी है, मगर अब भी मैं डरी हुई हूं । एक अन्य घटना झारखंड के आदिवासी बहुल लोहरदगा ज़िले के कुड़ू थाना क्षेत्र के टाटी डुमरटोली गांव की है । पीड़िता के पति दुतिया मुंडा एक साधारण किसान हैं । बेटे भी खेती-बाड़ी करते हैं । पीड़िता के पुत्र उमेश मुंडा के मुताबिक़ छह साल पहले भी उनकी मां की डायन बताकर सरेआम पिटायी की गयी थी । उन्होंने अपनी बहन के साथ मिलकर मां को बचाने का प्रयास किया, लेकिन गांव वालों ने उन्हें खदेड़ कर भगा दिया । उनकी मां गुहार लगाती रही, लेकिन उन्हें बुरी तरह प्रताड़ित किया गया ।

पुलिस के मुताबिक़, पांच नवम्बर की सुबह गांव में पंचायत बिठायी गयी जिसमें कदनी देवी को सज़ा सुनायी गयी । इससे पहले भी लोहरदगा से सटे गुमला ज़िले में ऐसी ही घटना हुई थी जब लेमहा गांव में एक विधवा महिला को डायन बताकर उनकी हत्या कर दी गयी थी । पुलिस ने

बताया कि सुधवा मुंडा के एक बच्चे की मौत हो गयी थी और उन्हें शक था कि उसी महिला ने कोई जादू-टोना कर दिया था जिससे बच्चों की मौत हो गयी । पुलिस विभाग के एक आंकड़े के मुताबिक़, झारखंड में पिछले आठ महीने में डायन बताकर लगभग 40 महिलाओं की हत्या कर दी गयी है ।

विधि-विधान और नैतिकता को धता बताकर देश के गांव-देहातों और छोटे क़स्बों में अब भी कोई ओझा, भोपा, गुनिया और तांत्रिक किसी सामान्य औरत को कभी भी डायन घोषित कर देता है । आम तौर पर औरत के घर, परिवार और रिश्तेदार ऐसा करवाते हैं । देखा जाता है कि इस कुप्रथा के ख़िलाफ़ खाप पंचायतें भी अपना मुंह नहीं खोलतीं । महाराष्ट्र में सामाजिक कार्यकर्ता विनायक तावड़े और उनका संगठन कई सालों से डायन प्रथा के विरुद्ध अभियान चला रहे है । तावड़े के मुताबिक़ आदिवासी इलाक़ों में ये प्रथा एक बड़ी समस्या बनी हुई है । वे बताते हैं कि कैसे एक ओझा गांव में एक महिला को डायन क़रार देने का उपक्रम करता है–"जैसे गांव में कोई बीमार हो गया, तो कुछ लोग जवार के दाने बीमार के ऊपर सात बार घुमाकर ओझा के पास ले जाते हैं । ओझा एक दाना इस तरफ़, एक उस तरफ़ रखकर मंत्र बोलना शुरू करता है । फिर कहता है–हां, उसे डायन ने खाया है । उस डायन का घर नाले के पास है । उसमें पेड़ है, इतने जानवर हैं, आम के पेड़ है । महू का पेड़ है, इतने बच्चे हैं !" मि॰ तावड़े आगे बताते हैं, "इनमें जो बातें अनुमान से किसी पर लागू हो जाए, उस औरत को डायन क़रार दिया जाएगा । हमने ऐसे ही एक ओझा को गिरफ़्तार करवाया है ।"

राष्ट्रीय महिला आयोग की निर्मला सावंत प्रभावलकर मानती हैं कि देश के पचास-साठ ऐसे ज़िले हैं जहां इस कुप्रथा के उदाहरण आये दिन मिल जाते हैं । महिला को डायन, कहीं डाकन, तेनी या टोनी, पनव्ती, मनहूस और ऐसे ही नामों से लांछित कर उसे घर से निकाल दिया जाता है । यह समस्या शिक्षित वर्ग में भी है । कभी ऐसा भी होता है कि जब कोई महिला राजनीति में आती है, तो लोग कहने लगते हैं कि वह जहां भी हाथ लगाएगी, नुक़सान हो जाएगा । आप चुनाव हार जाएंगे, ऐसा कहकर लांछित किया जाता है । पीड़ित महिलाओं में ज़्यादातर दलित, आदिवासी या पिछड़े वर्ग से है । सामाजिक कार्यकर्ता तारा अहलूवालिया ने राजस्थान में आदिवासी बहुल इलाक़ों में ऐसी पीड़ित महिलाओं की मदद की है । उनके अनुसार, "लगभग 36 ऐसे मामले मेरे पास हैं जिनमें औरत को डायन घोषित कर दिया गया । मगर पुलिस ने कोई मदद नहीं की । इस गंभीर स्थिति में इस कुप्रथा पर कैसे लगाम लग पाएगी ? अहलूवालिया ने कहा, "यह समय है जब डायन विरोधी क़ानून बनना चाहिए । अकेले भीलवाड़ा ज़िले में ही कोई ग्यारह स्थान ऐसे हैं जो औरत के शरीर से डायन निकालने के लिए जाने जाते हैं । वहां हर सप्ताह भीड़ लगती है । इन औरतों के साथ हर तरह की हिंसा होती है ।" रांची इंस्टीट्यूट ऑफ़ न्यूरो साइकिएट्री एंड एलायड साइसेंज के निदेशक सह मनोवैज्ञानिक डॉ॰ अमूलरंजन सिंह कहते हैं, "किसी की बीमारी या मौत में भूत-प्रेत, ओझा-गुनी की कोई भूमिका नहीं होती, लेकिन गांवों में अब भी तरह-तरह की भ्रांतियां हैं । इसे जागरूकता के ज़रिए ही दूर किया जा सकता है । महिला कार्यकर्ता लखी दास डायन कुप्रथा के ख़िलाफ़ कोल्हान इलाक़े में काम करती हैं । उनका कहना है, "इन मामलों में विधवाएं अधिक प्रताड़ित होती हैं । जनजाति बहुल गांवों में अब भी गहरा अंधविश्वास है ।" उन्होंने बताया कि अध्ययन में पाया गया है कि महिलाओं को सार्वजनिक तौर पर मैला पिलाया जाता है । उनके बाल काट दिये जाते हैं और उन्हें निर्वस्त्र कर घुमाया जाता है, लेकिन सुदूर इलाक़ों में होने वाली प्रताड़ना की अधिकतर घटनाएं प्रकाश में नहीं आ पातीं । झारखंड सरकार ने डायन प्रथा उन्मूलन की योजना बनायी है । इस योजना के नाम पर हर साल बीस लाख रुपये ख़र्च किये जाते हैं । यह योजना कारगर नहीं साबित हुई है । इस कुप्रथा पर रोक के लिए बड़े पैमाने पर काम करने की ज़रूरत है ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

अल्लामा इक़बाल का आर्थिक दृष्टिकोण

❖ प्रो॰ अब्दुल हक़

मानवजाति रोज़गार और अर्थव्यवस्था के मामलों में मेशा घिरी रही है । यह मामला जीवन व्यवस्था का अंग , जिसे चिंतकों के आलेख, दार्शनिकों के दर्शन और माज-सुधारकों के निर्देश हल करने में पूरी तरह लगे रहे । हर युग में विभिन्न विचारों के मानने और उस पर चलने ाले इस पर नियंत्रण रखने के प्रयास करते रहे हैं । इस मुद्दे व्यक्ति को ही नहीं पूरे जगत को प्रभावित किया है । च्चाई यह है जीव-जन्तु और वनस्पति सभी भोजन-पानी के मुहताज हैं ।

शायद यही कारण है कि सर्वजगत के रचयिता ने अपने स्तित्व का पहला परिचय पालनहार के रूप में पेश किया । अगर खुली आंखों से देखा जाए तो इस बड़ी सच्चाई को स्वीकार किये बिना चारा नहीं है कि सारे जगत का ालनहार वही है । बन्दगी को बाक़ी रखने के लिए वही ोजन-पानी उपलब्ध कराता है । जीने के लिए आवश्यक ामग्री उपलब्ध कराने में प्रकृति ने बड़ी उदारता दिखायी । जल और वायु हो या प्रकाश और मिट्टी इनके बिना ीना मुहाल है । ये चीज़ें किसी व्यक्ति या सरकार की सत्ता आज़ाद हैं और हर जानदार को बिना दाम दिये प्राप्त । सोने-चांदी की मात्रा सीमित है और उनकी उपलब्धि ी कठिन है । ये जीने के लिए आवश्यक नहीं है तो इन र बलशालियों का क़ब्ज़ा भी है ।

इसके बावजूद मानव बस्तियां दो भागों में विभाजित । अमीर सुखी और संपन्न हैं तो ग़रीब अभाव ग्रस्त । यह न्तर हमेशा हंगामों का कारण और हर तरह के संघर्ष को न्म देता रहा है । समृद्धि और कठिनाई के बीच खींचतान ारी है । पिछली सदी में विचार और दृष्टि भी प्रभावित हुए, इक़बाल कैसे निस्पृह रह सकते थे ? कलाकार को क़ौम ी आंख कहने वाला इस विषय की गंभीरता से आंखें नहीं ुरा सकता था ।

समाज के एक संवेदनशील नवयुवक की दृष्टि से भूख मारे हुए लोगों के हालात छुपे हुए नहीं थे । इक़बाल की



संवेदनशीलता से उनकी शायरी बहुत प्रभावित है । आरंभिक काल की लंबी कविता 'हिलाले ईद' अगर नज़र के सामने हो तो उनके दर्द को समझना आसान होगा । दरिद्रता के अत्याचारों का उल्लेख इस कविता का मूल विषय है । यह 23 वर्षीय एक नवयुवक का चिंतन भी है ।

आश्चर्य की बात है कि उन्होंने इस विषय से ही अपनी रचनात्मकता का आरंभ किया । 1904 ई॰ में अर्थशास्त्र पर उर्दू में सबसे पहली पुस्तक इक़बाल के भाग्य पत्र में ही लिखी गयी थी । इस पुस्तक में अर्थशास्त्र के विभिन्न विषयों पर बहस की गयी है । जैसे ज़मीन, मेहनत, पूंजी, धन राशि, लगान, सूद, मज़दूरी, धन का व्यय, आबादी, ग़रीबी आदि । विषय की गंभीरता और इक़बाल की चिंता ने इक़बाल के अध्ययन को एक नयी दिशा दी । प्रस्तावना का यह अंश प्रस्तुत है–

"ज़रा बिचार करो कि ग़रीबी या यूं कहो कि जीवन की आवश्यकताओं के पूर्ण रूप से पूरा न होने से मानव स्वभाव कहां तक प्रभावित होता है । ग़रीबी मनुष्य की शक्तियों पर बहुत बुरा प्रभाव डालती है, बल्कि कई बार तो मनुष्य की अंतरात्मा को इतना बिगाड़ देती है कि नैतिक और सांस्कृतिक आधारों पर उसका अस्तित्व और अस्तित्वहीनता समान हो जाती है । क्या संभव नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति ग़रीबी के दुख से मुक्त हो ? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि

दमन, शोषण के विरुद्ध स्वर

ज़रा विचार करो कि ग़रीबी या यूं कहो कि जीवन की आवश्यकताओं के पूर्ण रूप से पूरा न होने से मानव स्वभाव कहां तक प्रभावित होता है । ग़रीबी मनुष्य की शक्तियों पर बहुत बुरा प्रभाव डालती है, बल्कि कई बार तो मनुष्य की अंतरात्मा को इतना बिगाड़ देती है कि नैतिक और सांस्कृतिक आधारों पर उसका अस्तित्व और अस्तित्वहीनता समान हो जाती है ।

गली-कूचों में चुपके-चुपके कराहने वाले की मार्मिक पुकारें सदा के लिए समाप्त हो जाएं और एक संवेदनशील व्यक्ति को हिला देने वाला दरिद्रता का मार्मिक दृश्य हमेशा के लिए मिट जाए ।''

इस बारे में इक़बाल ने यह विचार भी व्यक्त किया कि उत्पादन में अगर वृद्धि या विकास हो तो वह पूंजीपतियों का अधिकार नहीं होता, बल्कि मज़दूर का अधिकार होता है ।

''प्रश्न यह है कि उत्पादन की यह अधिकता किसका अधिकार है ? ज़मींदार का ? नहीं, कदापि नहीं । यह अधिकता साहूकार का भी अधिकार नहीं है...कारख़ानेदार का भी नहीं...साबित हुआ कि उत्पादन मेहनत की अधिकता जो शिल्पकारों की निजी मेहनत का फल है, खुद शिल्पकारों का अधिकार है, ज़मींदारों, साहूकारों और कारख़ानेदारों का इससे कोई वास्ता नहीं ।''

कारख़ाने का है मालिक मर्द एक नाकरदहकार
ऐश का पुतला है, मेहनत है उसे नासाज़गार
हुक्म हक़ है 'लैस लिल इन्सानि इल्ला मा सआ'*
खाये क्यों मज़दूर की मेहनत का फल सरमायादार ।

(बांगे दरा)

धन के वितरण पर इक़बाल ने एक स्पष्ट दृष्टिकोण पेश किया है । मार्क्स के विचारों और रूसी क्रांति से तेरह वर्ष पहले एक 25 वर्ष का नवजवान शायर इन विषयों को लेकर गंभीर है । रोज़ी रोटी की पेचीदा समस्या से वे जीवन के किसी भी हिस्से में मुक्त नहीं हुए, बल्कि उनका समाधान खोजने में व्यस्त रहे ।

अर्थशास्त्र पर पश्चिमी चिंतकों की कुछ किताबों से इक़बाल परिचित हो चुके थे । उनके कुछ मुद्दे इक़बाल की नज़र में थे । अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त अर्थशास्त्री माल्थस जिन्होंने जनसंख्या वृद्धि और उस पर प्राकृतिक नियंत्रण पर अपने विचार व्यक्त किये, का हवाला भी इक़बाल ने अपनी किताब में दिया है । माल्थस का हवाला इक़बाल के अध्ययन और समझ-बूझ की एक मिसाल है, जो खुशी और बेफ़िक्री के दौर में रोज़ी की चिंता और तड़प से जूझ रहा है ।

'इल्मुल इक़्तिसाद' (अर्थशास्त्र) के प्रकाशन वर्ष अर्थात 1904 ई॰ में ही इक़बाल ने क़ौमी ज़िन्दगी के शीर्षक से 'मख़ज़न' में एक लेख लिखा । मानवाधिकार पर बातचीत के दौरान राष्ट्रीय जीवन के विषय पर चिंतनीय विचारों की अभिव्यक्ति उनके आर्थिक विचारों का प्रतिनिधित्व करती है ।

सबसे पहले अल्लाह के नबी (सल्ल॰) ने इन्सान को स्वाभाविक स्वतंत्रता की शिक्षा दी और दासों एवं स्वामियों की स्वतंत्रता को समान ठहराकर उस सांस्कृतिक क्रांति की आधारशिला रखी जिसके परिणामों को इस समय सारी दुनिया महसूस कर रही है ।

आगे लिखा है–

''दुर्भाग्यशाली क़ौम शासन खो बैठती है, व्यवसाय खो बैठती है, व्यापार खो बैठती है । अब समय की अपेक्षाओं से आंखें मूंदे और ग़रीबी की तेज़ तलवारों से घायल होकर एक व्यर्थ भरोसे की लाठी टेके खड़ी है ।''

ऊपर वाले गद्यांश में धन के विभाजन में समानाधिकार पर चर्चा थी, दूसरे में भूख और ग़रीबी के कारणों का विश्लेषण और अभावग्रस्तता में जन्म लेने वाली मानसिकता के नकारात्मक प्रभावों को बड़ी शिद्दत से महसूस कराया

* इन्सान का वही है जो उसने कमाया । (क़ुरआन)

है । ग़रीबी को सभी बुराइयों की जननी कहा जाता है, क्योंकि भूख पेट भरने के लिए जघन्य से जघन्य अपराध करने को प्रेरित करती है ।

किसी क़ौम की अर्थव्यवस्था उसके उत्पादन, आयात और निर्यात पर निर्भर करती है । विश्व अर्थव्यवस्था भी इसी पर टिकी है और मुद्रा की स्थिरता भी इसी पर बनी हुई है । आयात-निर्यात में विनिमय के लिए धनराशि की ज़रूरत होती है और सुरक्षित धन राशि की ज़मानत भी ज़रूरी है । इससे देश की अर्थव्यवस्था पर बड़ा दबाव पड़ता है, इसलिए आर्थिक स्थिरता के लिए राज्यों का आत्मनिर्भर होना अनिवार्य है ।

आर्थिक विकास भी इसी पर आधारित है । दुनिया में विकसित और विकासशील देशों के बीच बढ़ती दूरियों और असंतुलन के कारण एक संघर्ष जारी है । अल्लामा इक़बाल ने आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की वकालत की । उन्होंने अपनी शायरी में इस सच्चाई का उल्लेख किया है, जिसे एक सदी बीत चुकी है । हमारी अर्थव्यवस्था का सूर्य भी उभरा नहीं है ।

इन्तिहा भी इसकी है, आख़िर ख़रीदें कब तलक
छतरियां, रूमाल, मफ़लर, पैरहन जापान से
अपनी ग़फ़लत की यही हालत अगर क़ायम रही
आएंगे ग़स्साल काबुल से कफ़न जापान से
बस्ते हैं हिन्द में जो ख़रीदार ही फ़क़त
आग़ा भी लेते आते हैं अपने वतन से हींग ।

(बांगे दरा)

आर्थिक संकट से उबरने के लिए इक़बाल का यह नियम वर्तमान समय में एक सिद्धांत जैसा है । हर देश और हर राष्ट्र जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हर संभव स्रोत पर गंभीरता से ध्यान लगाये हुआ है । आत्मनिर्भर होने के सौ-सौ जतन हो रहे हैं । देश के औद्योगिक और कृषि उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि देश की अर्थव्यवस्था में स्थायित्व आये । इक़बाल ने 1921 ई० में भारतवासियों को सचेत किया था कि आयात-निर्यात की व्यवस्था को देश के हितों से जोड़ा जाए । समृद्धि भी इसी संतुलन पर आधारित है । आम इस्तेमाल की सभी चीज़ें देश के भीतर तैयार की जाएं और दूसरों पर आश्रय से सुरक्षित रहकर ही इस संकट से उबरा जा सकता है ।

उठा न शीशागराने फ़िरंग का एहसां
सिफ़ाले हिन्द से मीना व जाम पैदा कर ।

(बाले जिबरील)

यह केवल अपनी आवश्यकताओं को सीमित करने का उपदेश नहीं है, बल्कि ज़रूरतों और सामग्री के असंतुलन से उत्पन्न समस्याओं से मुक्ति का मार्ग भी है । अल्लामा इक़बाल ने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की है । 1905 ई० में यूरोप जाते हुए मुंबई के एक होटल में ठहरने का उल्लेख करते हुए लिखते हैं–

"इसी होटल में एक यूनानी भी आकर ठहरा, जो टूटी-फूटी सी अंग्रेज़ी बोलता था । मैंने एक दिन उससे पूछा कि तुम कहां से आये हो कहने लगा चीन से और अब ट्रांसवाल जाऊंगा । मैंने पूछा चीन में क्या काम करते थे ? कहने लगा व्यापार करता था, मगर चीनी लोग हमारा सामान नहीं ख़रीदते थे ।

मैंने दिल में सोचा कि हम भारतीयों से तो ये अफ़ीमी ही समझदार निकले कि अपने देश के उद्योग का ध्यान रखते हैं । शाबाश अफ़ीमियों शाबाश, नींद से जाग जाओ । अभी तुम आंखें ही मल रहे हो कि दूसरी क़ौमों को अपनी-अपनी चिंता होने लगी । हां हम भारतीयों से अपेक्षा न रखना कि एशिया की व्यापार प्रतिष्ठा को फिर से जागृत करने में तुम्हारी मदद कर सकें । हम सहमत होकर काम करना नहीं जानते । हमारे देश में प्रेम और भाईचारे की सुगंध शेष नहीं रही । हम पक्का मुसलमान उसे समझते हैं जो हिन्दुओं के ख़ून का प्यासा हो और उसको पक्का हिन्दू समझते हैं जो मुसलमान की जान का दुश्मन हो । हम किताब के कीड़े हैं और पश्चिमी दिमाग़ों के विचार हमारी खाद्य सामग्री हैं । काश बंगाल की खाड़ी की मौजें हमें डुबा दें ।"

विचारणीय है कि 1905 ई० में एक नवजवान के विचार अपने देश के आर्थिक संकट और विश्व उपभोक्तावाद को दर्शा रहे है । लगभग 25 वर्ष बाद यह चुभन एक तूफ़ान में बदल जाती है और किसान की खेती को जलाकर राख कर देने पर मजबूर करती है । वह खेत जला देने योग्य है, जो किसान को रोज़ी न दे सके । खेत खलिहान के साथ अमीरों

के महल भी राख का ढेर बना दिये जाने योग्य हैं ।

उस खेत के हर ख़ोशा-ए-गंदुम को जला दो

काख़े उमरा के दरो दीवार हिला दो ।

अल्लामा इक़बाल का यह विचार भी बहुत महत्वपूर्ण है कि अपने यहां के कच्चे माल से उद्योग धंधे को विकसित किया जाए, अन्यथा इस कच्चे माल से दूसरों को लाभ होगा और हमारी अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ता जाएगा । जैसे भारतीय कपास को मानचेस्टर की मिलों में कपड़े की तैयारी के लिए बेचना समझदारी नहीं, बल्कि हमें खुद अपने शरीर ढकने के लिए कपड़े भी तैयार करना चाहिए । अंग्रेज़ों ने यही किया और वे हमें गुलामी के साथ-साथ भुखमरी के लिए छोड़ गये । आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के लिए यह बिन्दु ध्यान देने योग्य है । फिरंगियों ने अपना व्यापार चमकाने के लिए पूर्व को बहुत नुक़सान पहुंचाया । हमारी भूमि से जो भी उत्पादन हुआ उसे बेचने और इस्तेमाल करने के मालिक वे अंग्रेज़ बन बैठे । हम वर्तमान ज़माने के व्यवसाय से अनभिज्ञ ठहरे । ज़रा यूरोप का उद्योग तो देखो हमारे रेशम उठाकर यूरोप ले जाते हैं और क़ालीन बनाकर हम को ही भारी मूल्यों पर बेचते हैं । कच्चे माल को जीवन से जुड़ी आवश्यकताओं के लिए उत्पादों में बदलना अर्थव्यवस्था के लिए बहुत ही ज़रूरी है ।

1910 ई० की डायरी में कहीं-कहीं इशारे मिलते हैं जिससे अंदाज़ा होता है कि इक़बाल स्वीकार करते हैं कि यहूदी सभ्यता ने विश्व स्तर पर व्यापार को विकसित करके मानवता की सेवा की है । इक़बाल की नज़र में मानव सभ्यता के विकास की निर्भरता माल, मंडी और उपभोग के संतुलन पर है । आवश्यकता और उपलब्धता को वैश्विक प्राकृतिक व्यवस्था के अधीन होना चाहिए और उन नियमों का पाबन्द होना भी ज़रूरी है, जो अर्थव्यवस्था के नैतिक नियम हैं, जिनमें ज़माख़ोरी पर प्रतिबंध अनिवार्य है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के चरित्र का आरंभ ही व्यापार से होता है । जिसमें मेहनत व मशक़्क़त के साथ ईमानदारी और लेन-देन का शिष्टाचार भी शामिल है ।

व्यापार को पसन्दीदा पेशा ही नहीं जीविकोपार्जन का सर्वोत्तम माध्यम ठहराया गया है । इस्लामी धर्मदर्शन में इसके विभिन्न पहलुओं पर जिस विस्तार से चर्चा की गयी है वह एक मिसाल है । कलामे इक़बाल में जगह-जगह इन सिद्धांतों का उल्लेख है ।

ये मुद्दे इक़बाल के चिंतन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । लगभग सभी संग्रह में किसी न किसी शीर्षक से सामने आते हैं । 'बांगे दरा' के ज़रीफ़ाना कलाम को हास्य व्यंग्य समझ कर अनदेखा न करें–

चट्टे-बट्टे एक ही थैली के हैं
साहूकारी, बिसवादारी, सलतनत

और यह बिसवादार बेज़हमत
पी गया सब लहू आसामी का ।

तकरार थी मज़ारे व मालिक में एक रोज़
दोनों यह कह रहे थे मेरा माल है ज़मीन
कहता था वह करे जो ज़राअत उसी का खेत
कहता था यह कि अक़्ल ठिकाने नहीं तेरी

मालिक है या माज़ारे शोरीदा हाल है
जो ज़ेरे आसमां है वह धरती का माल है ।

'बाले जिबरील' की नज़्म अर्ज़ुल्लाह भी हमारे सामने है–

है ख़ुदा की यह ज़मीं, तेरी नहीं, तेरी नहीं
तेरे आबा की नहीं, तेरी नहीं, मेरी नहीं ।

जीविकोपार्जन और मेहनत के प्रतिफल में रुकावट डालने वाली हर शक्ति के ख़िलाफ़ युद्ध के लिए तैयार होना भी अनिवार्य है । इस बग़ावत में इक़बाल का कोई समकक्ष नहीं । ऐसी प्रेरणा दिलाने वाली जोशीली आवाज़ उर्दू क्या पूरे इतिहास में नहीं मिलती, जिसे ख़ुदा का फ़रमान कहकर पेश किया गया हो ।

रूसी क्रांति ने इक़बाल को एक नया चिंतन दिया था । भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पहले इक़बाल ने ही इस क्रांति का स्वागत किया था । 1933 ई० की नज़्म 'ख़िज़्रे राह' आपके सामने है । उर्दू में पूंजी और श्रम के संघर्ष का यह विश्व दर्पण है । यह अर्थ और यह शैली उर्दू को इक़बाल ने ही दिया–

दस्ते दौलत आफ़रीं को मज़्द यूं मिली रही
अहले सरवत जैसे देते हैं ग़रीबों को ज़कात

मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सर्मायादार
इन्तिहा-ए-सादगी में खा गया मज़दूर मात ।

पीड़ित के समर्थन और अत्याचार के विरोध में ऐसा क्रांतिकारी स्वर इक़बाल के सिवा कहीं और सुनायी नहीं देता । समानता के दर्शन के जनक अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद शेतों और महलों को जलाकर राख कर देने के साहस से भयभीत थे । ऐसा विरोधी स्वर साम्यवाद के पितामह की गोद में भी नहीं पनप सका । इक़बाल के कटु आलोचक मजनूं गोरखपुरी भी स्वीकार करते हैं कि मार्क्स और ऐंजिंस भी इससे बेहतर क्रांतिकारी नारा नहीं दे सके । दुनिया के सभी क्रांतिकारी स्वरों में इससे ज़्यादा तेज़ आवाज़ मौजूद नहीं ।

अल्लामा इक़बाल की मृत्यु के बाद प्रकाशित होने वाले उनके काव्य संग्रह 'आर्युग़ाने हिजाज़' के अंतिम भाग में मुल्लाज़ाद ज़ैग़म लौलाबी कश्मीरी के हवाले से जांबाज़ी और जांफ़रोशी की दर्सियात में पिछड़ापन ईराने सग़ीर की ग़रीबी और आर्थिक शोषण का मार्मिक उल्लेख मौजूद है । यह 1937 ई० की रचना है । वह रोगशैया पर हैं । रोग मौत के फ़रिश्ते को आमंत्रित कर चुका है । अंतिम क्षणों में भी वह रोटी से वंचित इन्सानों के दुख से ग़ाफ़िल नहीं हैं ।

उम्र के साथ-साथ उनके चिंतन में भी परिपक्वता आती गयी । रोज़गार और अर्थ के मुद्दे ने और अधिक ध्यानाकर्षण की अपेक्षा की और इक़बाल की चिंता का प्रत्येक कोण गंभीर समाधान के लिए मजबूर होता गया । मृत्यु से एक वर्ष पूर्व का आलेख भी बताता है कि वे राजनैतिक स्तर पर भी मानव स्थायित्व के इन गंभीर पहलुओं पर चिंतित थे । क़ाइदे आज़म मुहम्मद अली जिनाह को लिखते हैं-

"रोटी की समस्या दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है । मुसलमान महसूस कर रहा है कि गत दो वर्षों से उसकी हालत निरंतर गिरती जा रही है । अतः प्रश्न उठता है कि मुसलमानों को ग़रीबी से कैसे छुटकारा दिलाया जा सकता है । मुस्लिम लीग का भविष्य इस बात पर टिका हुआ है कि वह मुसलमानों को ग़रीबी से छुटकारा दिलाने के लिए क्या प्रयास करती है ।"

इसी पत्र में आगे लिखा है-"इस्लामी शरीअत के गहरी और दीर्घ अध्ययन के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इस्लामी नियमों को समझा और लागू किया जाए तो हर व्यक्ति जीविकोपार्जन की ओर से निश्चित हो सकता है ।"

मुहम्मद इक़बाल
(लाहौर 28 मई 1937 ई०)

राग़िब साहब के नाम एक लंबे पत्र में इक़बाल लिखते हैं-"कुरआन मजीद में तो अर्ज़ (धरती) के बारे में कई बार आया है-अल अर्ज़ुल्लाह (अर्थात, अल्लाह की धरती) हज़रत आदम से भी यही कहा गया है कि तुम्हारे लिए धरती रहने और लाभ उठाने की चीज़ है । इस्लाम के अनुसार स्वामित्व केवल अल्लाह है । यही वह हिन्दु है इस्लाम का जिसे मुसोलिनी ने ख़ूब समझा है । संभवतः इमाम अबू यूसुफ़ से अब्बासी खुलीफ़ाओं में से किसी ने ज़मीन के स्वामित्व के बारे में फ़त्वा पूछा था तो उन्होंने यह कहा था कि ज़मीन उसकी है जो इसे जीवित रख सके । इससे स्पष्ट है कि ज़मीन का स्वामी इमाम के अनुसार वही है जो अपनी मेहनत से उसे जोतता है, न कि वह व्यक्ति जो घर में बैठा बटाई लेता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने तो पशुओं पर भी स्नेह किया है और आदेश दिया है कि चराहगाहें अल्लाह और उसके रसूल की मिल्कियत हैं, किसी व्यक्ति की निजी संपत्ति नहीं ।

कुछ हदीसों में दो मंज़िला मकान बनवाने से भी मना किया गया है । निष्कर्ष यह कि इस विषय में बहस और रिसर्च की आवश्यकता है । इस पर आज तक किसी ने नहीं लिखा । मुसलमान उलमा अपनी ग़फ़लत से इस्लामी अक़ीदो पर वाद-विवाद करते रहे और इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था की ओर किसी ने (शायद सिवाय वलीउल्लाह के) ध्यान नहीं दिया । अब इस ज़माने में इस्लामी सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता है क्योंकि लोग वर्तमान समय के आर्थिक प्रश्नों के कारण जीवन के बाद के अक़ीदे में रुचि नहीं रखते । मज़हब की हैसियत से इस्लाम की सफलता इस पर निर्भर है कि उसकी सामाजिक व्यवस्था की उत्कृष्टता वर्तमान समय की व्यवस्थाओं पर साबित की जाए ।

यूरोप और इस्लाम का वैमनस्य हमेशा रहा है, मगर

इससे पहले इसका चरम बिन्दु क्रूसेड वार था, अब यूरोप और इस्लाम का युद्ध तलवारों का नहीं बल्कि सामाजिक व्यवस्थाओं का होगा । अर्थात फासीवाद बोलशेविज़्म और इस्लाम मानसिक मैदान पर युद्धरत होंगे । मुसलमानों में तो इस समय इस मतलब के आदमी मौजूद नहीं, क्या आश्चर्य कि यूरोप के चिंतक स्वयं उस व्यवस्था तक पहुंच जाएं । यह बहुत कठिन काम है, क्योंकि इस्लाम पर आरंभिक दिनों से ही मजूसियत और यहूदियत हावी हो गयी अर्थात इस्लाम के वास्तविक सिद्धांतों का यहूदी और मजूसी सिद्धांतों ने जनसामान्य की निगाहों से छिपा लिया । मेरी राय तो यह है कि इस्लाम आज तक पूरी तरह खुलकर सामने नहीं आया ।

अफ़सोस है कि बीमारी के कारण मैं आपको लंबा पत्र नहीं लिख सकता, जो कुछ मैंने लिखा है वह मात्र संकेत हैं, अगर आप सामने होते तो उनकी व्याख्या ज़ुबानी आपको सुनाता । 'जावेदनामा' में कई स्थानों पर इस विषय के विभिन्न पहलू आये हैं उसे आरंभ से अंत तक फिर पढ़िए । आपकी जानकारी के लिए यह भी लिख देता हूं कि क़ुरआन ने संपत्ति के विभाजन के लिए जो नियम दिया है वह मेरी राय में ज़मीन पर लागू नहीं होता । यह नियम केवल चल संपत्ति के लिए है, मगर उलमा की राय अलग है और मुसलमानों की प्रैक्टिस भी इस बारे में जैसा कि आपको मालूम है भिन्न है ।

मुहम्मद इक़बाल

लाहौर, 11 दिसम्बर 1934 ई॰

इक़बाल की मशहूर नज़्में ''अल-अर्ज़ुल्लाह' और 'अल-मिल्कुल्लाह' की व्याख्या इस पत्र में मौजूद है और इक़बाल की आर्थिक विचारधारा की रूपरेखा भी यहां मौजूद है । यहां इस्लामी व्यवस्था के संपत्ति विभाजन का समाधान भी दिखाई पड़ता है । अल्लामा इक़बाल के चिंतन का स्रोत भी क़ुरआन है–

क़ुरआन में हो ग़ोताज़न ए मर्दे मुसलमां
अल्लाह करे तुझको अता जज़्बा-ए किरदार
जो हर्फ़े क़ुलिल अफ़्व में पोशीदा है अब तक
इस दौर में शायद वह हक़ीक़त हो नमूदार ।

क़ुरआन में ज़ोर देकर कहा गया है कि प्यारी से प्यारी चीज़ को सत्यमार्ग में ख़र्च किये बिना नेकी हासिल नहीं की जा सकती और प्यारी से प्यारी चीज़ का ज्ञान उस सर्वज्ञ को है । प्यारी चीज़ में सबसे ऊपर जान और माल है । इक़बाल कहते हैं कि अगर आयत पर मन-मस्तिष्क ठहर जाए तो माल में स्वाभाविक रूप से वृद्धि होगी और धन का लालच भी नहीं होगा ।

दुनिया की दूसरी सारी अर्थव्यवस्थाओं में मानव कल्याण की यह तरकीब नहीं मिलती । अर्थशास्त्र के पितामह द्वारा स्थापित साम्यवादी समानता की व्यवस्था भी रेत का महल सिद्ध हुई, इसको ढह जाने में पलक झपकने का समय भी नहीं लगा । ''इबलीस की मजलिस शूरा', ''लेनिन खुदा के हुज़ूर'' के अलावा दूसरी नज़्मों में इस खोखली व्यवस्था के शिक्षाप्रद अंत का उल्लेख मौजूद है ।

यहूदी अर्थव्यवस्था कमज़ोरों से छीनी गयी रोटी पर टिकी है । ग़रीबों के शरीर से निकाले गये ख़ुन से बैंकों का निर्माण हुआ है । पश्चिम का वित्तीय व्यवसाय अभावग्रस्त लोगों से छीनी गयी जीविका का ऋणी है । इक़बाल ने 100 वर्ष पूर्व ही यह विचार प्रस्तुत किया था कि फिरंगियों की जान यहूदियों के पंजे में है । राजनैतिक या सांस्कृतिक रणनीति से अलग विश्व की अर्थव्यवस्था आज यहूदियों की शिकंजे में कराह रही है । गिरजों से बढ़कर बैंकों के भवन भव्य और उज्ज्वल है । ब्याज पर आधारित अर्थव्यवस्था ही हमारी ज़ीवन रेखा बन चुकी है । सोने-चांदी की लालच में डूबे हुए इन्सानों से मानवता की भलाई की कोई अपेक्षा नहीं है । आर्थिक विचारधाराओं के बारे में अपनी शायरी में दिये गये संकेतों से अलग इक़बाल के दोटूक और स्पष्ट बयान भी बहुत महत्वपूर्ण है । पंजाब एसेम्बली में तक़रीर करते हुए उन्होंने बड़े ज़ोरदार अंदाज़ में अपने विचार प्रस्तुत किये । इक़बाल ने कृषि क्रांति के साथ-साथ औद्योगिक विकास में क्रांति लाने का भी सुझाव दिया ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

एक ही जगह दो अनुभव

■ जयप्रकाश बाल्मीकि
(जयपुर, राज०)

मैं जयपुर के एक सरकारी अस्पताल में मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा वितरण योजना के तहत दवा लेने के लिए एक विंडो की पंक्ति में लगा हुआ था । मुझ से आगे एक बुजुर्ग पेंशनर डायरी से दवा ले रहे थे । दवा देने वाला उसकी डायरी देखकर कह रहा था 'बाऊजी हज़ार-हज़ार एम०जी० की दवा, बाप रे 'बुजुर्ग बोले–'क्या करें भाई, पत्नी की हालत ठीक नहीं है ।' उसे डायबिटीज़, थायराइड जैसी बीमारियां हैं । ऊपर से किडनी भी नहीं है । एक है । पता नहीं जी कैसे रही है । हाईडोज दवा के बिना आराम ही नहीं आता । दवा देने वाला उनकी बात से सहमत होते हुए बोला–वास्तव में आपकी परेशानी गंभीर है । पर आप भी काफ़ी बुजुर्ग हैं । किसी को साथ ले आया करो । इतनी लंबी लाइन में लगते हो । प्रत्युत्तर में बुजुर्ग ने कहा–''क्या करूं बाबू, औलाद है नहीं, किसे साथ लाऊ ?'' फिर उन्होंने दवा समेटी और छड़ी के सहारे धीरे-धीरे अपनी राह ली ।

दूसरी तरफ़ महिलाओं की पंक्ति में भी एक बुजुर्ग महिला बैठी । कह रही थी । ''मेरी बारी आये तो बता देना ।'' पर कोई महिला उसकी बात पर ध्यान नहीं दे रही थी और तो और उस वृद्धा की बारी को लांघ कर दूसरी महिलाएं दवा लेकर जा रही थी । मैंने जब यह देखा तो मैंने उससे पर्ची लेकर ले ली और अपनी पर्ची के साथ उसकी पर्ची की भी दवा लेकर जब मैंने उसे दवा दी तो वह मुझे ढेर सारा आशीर्वाद देती हुई बोली–''बेटा । मेरे भी तीन-तीन बेटे और पोते हैं, पर कोई साथ नहीं आता । कहते हैं–'बुढ़ापा है, बुढ़ापे में यहां-वहां दर्द रहता है । रोज़-रोज़ अस्पतालों में चक्कर लगाएं या काम धंधा देखें ।' मैंने उसे छाया में बिठाया और पूछा–'अब आप घर कैसे जाएंगी ? यह भीषण गर्मी अलग ।' वह बोली–बेटा । उठती-बैठती चली जाऊंगी ।

ख़ैर, उस दिन उस वृद्धा की मामूली-सी सहायता कर मुझे असीम ख़ुशी की जहां अनुभूति हुई, वहीं मुझे उस दिन अस्पताल परिसर में एक ही जगह दो अलग-अलग अनुभव हुए । पहला यह कि जिनकी संतान नहीं होती है, वह इस बात को लेकर दुखी रहते हैं कि काश, उनके कोई बेटा-बेटी होता, तो बुढ़ापे में उसका सहारा बनता तथा जिसकी संतान होती है, वह इस बात को लेकर दुखी है कि बेटे-पोते होने पर भी वह उन सबके बीच अपने जीवन के अंतिम दिनों में उपेक्षित रहने को अभिशप्त है ।

भाषा

न जाने हमारे नीति-निर्णायक निर्धारक
किस दुनिया में रहते हैं विचरते हैं
कि देश की डेढ़ सौ करोड़ जनता के
तथाकथित हित में ऐसे ऊलजलूल
निर्णय करके भोंडा मज़ाक़ करते हैं !
सारी दुनिया आगे का सोच रही है
हम सोलहवीं शताब्दी को निहार रहे हैं ।
संस्कृत को जन-जन की भाषा बनाने का
सपना हक़ीक़त में बदलना चाह रहे हैं !
गत 45 वर्षों में हर 14 सितम्बर को
हिन्दी दिवस मनाने का नाटक करके
और अरबों रुपयों की होली जला कर भी
हम हिन्दी का अपेक्षित प्रचार-प्रसार प्रयोग
सुनिश्चित नहीं कर पाये, अंग्रेज़ी के बढ़ते
फैलाव को नहीं रोक पाये, और अब चले हैं
हम संस्कृत का झंडा उठाकर !
कब होंगे हम व्यावहारिक और बन्द करेंगे
ऐसे नित नये तमाशे ?

ओमप्रकाश बजाज
विजय विला, 166-कालिंदी कुंज,
पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर-452018

बातों बातों में

■ डॉ॰ सलीम ख़ान

(गतांक का शेष)

एंटिन ने अब तीसरी कहानी सुनी तो उसे हंसी आ गयी। उसने पूछा, "यार एक बात बताओ, तुम्हारा संबंध भी फ्रांस से है क्या ?" "नहीं, मैं तो जर्मनी का रहने वाला हूं।" "क्या तुम उस फ्रांसीसी के हत्या की जांच करने केलिए यहां आये हो ?"

उसने कहा, "नहीं, ऐसी बात नहीं है । मैं तो अपने व्यवसाय के सिलसिले में यहां आया हूं। आजकल यह लोग अमेरिका और इंग्लैंड की तुलना में जर्मनी और जापान को प्राथमिकता देने लगे हैं, हमारे लिए कारोबार की नयी संभावनाएं पैदा हो गयी हैं और इसी का फ़ायदा उठाने के लिए मैं यहां आया हूं। अब प्रतिदिन शाम को वक़्त गुज़ारी करने के लिए उस फ्रांसीसी का विषय छिड़ जाता है। आज चौथा दिन है। हो सकता है शाम तक कोई नयी बात सामने आ जाए।" यह कहकर वह क़हक़हा लगाने लगा। एंटिन भी मुस्कुराने लगा। उसके सामने शमीम खड़ा था। सलाम कलाम के बाद दोनों कार मैं बैठ गये और एंटिन ने फ्रांसीसी की हत्या का क़िस्सा छेड़ दिया और शिकायत करते हुए पूछा, "तुमने कहा सब ठीक है, जबकि एक फ्रांसीसी नागरिक जद्दा में क़त्ल कर दिया गया।"

शमीम को हैरानी हुई, "कब, कल ? मैं तो अभी टी॰वी॰ पर समाचार देखकर आ रहा हूं। ऐसी तो कोई ख़बर मेरी नज़रों से नहीं गुज़री।" "यह कल की बात नहीं, 6 हफ़्ते पहले की बात है।" एंटिन ने कहा।

"छह हफ़्ते !" शमीम ने क़हक़हा लगाया, "अगर मैं तुम्हें यह बताता कि पिछले छह हफ़्तों में कितने लोगों की कनाडा में हत्या हुई, तो शायद तुम टोरेंटो के बजाय अंटार्कटिका से रियाज़ आते।" "यार शमीम यह बड़ा गंभीर प्रश्न है और तुम इसे हंसी में उड़ा रहे हो।"

"मैं इसे हंसी में नहीं उड़ा रहा बल्कि मैं तुम से यह कह रहा हूं कि जिस तरह यहां एक फ्रांसीसी की हत्या हुई, उसी प्रकार न जाने कितने विदेशियों का दुनिया भर में क़त्ल हुआ होगा। इसमें बहुत ज़्यादा चिंता करने की बात नहीं है।" "ख़ैर...अब तुम यह बतलाओ कि हम लोग कहां जा रहे हैं ?"

शमीम ने जवाब दिया, "फ़िलहाल हम लोग अपने एक ग्राहक से मिलने जा रहे हैं। यह वही व्यक्ति है जिससे पिछले सप्ताह तुमने फ़ोन पर बात की थी और मिलने का वादा किया था। आज तुम अपना वादा पूरा करने जा रहे हो।" एंटिन शमीम की तरफ़ देखकर मुस्कुराया और कहा, "ज़हे नसीब !"

वे दोनों दस मिनट की देरी से माइकल के पास पहुंचे। वह उन दोनों के स्वागत के लिए तैयार था। तीनों बड़े उत्साह के साथ मिले। माइकलं बड़े शानदार व्यक्तित्व का मालिक था। इससे पहले कि एंटिन अपनी कंपनी का परिचय कराता, माइकल अपने कारनामे बयान करने लगा। उसने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा अमेरिका में व्यतीत किया था। उसे अमेरिका का बहुत अनुभव था, वो एंटिन को अपने अतीत के क़िस्से सुनाने लगा। उसका ख़याल था कि अमेरिका की अदालतों में क़ानूनी कार्यवाही तो होती है मगर न्याय नहीं मिलता। इस बीच एंटिन ने कई बार अपने कारोबार की बात को छेड़ा, मगर हर बार माइकल उसे कहीं और ले जाने में सफल हो गया। अंततः एंटिन ने हथियार डाल दिये और पूछा, "यहां की परिस्थितियां कैसी हैं ?"

माइकल का जवाब था, "अच्छी नहीं हैं। इस ऑफ़िस में तीस अमेरिकी काम करते थे। अब केवल छह रह गये हैं। उनके विचार में अमेरिकी सरकार का यह दावा झूठ है कि तीस हज़ार अमेरिकी यहां कार्यरत हैं। सच तो यह है कि अस्सी प्रतिशत लोग यहां से जा चुके हैं।"

ये सुनकर एंटिन को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "एक बात बताओ, आप यहां कब से हो ?"

"मुझे चार पांच साल हो गये हैं। इस बीच एक बार मैं वापस चला गया था परंतु दो साल पूर्व लौट आया।"

"आश्चर्य की बात है...जब लोग जाने लगे तो तुम लौट आये।" "हां, यही समझ लो।" "तुम्हें डर नहीं लगता !"

"लगता है मगर यह डर तो वहां भी पाया जाता है...मौत का डर। इसलिए मैं सोचता हूं कि मौत अपने समय से

पहले आ नहीं सकती और फिर जब आएगी तो वह आकर ही रहेगी, उसके लिए अमेरिका या सऊदी अरब में कोई फ़र्क़ नहीं है ।'' ''यार, मैं तो तुम्हें वैज्ञानिक समझता था, तुम तो दार्शनिक निकले ।''

''नहीं, यह तत्वविज्ञान नहीं वास्तविकता है ।'' ''अच्छा...तो यह बताओ कि यहां की मूल समस्या क्या है ?''

''यहां की समस्या यह है कि जनता के मन में अपनी धार्मिक आस्था से बहुत प्रेम है और अमेरिका को वह अपने धर्म का शत्रु समझते हैं । अमेरिकी सरकार अपनी बातों और कर्मों से इनके विश्वास में वृद्धि करती रहती है । अब यह लोग अमेरिका नवाज़ हुक्मरानों को भी अपना दुश्मन समझने लगे हैं । इसके अतिरिक्त उनकी ये धारणा भी है कि सत्ताधारी परिवार भी अपने धर्म से काफ़ी दूर हो चुका है । ये उनकी अपनी समस्याएं हैं, जिनमें वो जूझते रहते हैं । हम अपने निहित स्वार्थ की ख़ातिर सरकार की सुरक्षा पर तैनात हैं जिससे जनता का आक्रोश हमारी ओर आ जाता है । इस प्रकार एक चक्रव्यूह में हम सब उलझ के रह गये हैं ।

माइकल की बात एंटिन के सर से गुज़र गयी । बात बदलते हुए उसने प्रश्न किया, ''लेकिन वह फ्रांसीसी, जिसे जद्दा में क़त्ल कर दिया गया था, उसके विषय में तुम क्या सोचते हो ?'' माइकल ने जवाब दिया, ''मैं अपना विचार क्या बताऊं ? हमारे फ़िलिपाइनी सेक्रेट्री का ख़याल बताता हूं जो मुझे बहुत हद तक उचित लगता है ।''

''वो क्या है ?''

''जिस दिन उस फ्रांसीसी की हत्या हुई, मैंने अपने फ़िलिपाइनी सेक्रेट्री से पूछा तो वह बोला, ''हर रोज़ दुनिया में सैकड़ों लोगों को यूरोपियन और अमेरिकी मौत के घाट उतार देते हैं, लेकिन उनकी चिंता किसी को नहीं होती । बस एक आधा अंग्रेज़ कहीं मारा जाए तो भूचाल आ जाता है ।'' सेक्रेट्री के इस उत्तर ने मेरी विचारधारा को बदल दिया ।''

शाम को एंटिन और शमीम को जद्दा जाना था । जिस समय ये लोग अपना सामान चेक इन करा रहे थे, अचानक किसी ने ज़ोरदार अंदाज़ में शमीम की पीठ को थपथपाया । पीछे मुड़कर देखने पर पता चला कि वह उसका पुराना मित्र मनोरंजन भारती था । काला चश्मा, फ्रेंच कट दाढ़ी, सर पर अरबों की तरह का साफ़ा, हर चीज़ अरबों जैसी थी । शमीम ने फिर भी उसे पहचान लिया ।

''ओह मन्नू, क्या बात है...तुम तो बिल्कुल लॉरेंस ऑफ़ अरेबिया बने हुए हो ? ख़ैरियत तो है ?''

''यार तुम तो दूरदर्शन पर दूर से दर्शन दिया करते थे । अब यहां कहां पहुंच गये ?''

''बात दरअस्ल यह है कि फ़िलहाल सी॰एन॰एन॰ के लिए काम कर रहा हूं । 9/11 के बाद एक-एक करके उनके अंग्रेज़ संवाददाता मध्य एशिया से रफ़ू चक्कर होने लगे, फिर उन लोगों ने कुछ नये रंगरूट भर्ती किये । पिछले एक साल के धमाकों ने इन्हें भी फ़रार होने पर मजबूर कर दिया । वैसे आम आदमी तो अपने आपको छुपा लेता है, लेकिन टी॰वी॰ के पत्रकार के लिए, जिसे लोग निरंतर टी॰वी॰ पर देखते हों, ये कैसे संभव है ? इसलिए वो बेचारे यहां रुक न सके । फिर सी॰एन॰एन॰ नयी भर्ती शुरू की तो मेरे भाग्य भी खुल गये । दूरदर्शन में वेतन रुपयों में मिलता था, यहां डॉलर में मिलता है और उस पर टैक्स भी नहीं लगता ।'' ''ओह...तब तो यह कहना पड़ेगा कि इस ख़राब परिस्थिति ने तुम्हारा भला कर दिया ?''

फ्लाइट की घोषणा हो चुकी थी । यात्री जहाज़ की तरफ़ चलने लगे । मनोरंजन कुछ ही मिन्टों में ऐसा घुल मिल गया कि एंटिन और शमीम ने उसे अपने बीच में बैठा लिया । जहाज़ में बैठने के बाद एंटिन ने कहा, ''एक युग था जब पत्रकार खोजकर ख़बर लाते थे । आजकल तो वो ख़बर बनाने लगे हैं । न्यूज़ प्रोवाईडर से न्यूज़ मेकर बन गये हैं । यह चमत्कार कैसे हो गया ?''

इस प्रश्न पर मनोरंजन गंभीर हो गया । उसने कहा, ''यह कलयुग की विशेषता है । पहले ख़बरे देना सरकार का कर्तव्य था । किसी और को इसकी अनुमति नहीं थी । इस क्षेत्र में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी । सरकार के पास न सूत्रों की कोई कमी थी और न संसाधनों की । इन चीज़ों ने टी॰वी॰ के पत्रकारों की योग्यता को बांझ कर दिया था । लेकिन जब निजी चैनल आ गये तो उनके लिए विज्ञापन सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो गये और विज्ञापनों के लिए दर्शकों की संख्या पर निर्भरता अनिवार्य हो गयी । विभिन्न चैनलों के बीच कम्पटीशन शुरू हो गया । उसने पत्रकारों को पटकथा लेखक बना दिया और न्यूज़ रीडर को न्यूज़ मेकर बना दिया ।'' ''भई बात तो तुम्हारी ठीक प्रतीत होती है ।'' शमीम बोला–एंटिन ने गंभीरता से बातचीत को आगे बढ़ाते हुए पूछा, ''पुरानी पत्रकारिता और नयी पत्रकारिता में क्या अंन्तर है ?''

मनोरंजन ने कहा, ''अगर एक वाक्य में कहा जाए तो

पहले हम समाचार के पीछे भागते थे, अब हम ख़बरों के आगे या साथ-साथ होते हैं।'' ''आगे...? क्या मतलब ? क्या तुम लोगों को भविष्यवाणी हो जाती है ?''

''भविष्यवाणी तो नहीं होती मगर कुछ अनुमान अवश्य हो जाता है। कल कौन-सी ख़बर मुख्य हो सकती है, इसका ठीक-ठीक अंदाज़ा जो पत्रकार लगा लेता है और उसकी तैयारी कर लेता है, वह सफल हो जाता है और जो ऐसा नहीं कर पाता उसके हिस्से में विफलता आती है।''

''तुम्हारी दूसरी बात भी सही लगती है। ख़ैर...अब ये बताओ कि कल की मुख्य ख़बर क्या होगी ?'' एंटिन ने सवाल किया।

मनोरंजन ने कुछ सोचकर कहा, ''मैं अन्तर्यामी तो नहीं हूं लेकिन हमारी इच्छा और अपेक्षा है कि कल का मुख्य समाचार हामिद करज़ई की सरकार का गठन हो।''

जद्दा में एंटिन और शमीम के अलग-अलग काम थे। लेकिन अगले दिन उन दोनों को साथ में याम्बू जाना था। शमीम उस दिन एक विशेष कान से एंटिन को जद्दा में अकेला छोड़कर जद्दा से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर राबेग़ चला गया और एंटिन एक ग्राहक से मिलने जद्दा शहर में रह गया। दोपहर को वापस होटल आने के बाद एंटिन को अपने एक पुराने मित्र का फ़ोन मिला जिसका नाम डॉक्टर तल्हा था। उन्होंने बताया कि उनके ऑफ़िस के सामने ही अमेरिकी दूतावास है जिस पर हमला कर दिया गया है। इमारत से शोले उठ रहे हैं, गोलियों के चलने की आवाज़ें आ रही हैं। सुना है हमला करने वालों ने कुछ लोगों को बन्दी बना लिया है। इस ख़बर के सुनते ही एंटिन के पैरों तले से ज़मीन खिसक गयी। उसने अपने कमरे में आकर टी०वी० चला दिया। सी०एन०एन० पर वही मनोरंजन भारती दूतावास के बाहर खड़ा डॉक्टर तल्हा की सारी बातों की पुष्टि कर रहा था। एंटिन तो बिल्कुल बौखला गया और तुरंत अपना कार्यक्रम बदल दिया। उसी रात उसने जद्दा से वापस लंदन जाने का प्रोग्राम बना लिया। शमीम को इन सब बातों का पता ही नहीं था। जब एंटिन ने उसे यह बताया तो वह भी हैरान रह गया मगर अब कोई कुछ नहीं कर सकता था। उसने एंटिन से कहा कि वह न घबराए, होटल में प्रतिक्षा करे, जल्दी ही वह उसके पास पहुंच जाएगा।

होटल में एंटिन बहुत व्याकुल था। वह कह रहा था, ''यह क्या पागलपन है ? मुझे पहले ही पता था दुनिया के इस हिस्से में यही सब होता है। ख़ैर मुझ ही से चूक हो गयी जो मैं चला आया। इसके लिए मैं खुद दोषी हूं। मैं फिर कभी यहां आने की कोशिश नहीं करूंगा।'' लंदन की फ्लाइट जब हवा में उड़ गयी तो एंटिन की जान में जान आयी। अब उसने आसपास देखा तो अपने बग़ल में उसे एक नवजवान दिखायी पड़ा।

उस युवक ने एंटिन को सलाम किया और फिर पूछा, ''आप कहां जा रहे हैं ?''

एंटिन, जो काफ़ी देर से ख़ामोश था, एक दम फट पड़ा। उसने बताया कि उसे दो दिन और सऊदी अरब में गुज़ारने थे परंतु इस हमले के बाद अपने सारे कार्यक्रम निर्लंबित करके वो लंदन जा रहा है और वहां दो रोज़ रहकर अपने देश कनाडा के लिए रवाना हो जाएगा। इस ख़तरनाक दुनिया से निकलकर एक सुरक्षित ठिकाने पर चला जाएगा।''

एंटिन के बग़ल में बैठा हुआ युवक मुस्कुराया और उसने पूछा, 'तुम तो सुरक्षित ठिकाने पर पहुंच जाओगे, मगर हम कहां जाएं ?'' ''क्या मतलब ?'' एंटिन ने पूछा।

वह बोला ? ''मैं एक फ़िलिस्तीनी हूं। मेरे पिता इसराईली हमले में शहीद कर दिये गये। मेरी बेसहारा मां अपने भाई के पास सऊदी अरब आ गयी। मैंने होश संभालने के बाद अपने माता-पिता के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए दोबारा फ़िलिस्तीन जाने का फ़ैसला किया तो मेरी मां ने मुझे मना कर दिया। मैंने समझा कि मेरी मां डर गयी है। मैंने उसे समझाने का प्रयत्न किया तो वह बोली, 'बेटा इसराईल तो मात्र एक डाली है, फ़ितने की अस्ल जड़ तो अमेरिका है जिसने न केवल फ़िलिस्तीन, बल्कि इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान समेत विश्व भर को नरक बना रखा है। जिसके इरादे न ईरान के बारे में ठीक हैं और न सीरिया के बारे में, जो सूडान को भी निशाना बना सकता है और लिबनान को भी। इसलिए हम किसी भी जगह सुरक्षित नहीं हैं। तुम तो अपने सुरक्षित स्थान पर चले जाओगे, लेकिन हम कहां जाएंगे।'' इस सवाल का एंटिन के पास कोई जवाब नहीं था। उसने कहा, ''ये तो ठीक है लेकिन तुम भी तो शांति और सुरक्षा के लिए ब्रिटेन जा ही रहे हो।''

''नहीं...मैं जानता हूं कि अमेरिका और ब्रिटेन भी हमारे लिए सुरक्षित नहीं हैं। वहां भी मासूम लोगों को दहशतगर्द कहकर भून दिया जाता है। लेकिन फिर भी मैं वहां जा रहा हूं ताकि लोगों को अपनी लेखनी से सुरक्षा व शांति का अर्थ समझाऊं और बतलाऊं कि अगर अपनी सुरक्षा चाहते हो तो दूसरों की शांति से खिलवाड़ न करो।

क़ानून और सच्चाई

एक युवक ने किसी सेठजी से पांच हज़ार रुपये क़र्ज़ लेकर क़ानून की पढ़ाई शुय कर दी । जब वह युवक समय पर क़र्ज़ अदा नहीं कर सका तो सेठजी ने मुक़दमा कर रुपये वसूलने की उसे धमकी दी ।

युवक ने सेठजी से विनम्र होकर कहा, 'आप ऐसा न करें ।' ज्यों ही रुपये मेरे हाथ में आएंगे, मैं आपसे लिए रुपये तुरंत लौटा दूंगा ।'

सेठजी ने युवक की बात नहीं मानी और उसके ख़िलाफ़ मुक़दमा दायर कर ही दिया । लाचार हो अपने पक्ष का मुक़दमा युवक ने स्वयं लड़ा और आख़िर में उसकी जीत भी हो गयी ।

मुक़दमा हार कर सेठजी पछताने लगे ।

कुछ दिनों के बाद वह युवक फिर सेठजी के पास आ धमका और बोला, "सेठजी, क़ानून की नज़र में आप भले ही मुक़दमा हार गये हैं, पर सच्चाई यह है कि मैं अभी भी आपका क़र्ज़दार हूं । आज मैं अपना क़र्ज़ चुकाकर अपना फ़र्ज़ पूरा करने आया हूं । मैंने अपनी नीयत ठीक रखी है । गिन लीजिए अपने रुपये", कहकर युवक ने रुपयों से भरी थैली सेठजी के आगे बढ़ा दी ।

सेठजी ने रुपये गिने । सेठजी इतना ही बोले, "ठीक है ।"

युवक अगले ही क्षण वहां से चलता बना और सेठजी अजीब निगाह से उसे जाते हुए देखते रहे ।

● राधेलाल 'नवचक्र'

व्यावहारिक बुद्धि

एक व्यक्ति को अपने खेतों की सिंचाई करनी थी अत: उसने भी अपने पड़ोसियों की तरह एक कुआं खोदने का निश्चय किया । एक उपयुक्त स्थान देखकर उसने खोदाई शुरू कर दी लेकिन जब दस-बारह फुट गहरा गड्ढ़ा खोदने के बाद भी पानी नहीं निकला तो उदास होकर बैठ गया । उसे उदास बैठे देख वहां से गुज़रने वाले एक राहगीर ने उसे कुछ दूर अन्य स्थान पर कुआं खोदने का परामर्श दिया । अब इस व्यक्ति ने नये स्थान पर खोदाई शुरू कर दी लेकिन दस-बारह फुट तो क्या पन्द्रह फुट खोदाई के बाद भी पानी के दर्शन नहीं हुए । तभी एक अन्य व्यक्ति का वहां से गुज़रना हुआ और उसने भी इस व्यक्ति को किसी अन्य स्थान पर खोदाई करने की सलाह दी । अब ये व्यक्ति तीसरे स्थान पर खोदाई करने में जुट गया और बीस फुट गहरा गड्ढ़ा खोद डाला लेकिन पानी तक भी नदारद था ।

उसकी परेशानी भांप कर पास से गुज़रने वाले एक और व्यक्ति ने मशविरा दिया कि वर्तमान जगह से बीस फुट की दूरी पर कुआं खोदोगे तो पानी अवश्य मिल जाएगा । इस व्यक्ति की हिम्मत जवाब दे चुकी थी अत: फावड़ा एक ओर फेंक आराम से बैठ गया और कुछ सोचने लगा । उसने आसपास के कुओं के बारे में सोचना प्रारंभ किया तो उसके दिमाग़ में एक बात कौंधी ।

उसने अपनी बुद्धि पर ज़ोर डाला तो उसे याद आया कि आसपास के सभी कुएं पच्चीस से तीस फुट गहरे हैं ।

उसने फ़ौरन फावड़ा उठाया और बीस फुट गहरे खोदे गये गड्ढ़े को और गहरा करने लगा । दो-तीन फुट और खोदने पर ही पानी के स्रोत दिखलायी पड़ने लगे और थोड़ा और खोदने पर कुआं पानी से भरने लगा ।

सफलता के लिए केवल परिश्रम ही नहीं अपितु व्यावहारिक बुद्धि का उपयोग और एक ही लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ना भी अनिवार्य है ।

सीताराम गुप्ता
ए॰डी॰ 106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-34

स्टेटस

भाई साहब पसोपेश में हैं । न उगलते बन पा रहा है न निगलते । चार महीने पहले बेटी का रिश्ता गुप्ता जी के बेटे से किया था । दान-दहेज लेन-देन सब तय हो गया था । बारात में अधिक से अधिक 500 लोग आएंगे यह भी तय हुआ था । 15 दिन बाद विवाह का महूर्त है ।

अभी-अभी गुप्ता जी ने कहलवाया है कि अब वह कम से कम 5000 बाराती लाएंगे क्योंकि कल स्थानीय नगर निगम का पार्षद चुने जाने से समाज में उनका स्टेटस बढ़ गया है ।

ओमप्रकाश बजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर

उपन्यासकार सुषम बेदी से साक्षात्कार

'लेखन में इस बात के प्रति सावधानी बरतें कि क्या न लिखा जाए'

पंजाब के फ़िरोज़पुर में जन्मी लेखिका सुषम बेदी जी दिल्ली विश्वविद्यालय व पंजाब विश्वविद्यालय के बाद वर्तमान में न्यूयार्क के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अध्यापन के साथ-साथ लेखन में कार्यरत हैं । अब तक सुषम जी के आठ उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं । इसके साथ ही साथ इनके उपन्यासों के अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं जैसे फ्रेंच, अंग्रेज़ी, उर्दू, उड़िया, गुजराती व पंजाबी में भी हो चुके हैं । इनकी रचनाएं विविध प्रतिष्ठित पत्रिकाओं जैसे हंस, धर्म युग, सारिका व नया ज्ञानोदय में छप चुकी हैं । इनके साहित्यिक योगदान को देखते हुए इन्हें भारतीय साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश हिन्दी अकादमी इत्यादि की ओर से सम्मानित किया जा चुका है । प्रस्तुत है सुषम बेदी जी से की गयी डॉ॰ प्रीत अरोड़ा की विशेष बातचीत–

प्रश्न : आपके लेखन की शुरुआत कैसे और कब हुई और आपका प्रेरणा स्रोत कौन है ?

उत्तर : मुझे लगता है कि लेखिका होने का मेरा संबंध उम्र के उस पड़ाव से है, जब अपने होने के प्रति चेतना जगती है । यूं मेरा बचपन भी वैसा था कि होनहार बच्ची को देखकर कहा जाए कि यह बड़ी होकर डॉक्टर बनेगी । मेरी क्लास टीचर ने मुझे लाइब्रेरी से शरतचंद्र और टैगोर के अलावा चतुर सेन शास्त्री का 'वैशाली की नगरवधू' जैसे बड़े-बड़े उपन्यास दिलवाये जो मैं ख़ाली समय में पढ़ती थी । जब नवीं जमाअत में पहुंचीं और एक ओर अंग्रेज़ी के कवि वर्ड्सवर्थ, शैली, बायरन और दूसरी ओर हिन्दी के कवियों प्रसाद पंत, महादेवी, निराला, दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिली शरण गुप्त आदि की कविताएं क्लास में पढ़ायी गयी तो मन में बहुत उत्साह और भीतर तक जैसे गुदगुदी-सी मच गयी थी । मैं तब 13 बरस की पूरी हुई थी । तभी मेरा मैं मुझमे जगा था और मैंने पाया कि मैं भी एक कापी में कविताएं लिखने लग गयी थी । ये कविताएं तुकबंदी रही होगी या शायद मन की अस्पष्ट भावनाओं को प्रकट करने के अपरिपक्व प्रयास । यह भी याद है कि आधी छुट्टी में मन में भीतर ऐसा कुछ उमड़-घुमड़ रहा होता कि खाना-पीना भूलकर मैं स्कूल की छत पर कोई अकेला कोना ढूंढ़ अपनी कॉपी में लिखने बैठ जाती । दसवीं में पहुंचते-पहुंचते एक उपन्यास मन में तैयार हो गया था । किसी पर विश्वास भी नहीं जमता था और डर होता कि कहीं कोई खिल्ली न उड़ा दे कि बड़ी चली उपन्यास लिखने । बहुत छिपा-छिपा के रखती बसते में पांडुलिपि को । तब ख़याल भी न रहा होगा कि भविष्य में सचमुच लेखिका बनने के सपने को ही पूरा कर पाऊंगी ।

प्रश्न : लेखन का आपके जीवन में क्या महत्व है ?

उत्तर : मुझे लगता है कि मैं आजकल लिखते हुए भी

लगातार सीख रही हूं। मैं अपनी कहानियां अपने आसपास से उठाती रही हूं। उनमें भी उन सबका योगदान रहा ही जो मेरे आसपास हैं। कभी कुछ ऐसा भी हुआ कि कुछ लोगों को मेरे लिखने पर आपत्ति हुई, लेकिन बहुत स्पष्ट रूप-रेखाएं कभी भी ऐसी नहीं थी कि कोई ख़ुद को उसमें फिट कर पाता। मेरी लेखकीय कल्पना ने ही मेरा बचाव किया। लेखन मेरे लिए अब जीवन का पर्याय बन चुका है। मेरे सुखदतम क्षण वही होते हैं, मैं जब लिख रही होती हूं। जिस दिन अच्छा लिख लेती हूं, बहुत प्रसन्नचित रहती हूं। जब नहीं लिख रही होती तो मन अशांत और उखड़ा रहता है।

प्रश्न : आप किन साहित्यकारों से प्रभावित हुई हैं ?

उत्तर : वे सब लेखक जिनको मैं पढ़ती थी–कामू काफका सात्रर जैसे अस्तित्ववादी या अज्ञेय, निर्मल वर्मा राकेश यादव, कमलेश्वर जैसे मध्य वर्ग की निराशाओं और मोहभंग का अंकन करने वाले। यही कुछ थाती मिली थी मुझे। यही सीख अगर भ्रष्टाचार है तो है, अनाचार है तो है, धांधलेबाज़ी है तो है, कालाबाज़ारी है तो है, शर्मनाक ग़रीबी है तो है, उसे हटाया या मिटाया नहीं जा सकता। उसके आगे आम आदमी लाचार हैं, कुछ नहीं कर सकता। कोई कोशिश करेगा तो वह भी मरेगा। ऐसी लाचारी ही प्रेमचंद के पात्रों में थी। गोदान का होरी हो या कफ़न का घीसू। मोहन राकेश का मलबे का मालिक हो या एक और ज़िन्दगी के केन्द्रीय पात्र, मिस पाल हो या अंधेरे बंद कमरे का हरबंश या नीलिमा, सभी जैसे निराशा और असहायता के अंधेरे बंद कमरों में घुटते हुए रहने को मजबूर हैं। नियति की बेड़ियों में बंधे रहने को मजबूर। कमलेश्वर का 'मॉस' का दरिया या निर्मल वर्मा के 'परिंदे' की लतिका या हरिशंकर परसाई के 'भोलाराम' का जीव–हर तरफ़ बेचारगी का एहसास। इन्सान नियति के हाथों या अपने से ज़्यादा ताक़तवरों के हाथों मार ही खाता है। हर ओर से इन्सानी मजबूरी की कहानियां। यही मेरे समय का, मेरे चेतन का, मेरे किशोर-काल का या कहूं छठे दशक का यथार्थ था। जिन यूरोपीय और अमेरिकी लेखकों को पढ़ा जैसे कि कामू, सात्र, पिंटर, बैके आसबरन, आयनेसको या टेनेसी विलियम्स आदि, उन्होंने भी जीवन की निरर्थकता और हालात के थपेड़ों में चोट खाते इन्सान की लाचारगी को ही रेखांकित किया।

प्रश्न : आप किन महिला रचनाकारों के लेखन से अत्यधिक प्रभावित हुई हैं ?

उत्तर : कृष्णा सोबती के लेखन से मैं बहुत प्रभावित हुई हूं। उन्होंने बहुत पहले से औरत की ज़रूरतों, उसकी आशा, आकांक्षाओं के कहानियों के केन्द्र में रखा है। वे सहज नारी की हमदर्द लेखिका हैं। राजी सेठ के लेखन की बारीकी भी मुझे प्रभावित करती है।

प्रश्न : आपको साहित्य की कौन-सी विधा सर्वाधिक प्रिय है ?

उत्तर : मेरे लिए साहित्य की निकटतम विधा कहानी ही है। कहानी कहने और सुनने में जो एक आदिम तृप्ति है, वह मुझे बहुत मोह लेती है। बचपन में मुझे कहानियां सुनने का बहुत शौक़ था। ख़ूब किताबें पढ़ती थी। अब भी दुनिया भर के लेखकों की कहानियां पढ़ने में सुख मिलता है। यूं जितना चाहती हूं उतना पढ़ नहीं पाती। कहानी या उपन्यास जो कि मेरे लिए पूरा जीवन समेटने वाली या कहूं कि एक बड़े फलक पर लिखी हुई कहानी ही है, हमेशा मेरे लिए बहुत आकर्षक रही है।

प्रश्न : यद्यपि आप पंजाब विश्वविद्यालय में एक सम्मानजनक पद पर अधीनस्थ थीं तथापि आपने इस पद को त्यागकर विदेश-प्रस्थान का विचार क्यों अपनाया ?

उत्तर : मेरे पति का तबादला बरसलस, बेल्जियम हो गया था, सो मुझे जाना ही था। मैं तब शादीशुदा थी। दो बच्चों की मां बन चुकी थी। पति से देर तक दूर रहने का सोच भी नहीं सकती थी। उम्र का यह दौर ऐसा होता है कि तब परिवार सबसे ज़्यादा अहम हो जाता है। यूं परिवार अब भी अहम है, पर तब बच्चों को मां की ज़रूरत रहती थी। अब नहीं। अब मुझको उनकी ज़रूरत महसूस होती है, भावनात्मक स्तर पर।

प्रश्न : विदेश में हिन्दी भाषा का अध्यापन करते समय आपको किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ?

उत्तर : यहां तो सब कुछ ज़ीरों से शुरू करना था। ख़ुद भी भाषा पढ़ाना सीखना था। उत्साह था सो सब कुछ कर पायी। मुश्किल नहीं लगा था। आनंद आता था। कुछ करने की तसल्ली भी मिलती थी। मैंने भाषा सिखाने की विधियों के कोर्स लिए, अनुभव से सीखा और अमेरिकी कौंसिल आन द टीचिंग ऑफ़ फ़ारेन लैंगवेज़ेज़ के साथ सालों जुड़ी रही। कई भाषाएं सिखाने के तरीक़ों को सीखा

और अब अमेरिका में हिन्दी के अध्यापकों को सिखा रही हूं। हर साल बाक़ायदा उनको प्रशिक्षण देती हूं।

प्रश्न : आप पंजाब विश्वविद्यालय व दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन करने के उपरांत अब कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्यापनरत हैं, तो तीनों विश्वविद्यालयों के अध्यापन कार्य में आपका सबसे अच्छा अनुभव कहां रहा है ?

उत्तर : सबसे अच्छा अनुभव कोलंबिया में ही रहा। यहां मेरा अलग दफ़्तर है। कोर्सों के लिए क्या किताबें चुननी हैं, सबमें मेरा अपना चुनाव था। हां शुरू में साहित्य कम पढ़ा पाने का कष्ट होता है, पर भाषा पढ़ाने का भी सुख तो है। ख़ासतौर से जब भाषा से एकदम अनजान छात्र धीरे-धीरे बोलने, लिखने और पढ़ने लगते हैं, तो मन को बहुत तसल्ली मिलती है। जो सीखते-सीखते साहित्य पढ़ने लग जाते, वे छात्र मुझे बहुत प्रिय हो जाते हैं। उनको मैं भूलती भी नहीं। मेरी साहित्य की क्लास के विद्यार्थी मुझे हमेशा बहुत प्रिय रहे हैं। वे हमेशा मेरे लिए ख़ास बने रहते हैं।

प्रश्न : इन तीनों जगह पर आपको हिन्दी-भाषा की स्थिति कैसी लगी ?

उत्तर : हिन्दी भाषा की स्थिति तो भारत में ही सबसे बेहतर होनी चाहिए। मुझे पंजाब यूनीवर्सिटी में एम०ए० के छात्रों को पढ़ाना था। थीसिस का काम भी करवाया। दिल्ली में तो बी०ए० के छात्र थे। कोलंबिया में दोनों तरह के, पर यहां कॉलेज के विद्यार्थियों को हिन्दी शुरू से सिखानी होती है। अधिकतर विद्यार्थी माध्यमिक स्तर से आगे नहीं बढ़ते। यहां सिखानी मूलतः भाषा होती है, साहित्य नहीं।

प्रश्न : हिन्दी के साथ-साथ आप कौन-कौन सी अन्य भाषाओं का भी ज्ञान रखती हैं ?

उत्तर : पंजाबी, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, कुछ गुजराती सीखी थी एम०ए० में संस्कृत भी सीखती रही। ब्रज, अवधी कॉलेज में सीखी अगर इनको अलग मानें तो ?

प्रश्न : आज हिन्दी भाषा को ख़तरा किस बात से है ?

उत्तर : हिन्दी भाषा को ही नहीं, आज विश्व की सभी भाषाओं को अंग्रेज़ी से ख़तरा पैदा हो गया है। यूरोप की जो भाषाएं जैसे फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेज़ी से ज़्यादा महत्व रखती थी, वे भी विश्व के नक़्शे पर गौण होती जा रही हैं। लेकिन यह ख़तरा व्यावसायिक जगत में ज़्यादा है, जहां अंग्रेज़ी का बोलबाला है। अगर हिन्दी भाषा-भाषी अपनी भाषा का दामन स्वयं पकड़े रहेंगे तो भाषा जीवित रहेगी। अगर हिन्दी भाषियों ने ही अंग्रेज़ी को अपनाकर हिन्दी को दोयम दर्जा दे दिया तो उसका उद्धार आसान नहीं होगा। यूं तो हिन्दी को भी बाज़ार में जगह मिली हुई है। अगर हम इस बात के लिए सजग रहें कि साहित्य की ज्योति हमें जलाये रखनी है, तो हिन्दी का लेखक व पाठक मिलकर यह काम भी कर सकते हैं और हिन्दी अपने आपको ख़तरों से बचाए रख सकती है। पर आसान नहीं होगा यह।

प्रश्न : अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताएं ?

उत्तर : औरत के लिए घर ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होता है और घर के कामों, रिश्तेदारों को निभाना, उनके लेखन को बहुत पीछे धकेल देता है। मेरी भी यह कहने की हिम्मत नहीं होती थी कि मुझे लिखना है, ज़्यादातर इधर-उधर से समय चुराकर ही लिखा करती थी मैं। अब अगर खाना न बना पाऊं तो यह कहने की हिम्मत तो रखती हूं कि आज लिखने का मूड बना हुआ था या कुछ पूरा करना था। मैंने अपनी रचना प्रक्रिया पर सृजन की देहरी पर नाम से लेख लिखा है। मेरी निबंधों की किताब समसामयिक प्रकाशन से आ रही है।

प्रश्न : सुषम जी आपका पहला उपन्यास 'हवन' जोकि उर्दू व अंग्रेज़ी में अनुवादित हो चुका है। क्या आप इसे अन्य भाषाओं में जैसे पंजाबी, मराठी इत्यादि में भी अनुवादित करवाने की इच्छा रखती हैं ? पर मुझे मालूम नहीं कि किसकी रुचि होगी अनुवाद करने में ?

उत्तर : मुझे तो अच्छा ही लगेगा अगर इसका ज़्यादा से ज़्यादा भाषाओं में अनुवाद हो और लोगों तक पहुंचे।

प्रश्न : आपका उपन्यास 'मोरचे' आपकी भांजी के संघर्षमयी जीवन की व्यथा-गाथा है, लेकिन अब आपकी भांजी नारी-सशक्तीकरण की मिसाल है, तो क्या अब आप 'मोरचे' का दूसरा भाग लिखना चाहेंगी, जिसमें आपकी भांजी उर्फ़ नायिका का सबल व सशक्त रूप उभर कर सामने आये ?

उत्तर : उपन्यास तो जो मन में बनता है उसी को लिखती हूं। वैसे भी सफलता की कहानियां एक-सी होती है विविधता दुख और पीड़ा में होती है। शायद तालसताय ने कहा है ना।

प्रश्न : 'मैंने नाता तोड़ा' आपका बहुचर्चित उपन्यास

है । इसकी कथा-वस्तु मुख्य रूप से समाज की किस समस्या की ओर इशारा करती है ?

उत्तर : भारत में ही नहीं दुनिया भर में औरत के शरीर को लेकर उसे हर तरह से सहना पड़ा है । घर में अपने ही चाचे-मामे लोभ संवरण नहीं कर पाते । हर घर में ऐसी कहानियां सुनती रही हूं । अमेरिका में तो सौतेला बाप भी लड़की का दुश्मन होता है । घर-घर की कहानी यही है, पर लोग छिपाते फिरते हैं, इसको ज़ाहिर करना ज़रूरी था ।

प्रश्न : आपकी शीघ्र प्रकाश्य 'सड़क की लय' कहानी किस तथ्य पर आधारित है ?

उत्तर : 'सड़क की लय' कहानी 'हंस' में छप चुकी है । यह कहानी यहां बड़ी होने वाली लड़की के मानसिक तनावों की परख करती है । यह भी दर्शाती है कि कैसे भारतीय मां-बाप भी कन्फ्यूज्ड हैं और बेटियों को भी वैसे ही मूल्य देते हैं ।

प्रश्न : सुषम जी स्त्री विमर्श से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : स्त्री विमर्श का सही मतलब स्त्री को समाज के केन्द्र में रखना है । जब तक पुरुषों को केन्द्र में रख समाज के सारे कार्यकलापों, संस्थाओं का संगठन हुआ है, ज़रूरी है । अब औरत को समाज की उतना ही ज़रूरी इकाई मानकर समाज की चर्चा हो । स्वास्थ्य की बात हो, तो स्त्री का स्वास्थ्य समस्यानुशीलन के केन्द्र में हो, स्त्री का महत्व क़ायम हो ।

प्रश्न : आजकल विभिन्न विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों द्वारा आपके साहित्य पर शोध कार्य किये जा रहे हैं । तो आप कैसा महसूस कर रही हैं ?

उत्तर : वह अच्छी बात है कि इस ओर ध्यान दिया जा रहा है, पर इस बात की कमी खलती है कि आलोचना जगत में उनकी कोई चर्चा नहीं । समझ में नहीं आता कि इसकी क्या वजह हो सकती है ? शायद आप लोगों के पास इसका जवाब हो ?

प्रश्न : सुषम जी आप नवयुवकों को क्या संदेश देना चाहेंगी ?

उत्तर : संदेश बस यही है कि लेखन तभी करो, अगर लेखन के बिना जीना अर्थहीन लगे–धन या नाम के लिए नहीं । एक बार प्रतिबद्ध हो जाओ लेखन के प्रति पूरी ईमानदारी से लिखो । जल्दबाज़ी में लिखा कभी दूर तक नहीं जाता । जो लिखा है, उसका आकलन खुद करो और लगे कि तुमने अपना श्रेष्ठतम दिया है तभी उसे छपने के लिए भेजो । एक और बात जो मैंने दूसरों से सीखी वह यह भी कि लिखने से ही हाथ खुलता है, बेहतर लिखा जाता है । लिखने से डरने की भी ज़रूरत नहीं, पर वहीं इस बात का भी ध्यान रखना है कि क्या न लिखा जाए, लेखन में चुनाव की बहुत अहमियत है ।

गीत

आओ हम अधरों पर अपने,
मानवता का गीत लिखें ।

अंधकार तब भाग जाएगा
उजियारा तब जाग जाएगा
डर को जोड़े डर से जो अब
ऐसा मौसम राग गाएगा,

इन्सानों की इस बस्ती में,
बंधु, सखा, मनमीत लिखें ।

अपनेपन के भाव खिलेंगे
नेह, प्रेम के हाव जगेंगे
भाईचारा थिरकेगा जब
मुस्कानों के गांव सजेंगे,

पल में प्रीति परवान चढ़ेगी,
ऐसी ही हम रीति लिखें ।

जीवन बने एक गुलदस्ता
फूलों की खुशबू बिखरे
अंतर्मन की शुचिता से अब
अनुबंधों का घर निखरे,

अमर रहे जो युगों-युगों तक,
ऐसी ही हम जीत लिखें ।

प्रो॰ शरद नारायण खरे
विभागाध्यक्ष इतिहास
मंडला (म॰प्र॰)

मधुमेह : कुछ महत्वपूर्ण सवाल-जवाब

■ डॉ॰ बी॰ डी॰ अग्रवाल

मधुमेह, शुगर की बीमारी या डायबिटीज बहुत ही आमतौर पर देखी जाने वाली बीमारी है । जिसके केवल हमारे देश में ही लगभग तीन करोड़ रोगी हैं, लेकिन इनमें से लगभग डेढ़ करोड़ व्यक्तियों को मालूम ही नहीं कि उनको यह रोग है और उनमें हृदय, आंखों, गुर्दों, नव्र्स, मस्तिष्क, फेफड़ों, लिवर, रक्त नलिकाओं इत्यादि की ख़तरनाक जटिलताएं होती रहती हैं । जिनका रोगी को प्राय: बहुत देर से पता लग पाता है और कुछ रोगी तो कानपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में बेहोशी की दशा में लाये जाते हैं । तभी उनको सर्वप्रथम मालूम हो पाता है कि यह बेहोशी मधुमेह की जटिलता के कारण ही है । लेकिन जो व्यक्ति रोग के बारे में जागरूक रहकर प्रारंभ में ही अपना ब्लड शुगर टेस्ट करा लेते हैं और यदि उनको डायबिटीज निकलती है साथ ही यदि वे इस पर सदैव प्रभावी नियंत्रण रखते हैं तो वे इन जटिलताओं से बहुत समय तक बचे रहकर सामान्य व्यक्तियों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं ।

अधिकांश रोगियों में डायबिटीज को बीमारी वंशानुगत होती है । अर्थात यह रोग माता-पिता से बच्चों में भी आ सकता है (लेकिन ऐसा होना ज़रूरी नहीं)। कतिपय कारण जैसे–मोटापा, संक्रमण, अत्यधिक मानसिक तनाव इत्यादि इस रोग को उभार देते हैं या बढ़ावा देते हैं । मधुमेह में मुख्य व्याधि से निकलने वाले हॉरमोन इंसुलिन की मात्रा या उसकी कार्य क्षमता में कमी है । पेंक्रियास नामक ग्रंथि पेट के मध्य ऊपरी भाग में स्थित होती है ।

इंसुलिन ब्लड ग्लूकोस को शरीर की प्रत्येक कोशा या 'सेल' में प्रवेश कराती है तभी शरीर को ऊर्जा प्रदान होती है अन्यथा इंसुलिन की कमी होने पर ग्लूकोस रक्त में बेकार ही पड़ा रहता है और ब्लड में उसका प्रतिशत बढ़ता ही जाता है । जिसे ब्लड टेस्ट द्वारा नापने पर शुगर रोग का निदान हो जाता है । जब ब्लड शुगर का प्रतिशत एक निश्चित मात्रा से अधिक बढ़ जाता है तो यह गुर्दों द्वारा मूत्र में छनने लगता है जिसकी पहचान यूरिन टेस्ट द्वारा आसानी से हो जाती है । अत: मधुमेह का निदान ब्लड तथ मूत्र की जांच से ही होती है ।

मधुमेह के मुख्य लक्षण क्या हैं, जिससे रोगी सचेत होकर चिकित्सक की राय ले तथा अपना ब्लड शुगर टेस्ट करा सके ?

■ डायबिटीज के मुख्य लक्षण इस प्रकार है : अधिक मात्रा में बार-बार पेशाब होना, बहुत अधिक प्यास लगना, बहुत अधिक भूख लगना, अधिक खाना खाने के बावजूद लगातार वज़न कम होते जाना, कमज़ोरी, थकावट, ताक़त की कमी, फोड़े फुंसियों का बार-बार होना, कार बंकल का फोड़ा, घाव का देर से भरना या न भरना, फेफड़े की टी॰बी॰, मूत्रतंत्र में संक्रमण, पैर में घाव, केंडिडा या फ़ंगस उगने से भोजन निगलने में तकलीफ़, आंखों में संक्रमण, पैरों या हाथों में दर्द, सन्नाहट, भारीपन, झनझनाहट, सुई सी चुभना, जांघों के ऊपरी भाग में दर्द, पसलियों के बीच तीव्र दर्द सा उठना या सुई सी चुभना, आंख का अचानक एक ओर घुम जाना, चेहरे की फ़ालिज टेढ़ापन, आधे शरीर में लकवा, फ़ालिज या पेरेलिसिस चक्कर आना ख़ासतौर से उठकर खड़े होने पर, खाना खाते वक़्त चेहरे पर अत्यधिक पसीना आना, पौरुषहीनता तथा शिथिलता, छाती में दर्द उठना, रात में सोते वक़्त अचानक सांस फूलना, ब्लड प्रेशर बढ़ना या कम हो जाना, पैरों या हाथ की उंगलियों का रंग काला पड़ना तथा बदबू होना (ग्रेंगीन), चलने फिरने पर टांगों में दर्द-मूत्र कम होना, भूख न लगना, ख़ून की कमी, शरीर पर सूजन (ख़ासतौर से आंखों के नीचे), कम उम्र पर ही मोतियाबिन्द बनना, आंखों की रोशनी जल्दी-जल्दी या अचानक कम हो जाना । कब्ज़ रहना, रात में दस्त, लिवर का आकार बढ़ जाना, पीलिया का अधिक दिन चलना, पित्त की थैली में पथरियां बनने से पेट में दर्द के अटैक बार-बार उठना, जी मिचलाना, उल्टियां होना, सांस तेज़ चलना, बेहोशी, कंधे का जोड़ जाम तथा जोड़ों में दर्द, महिलाओं में बार-बार गर्भ गिर जाना, बांझपन इत्यादि ।

उल्लिखित लक्षण मधुमेह के न होकर क्या अन्य किसी कारण से भी हो सकते हैं ?

■ हां ! इन लक्षणों वाले प्रत्येक रोगी को ज़रूरी नहीं कि उसे डायबिटीज ही हो । यह तो ब्लड शुगर रिपोर्ट ही बताएगी कि शुगर की बीमारी है या नहीं ।

मधुमेह के निदान के लिए ब्लड तथा यूरिन टेस्ट कब और कैसे कराते हैं ?

■ मधुमेह के प्रथम बार निदान के लिए ब्लड शुगर टेस्ट बिना कुछ खाये-पिये (फास्टिंग) तथा पचहत्तर ग्राम ग्लूकोस एक गिलास पानी में घोल कर दो घंटे बाद रक्त का नमूना पूर्णरूपेण निसंक्रमित या डिस्पोसेबिल सिरिंज तथा नीडिल द्वारा लिया जाता है । एक बार डायबिटीज का निदान हो जाने के पश्चात ब्लड शुगर टेस्ट कराने के लिए फास्टिंग तथा सामान्य भोजन के दो घंटे बाद (पी०पी०) रक्त का नमूना लेते हैं । लेकिन इमरजेंसी की दशा में (जैसे–कीटोसिस के कारण बेहोश रोगी में, लो ब्लड शुगर या 'हाइपोग्लाइसीमिया' की दशा में तथा ऑपरेशन के दौरान इत्यादि) रक्त का नमूना दिन-रात किसी भी समय ले सकते हैं । रक्त के नमूने के साथ ही मूत्र का सेम्पल भी शुगर टेस्ट के लिए लेना लाभप्रद रहता है ।

क्या रोगी शुगर के लिए अपना यूरिन टेस्ट स्वयं कर सकता है ?

■ कानपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में परामर्श के लिए आने वाले मधुमेह के प्रत्येक रोगी को मैं यूरिन टेस्ट स्वयं करने की सलाह देता हूं । प्रत्येक रोगी तथा उनके तीमारदारों को इस अत्यावश्यक लेकिन बहुत आसान टेस्ट को स्वयं सीख लेना चाहिए । इसके अनेक फ़ायदे हैं, रोगी या उसके परिवार के सदस्य रात-दिन कभी भी इमरजेंसी की दशा में केवल आधे मिनट में ही यूरिन टेस्ट कर सकते हैं । जिससे अंदाज़ा लग जाता है कि उनकी डायबिटीज़ नियंत्रण में है या नहीं । जब आप प्रतिदिन की रिपोर्ट को डायरी में नोट करके अपने चिकित्सक को दिखाएंगे तो वे आवश्यकतानुसार ब्लड शुगर की सलाह देंगे जिससे दवा की खुराक निर्धारित करने में बहुत सहायता मिलेगी । इमरजेंसी वार्ड में भरती कीटोसिस के कारण बेहोश रोगी में डायबिटीज नियंत्रण के लिए यूरिन टेस्ट बहुत ज़रूरी होता है । जिससे इंसुलिन की मात्रा निर्धारित करने में मदद मिलती है । हालांकि कुछ समय के अंतराल से ब्लड शुगर टेस्ट भी करते रहते हैं ।

शुगर के लिए पेशाब की जांच में क्या ख़ामियां हैं ?

■ मधुमेह के निदान के लिए केवल यूरिन टेस्ट पर ही निर्भर न रहें । लेकिन यदि यूरिन शुगर टेस्ट 'पॉज़िटिव' है तो अधिकांश में यह डायबिटीज की ही निशानी है जिसके निश्चित निदान के लिए तुरंत ब्लड शुगर टेस्ट कराते हैं । यह भी ध्यान रखें कि डायबिटीज होते हुए भी बहुत थोड़े से रोगियों में यूरिन टेस्ट पॉज़िटिव नहीं आता उनको निदान तथा नियंत्रण के लिए ब्लड शुगर टेस्ट पर निर्भर रहना पड़ेगा लेकिन फिर भी यूरिन टेस्ट का बहुत महत्व है । इसलिए मैं चाहता हूं कि मधुमेह का प्रत्येक रोगी यूरिन शुगर टेस्ट अवश्य सीख लें चाहे वे बिना पढ़े-लिखे हों ।

रोगी तथा परिवारीजन ब्लड टेस्ट घर पर ही कैसे करें ?

■ निसंक्रमित नीडिल द्वारा उंगली से एक बूंद ब्लड निकाल कर रसायन लगी प्लास्टि की पतली पत्ती या 'स्ट्रिप' पर लगाकर एक निश्चित समय (लगभग एक मिनट) बाद धोकर और ब्लोटिंग पेपर से सुखाकर या टिश्यू पेपर से पोंछ कर स्ट्रिप की शीशी पर लगे लेबिल पर छपे रंगों से मिलान करके अंदाज़ा लगाते हैं कि ब्लड शुगर का प्रतिशत कितना है ।

दूसरी विधि में ब्लड शुगर का मिलीग्राम में निश्चित प्रतिशत ज्ञात करने के लिए 'ब्लड शुगर टेस्ट मीटर' मशीन में उपरोक्त स्ट्रिप या पत्ती को प्रवेश करा के कुछ सेकेंड में ही सीधी रीडिंग मिल जाती है । ऐसी मशीनें बहुत छोटे साइज में अब आसानी से उपलब्ध हैं । इनकी कार्य विधि आप अपने चिकित्सक से भलीभांति समझ लें, जिससे सही रीडिंग ज्ञात हो सके । आजकल बहुत से रोगी इस विधि से अपने घर पर ही आवश्यकतानुसार टेस्ट करके ब्लड शुगर पर कड़ा नियंत्रण रखकर विभिन्न जटिलताओं तथा 'लो ब्लड शुगर' के अटैक से भी बचे रहते हैं ।

मधुमेह पर कड़ा नियंत्रण क्यों आवश्यक है ?

■ हाल ही में अमेरिका में मधुमेह के असंख्य रोगियों पर की गयी विश्वविख्यात रिचर्स (डी०सी०सी०टी० ट्रायल) से अब सिद्ध हो चुका है कि ब्लड शुगर पर कड़ा नियंत्रण रखने से मधुमेह की गंभीर जटिलताओं जैसे–हार्ट अटैक,

अंधापन, गुर्दों पर दुष्प्रभाव, नव्र्स पर दुष्प्रभाव इत्यादि से बच सकते हैं ।

मधुमेह के उपचार के लाभदायक सिद्धांत क्या हैं ?

■ यदि इमरजेंसी की स्थिति न हो तो उपचार में भोजन के नियमन तथा व्यायाम पर विशेष ध्यान दिया जाए और यदि इनसे ही नियंत्रण हो जाए तो अच्छा है । लेकिन चिकित्सक यदि मधुमेह की टिकिया का सेवन ज़रूरी बताएं तो अवश्य लें । इंसुलिन का इंजेक्शन आवश्यक हो तो कभी न टालें ख़ासतौर पर बाल मधुमेही । मधुमेह की दवा की मात्रा आवश्यकता से न कम हो न अधिक, दवा ऐसी हो जो प्रभावी होने के साथ सस्ती और आसानी से उपलब्ध हो, विपरीत प्रभाव नगण्य हों, चौबीस घंटों में एक या दो खुराकें ही पर्याप्त हों ।

भोजन पर नियंत्रण से क्या मतलब है ?

■ मधुमेह के उपचार में भोजन पर नियंत्रण का मतलब केवल कम भोजन लेने से नहीं है बल्कि रोगी की उम्र, लिंग, क़द, वज़न, कार्य, ब्लड प्रेशर के अनुसार एवं हृदय, गुर्दे, लिवर, आंत की मौजूदा स्थिति को ध्यान में रखकर कैलोरी, शर्करा, चिकनाई, प्रोटीन, जल, नमक इत्यादि की मात्रा का नियमन करना होता है ? यदि मधुमेही महिला गर्भवती है तो इसका भी ध्यान रखना होगा । ध्यान रखें मधुमेह के सफल नियंत्रण के लिए भोजन का नियमन सबसे प्रथम आवश्यकता है चाहे रोगी मधुमेह के उपचार की टिकिया ले रहा हो या इंसुलिन का इंजेक्शन । रोगी को चीनी, ग्लूकोस, गुड़, मिठाई, मुरब्बा, शरबत आदि से परहेज रखना होगा । लेकिन अपने चिकित्सक द्वारा सुझाया गयी निर्धारित मात्रा में आप गेहूं, चावल, आलू, फल आदि कुछ ले सकते हैं । इंसुलिन लेने वाले रोगी भोजन सदैव निश्चित समय पर ही लें एवं दिन प्रतिदिन शर्करा वर्ग की मात्रा का भोजन में बदलाव न करें ।

मधुमेही के लिए कौन-सा व्यायाम लाभप्रद रहता है ?

■ ख़ासतौर पर यदि रोगी का वज़न आवश्यकता से अधिक है तो मधुमेह के रोगी को टहलना सबसे अच्छा व्यायाम है । लेकिन यदि रोगी का ब्लड प्रेशर बहुत बढ़ा या कम है, हृदय का जटिल रोग है, नेत्र के रेटिना पर्दे में गंभीर ख़राबी है, मूत्र में कीटोन पदार्थ विद्यमान है, रोगी को अत्यधिक कमज़ोरी है तो व्यायाम से पहले अपने चिकित्सक से परामर्श अवश्य ले लें ।

मधुमेह के उपचार में मेथी, करेले का जूस, नीम के तेल से क्या लाभ हैं ?

■ ये तीनों पदार्थ ब्लड शुगर प्रतिशत कम करते हैं, लेकिन इंसुलिन लेने वाले रोगी केवल इन पर ही निर्भर न रहें । इन पदार्थों को लेने वाले रोगी इसके बारे में अपने चिकित्सक को अवश्य बता दें । जिससे चिकित्सक दवा की सही मात्रा निर्धारित कर सकें ।

मधुमेह के रोगी को इंसुलिन का इंजेक्शन लेना कब ज़रूरी होता है ?

■ इंसुलिन अनिवार्य होने पर चिकित्सक इसे लेने को कहें तो घबराएं नहीं अन्यथा संक्रमण ठीक नहीं होगा और लिवर, गुर्दे, हृदय, आंखों, मस्तिष्क, नव्र्स, गेंग्रीन इत्यादि की गंभीर जटिलताओं को भी आप बुलावा देते रहेंगे । इंसुलिन बिना लिए महिलाओं में गर्भधारण में परेशानी हो सकती है और गर्भस्थ शिशु में जन्मजात विषमताएं भी हो सकती हैं । ध्यान रखें, डॉक्टरी परामर्शानुसार लाखों व्यक्ति इंसुलिन लेकर जटिलताओं से बचे रहकर सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं । मधुमेही को इंसुलिन का इंजेक्शन लेना तब अनिवार्य हो जाता है जब रोगी बेहोश हो, इसके मूत्र में कीटोन पदार्थ आ रहा हो, रोगी बाल्यावस्था का हो, कोई बड़ा ऑपरेशन होने वाला हो, तीव्र संक्रमण हो, लिवर, गुर्दे, हृदय, आंखों, गेंग्रीन का गंभीर रोग विद्यमान हो, भोजन से, व्यायाम से तथा कुछ दवाओं से भी मधुमेह पर नियंत्रण न हो रहा हो, महिला मधुमेही गर्भवती हो ।

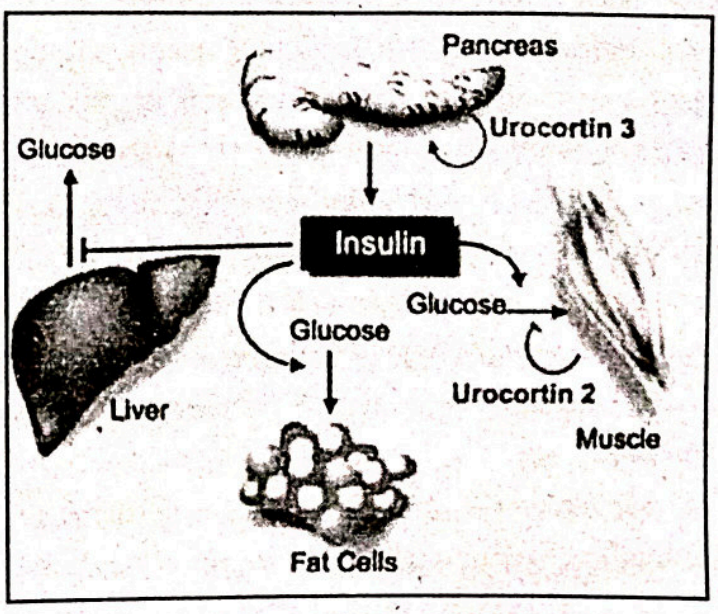

जन-प्रतिनिधि, मर्यादा और लोकतंत्र

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है । लोकतंत्र में देश के नागरिक अपने द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा शासित होते हैं । हर पांच वर्ष में देश में विभिन्न स्तरों पर चुनाव होते हैं और जनता अपने प्रतिनिधि का चुनाव करती है । सैद्धांतिक रूप से, जनता अपनी पसन्द के शासक चुनती है और उन पर नियंत्रण भी रखती है अत: जनता सर्वोपरि होती है, व्यवहार में क्या होता है यह अलग बात है ।

जनता में वैचारिक, आर्थिक, धार्मिक, जातीय, वर्गीय, भाषाई, क्षेत्रीय आदि विभिन्न आधारों पर राजनीतिक दल गठित होते हैं । ये जनता से वादे करते हैं कि यदि उन्हें सत्ता में लाया जाए तो वे अमुक-अमुक कार्य करेंगे । व्यवहार में देखा गया है कि पार्टियां और उनके नेता जो वादे करते हैं उनमें से अधिकांश पूरे नहीं किये जाते, अर्थात अधिकांशत: जनता के साथ धोखा होता है ।

चुनाव के दौरान भी और जन-प्रतिनिधि के रूप में चुने जाने के बाद भी, नेता अमर्यादित व्यवहार करते हैं और अमर्यादित भाषा का भी प्रयोग करते हैं । आम तौर पर जनता अपना आक्रोश व्यक्त करती है और नेता द्वारा क्षमा याचना के साथ प्रकरण की इति-श्री हो जाती है । कभी नेताओं द्वारा ऐसे संविधान विरोधी बयान भी दिये जाते हैं जो जन-भावनाओं को भड़काने वाले होते हैं । इनसे एक वर्ग आहत होता है और एक वर्ग, जो वास्तव में उस नेता का वोटर होता है, आनंदित होता है तथा इससे उसका जनाधार मज़बूत होता है । साधारणतया नेताओं के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं होती । परन्तु यदि किसी पार्टी को नेता के उक्त बयान से वोटों की हानि होने का डर हो तो या तो उसके बयान को अमर्यादित बताकर पल्ला झाड़ लिया जाता है और उससे माफ़ी मंगवा ली जाती है, अन्यथा चुप्पी साध ली जाती है ।

यदि वह नेता विपक्षी पार्टी का हो तो मानो भूचाल ही आ जाता है । उस पर तरह-तरह के आरोपों की झड़ी लग जाती है और कुछ मामलों में तो उसे देशद्रोही कहने में भी कोई संकोच नहीं किया जाता ।

कभी-कभी नेता अमर्यादित भाषा का प्रयोग करते हुए कैमरे या ऑडियो रिकार्डर पर पकड़े जाते हैं तो पार्टी संकट को भांपते हुए उसे पार्टी से निलंबित करने और जांच का आदेश देने जैसी औपचारिकताएं कर लेती है और फिर बात आयी-गयी हो जाती है । स्पष्ट है, जो नेता चुनाव जीत कर आया है वह पार्टी के लिए 'कमाऊ पूत' की हैसियत रखता है । वह कितनी ही अभद्रता करे उसे 'घर' से नहीं निकाला जा सकता ।

सवाल यह उठता है कि जनता बेचारी क्या करे ? वह तो इन अभद्र और असामाजिक नेताओं को चुनने के लिए मजबूर है । राजनीतिक पार्टियों की मजबूरी यह है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में धन-बल, बाहु-बल और छल-बल के बिना जन-समर्थन (अर्थात वोट) नहीं मिलता अत: वह ऐसे व्यक्ति को टिकट देती हैं, जिसके पास ये सभी बल हों और जो अधिक वोट लाने की क्षमता रखता हो ।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी चुनाव प्रणाली पर विचार मंथन कर इसमें आवश्यक परिवर्तन करें, साथ ही राजनीतिक पार्टियां चरित्रवान लोगों को टिकट दें और जीतने के बाद भी यदि नेता का कोई अनैतिक व्यवहार सामने आये तो उसे पार्टी से निष्कासित करने का प्रावधान हो ।

हमारी संसद और विधानसभाओं सहित सभी स्थानीय निकायों में भी अनैतिक व्यवहार पर सदस्यता समाप्त करने का नियम हो । इससे भी अधिक आवश्यक यह है कि जनता स्वयं ऐसे अनैतिक लोगों का बहिष्कार करे और उन्हें वोट ही न दे । अन्ततोगत्वा जनता ही को जागरूक होना होगा ।

डॉ॰ मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी
miqbal1959@gmail.com

दोषियों को बचाने की प्रतिस्पर्धा !

■ राजीव यादव
(रिहाई मंच, लखनऊ)

उ०प्र० में आतंकवाद के आरोपी ख़ालिद जिनकी 18 मई 2013 को हिरासत में हत्या कर दी गयी थी कि पुलिस विवेचना को बाराबंकी न्यायालय ने ख़ारिज कर दिया । आतंकवाद के इस आरोपी की गिरफ़्तारी की सत्यता की जांच के लिए गठित आर०डी० निमेष जांच आयोग ने भी गिरफ़्तारी को संदिग्ध कहते हुए दोषी पुलिस अधिकारियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई की बात कही है । ऐसे में इस हत्या पर विवेचनाधिकारी द्वारा लगायी गयी फ़ाइनल रिपोर्ट का ख़ारिज होना बहुतेरे सवाल खड़ा करता है ? क्योंकि ख़ालिद की हत्या में यू०पी० के पूर्व डी०जी०पी० विक्रम सिंह, तत्कालीन ए०डी०जी० क़ानून व्यवस्था बृजलाल समेत आई०बी० पर नामज़द मुक़दमा दर्ज है ।

वैसे तो आतंकवाद के आरोपियों का विशेष पुलिस दस्तों द्वारा अग़वा करने और भारी मात्रा में विस्फोटकों के साथ बरामदगी और फिर सालों बाद उनका बेगुनाह रिहा हो जाना अमूनन एक सामान्य सी प्रक्रिया हो गयी है । जिस पर पुलिस किसी विरोध-प्रतिरोध के न होने को लेकर बहुत आश्वस्त होती है वहीं परिवार वाले भी इसे नियति मान लेते हैं । पर ऐसी किसी नियति को न मानने के भी बहुतेरे नाम हैं, जिस कड़ी में मोदी राज के गुजरात में आतंकवाद के नाम पर फ़र्ज़ी मेठभेड़ में मारी गयी इशरत जहां थीं उसी कड़ी में ख़ालिद भी है । ऐसे में 2007 में उसके अपहरण, गिरफ़्तारी, हत्या और उसके न होने पर भी उसे इन्साफ़ दिलाने की जो जिद्दोजेहद चल रही है, उसकी तफ़्तीश से हम देश में आतंक की राजनीति को समझ सकते हैं । वह राजनीति जिसकी पटकथा खुफ़िया विभाग लिखता है और फिर जब जागरूक नागरिक समाज अपने ख़िलाफ़ हो रहे षड्यंत्र के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाता है तो राज्य और उसकी पूरी मशीनरी अपने ही नागरिक के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती है ।

12 दिसम्बर 2007 को आज़मगढ़ से तारिक़ और 16 दिसम्बर को मड़िया जौनपुर ज़िले से ख़ालिद को अग़वा करने के बाद एस०टी०एफ० द्वारा 22 दिसम्बर को बाराबंकी रेलवे स्टेशन से गिरफ़्तारी के दावे के बाद उठने वाले सवालों पर तत्कालीन उ०प्र० सरकार ने मार्च 2008 में आर०डी० निमेष जांच आयोग गठित कर दिया था । जिसने अगस्त 2012 में अपनी रिपोर्ट मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को सौंप दी । राजनीतिक व मानवाधिकार संगठनों ने रिपोर्ट को सार्वजनिक करते हुए, कार्रवाई की मांग की । यू०पी० सरकार द्वारा रिपोर्ट के न सार्वजनिक करने पर आतंकवाद के नाम पर क़ैद बेगुनाहों के सवाल उठाने वाले संगठन रिहाई मंच ने निमेष कमीशन की रिपोर्ट को लीक कर मीडिया में जनहित में जारी कर दिया । इस रिपोर्ट ने यू०पी० एस०टी०एफ़० के उस दावे पर सवालिया निशान लगा दिया कि उसने यू०पी० के कचहरी धमाकों के आरोपियों को बाराबंकी में उस वक़्त पकड़ा जब वह विस्फोटकों के साथ बाराबंकी रेलवे स्टेशन पहुंचे थे । ऐसे में यू०पी० एस०टी०एफ़० पर यह भी सवाल खड़े हो गये कि अगर गिरफ़्तारी फ़र्ज़ी थी तो उनके पास से जिन विस्फोटकों और असलहों के बरामद होने का दावा उसने किया, वह उसको कहां से मिले ?

उ०प्र० के पूर्व डी०जी०पी० विक्रम सिंह, तत्कालीन ए०डी०जी० क़ानून व्यवस्था ब्रजलाल समेत उन लोगों ने जिन्होंने इस गिरफ़्तारी पर बड़े-बड़े दावे किये थे, जब आरोपों के घेरे में आ गये उसी दर्मियान 18 मई 2013 को ख़ालिद की बाराबंकी के क़रीब उस वक़्त हत्या कर दी गयी थी जब उसे पेशी के बाद फ़ैज़ाबाद न्यायालय से लखनऊ जेल लाया जा रहा था । परिजनों का आरोप था कि चूंकि आर०डी० निमेष जांच आयोग ने उसकी गिरफ़्तारी संदिग्ध क़रार दे दी थी, ऐसे में इस मामले में ख़ालिद चश्मदीद गवाह था, इसलिए उसकी हत्या करवा दी गयी । परिजनों के इस आरोप और हाल में उनके द्वारा इस हत्याकांड में आरोपियों को बचाने के ख़िलाफ़ किये गये वाद जिस पर उनके पक्ष को न्यायालय ने माना है को देखें तो पुलिस-प्रशासन की इस बचने-बचाने की राजनीति को

साफ़ देखा जा सकता है । यही वह वजह थी कि यू॰पी॰ सरकार ने वादे के बावजूद इस पूरे मामले की जांच सी॰बी॰आई॰ से नहीं करायी ।

बहरहाल, विवेचना अधिकारी ने पूरे मामले में बिना आरोपियों से पूछताछ किये ही 12 जून 2014 को फ़ाइनल रिपोर्ट लगा दी थी । इतना ही नहीं नामज़द एफ॰आई॰आर॰ होने के बावजूद विवेचनाधिकारी ने उन्हें अज्ञात लिखा । इससे यह समझा जा सकता है कि विवेचनाधिकारी पर बड़ा दबाव था या फिर वह अपने आरोपी पुलिस अधिकारियों के मातहत ही पूरी विवेचना कर रहा था । यह विवेचना की प्रक्रिया इस बात को भी साफ़ करती है कि विवेचनाधिकारी जो पुलिस कर्मचारी होता है उसमें एक प्रकार का दुस्साहस आ जाता है कि वह जो भी कर देगा वह सही होगा उस पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है । इसके साथ ही कथित तौर पर गिरफ़्तारी के समय, ख़ालिद के अपहरण, अवैध हिरासत के आरोप की जांच नहीं की गयी, जिससे बाद में उसकी हत्या का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है । वहीं विसरा की जांच भी उचित ढंग से नहीं की गयी क्योंकि प्रभावशाली आरोपियों विक्रम सिंह और बृजलाल के प्रभाव क्षेत्र में ही विधि विज्ञान प्रयोगशाला भी आती है । विवेचनाधिकारी ने अपने उच्च अधिकारियों को बचाने के लिए साक्ष्य एकत्र करने के बजाय उन्हें नष्ट करने का कार्य किया और हत्या के उद्देश्य के संबंध में कोई जांच करने की कोशिश ही नहीं की ।

इस पूरे प्रकरण को देखा जाए तो राज्य मशीनरी का हर तंत्र एक-दूसरे से जुड़ा और दोषी है । जिसके चलते उसे खुद को बचाने के लिए दूसरे को बचाना महत्वपूर्ण हो जाता है । यह वह आतंक की राजनीति है जो हमारे लोकतांत्रिक ढ़ांचे को अंग बन चुकी है । यह महज संयोग नहीं है कि मोदी सरकार की टीम के आई॰बी॰ अधिकारी अजित डोभाल इशरत जहां फ़र्ज़ी मुठभेड़ में जब आई॰बी॰ अधिकारी राजेन्द्र कुमार के ख़िलाफ़ चार्जशीट दायर करने की बात आती है तो न सिर्फ़ उनके पक्ष में खड़े होते हैं बल्कि इशरत को आरोपित भी करने का हर संभव प्रयास करते हैं । इसी तरह प्रकाश सिंह जैसे पुलिस अधिकारी भी भाजपा के नेताओं में सुर-सुर मिलाते हुए कहते हैं कि यहां की सरकार आर्तकियों के विरुद्ध मुक़दमे वापस लेना चाहती है । जबकि यू॰पी॰ सरकार ने आतंक के उन आरोपियों को छोड़ने की बात कही है जो बेगुनाह हैं । आख़िर इस देश ही नहीं दुनिया का कौन-सा क़ानून है जो बेगुनाह को सज़ा देने के पक्ष में है ? दूसरा कि यू॰पी॰ सरकार ने किसी भी आतंकवाद के नाम पर क़ैद बेगुनाह को अब तक नहीं छोड़ा है बल्कि आर॰डी॰ निमेष जांच आयोग की रिपोर्ट जो आतंकवाद के नाम पर पकड़े गये बेगुनाह तारिक़-ख़ालिद की बेगुनाही का सबूत है उसके आधार पर न बेगुनाहों को छोड़ा और न ही उस रिपोर्ट पर एक्शन टेकन रिपोर्ट लाते हुए दोषी पुलिस व आई॰बी॰ अधिकारियों के ख़िलाफ़ ही कार्रवाई की है ।

दरअस्ल, देश में सुरक्षा और खुफ़िया एजेंसियों की एक बड़ी जमाअत पिछले दशक में टी॰वी॰ स्क्रीनों के सहारे कभी 'आंतरिक' तो कभी 'वाह्य' सुरक्षा-विशेषज्ञों के रूप में हमारे सामने आयी । यह उसी 9/11 की आतंक की राजनीति की आयातित खेप है जिसका अमेरिका प्रायोजित आतंकवाद के तर्कों को देश की ज़मीन पर रोपना एजेंडा है । अगर ऐसा नहीं होता तो जो सुरक्षा विशेषज्ञों की खेप उग आयी है उसे ज़रूर निमेष जांच आयोग की रिपोर्ट पर बोलना चाहिए था, जो उसने नहीं किया । क्योंकि यह वह रिपोर्ट है जो साफ़ करती है कि हमारी खुफ़िया और सुरक्षा एजेंसियां एक नीति के तहत मुस्लिम युवकों को अग़वा कर हफ़्तों और महीनों ग़ायब रखती हैं और ज़रूरत पड़ने पर फ़र्ज़ी बरामदगी का दावा करते हुए आतंक के झूठे आरोपों के चक्रव्यूह में उन्हें फंसा देती हैं ।

ग़ज़ल

उठा के नाज़ से दामन भला किधर को चले
इधर तो देखिए बह्रे-खुदा किधर को चले

अभी तो आये हो जल्दी कहां है जाने की
उठो न पहलू से ठहरो ज़रा किधर को चले

खुफ़ा हो किसपे भंवें क्यों चढ़ीं हैं, ख़ैर तो है
ये आप तेग़ पे धर कर जिला किधर को चले

मुसाफ़िराने-अदम, कुछ कहो अज़ीज़ों से
अभी तो बैठे थे है-है भला किधर को चले

गया जो मैं कहीं भूले से उसके कूचे में
तो हंसके कहने लगे ऐ 'रसा', किधर को चले ।

● भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'रसा'

विलुप्त हो रही है दुर्लभ सोन चिरैया

■ पंकज चतुर्वेदी

दुर्लभ पक्षी सोन चिरैया की अस्तित्व रक्षा के उद्देश्य से सरकार ने संरक्षित अभ्यारण्य स्थापित किये, लंबा-चौड़ा अमला बहाल किया गया । कुछ साल बाद देखा तो पाया कि संरक्षित अभ्यारण्य में रही-बची सोन चिरैया भी शिकारियों का निशाना बन गयीं । अब ये अभ्यारण्य विलुप्त प्राय प्रजाति के इस पक्षी के लिए नहीं बल्कि सर्व सुलभ सफ़ेद हांथी की संरक्षण स्थली बनकर रह गया है । यह तथा-कथा है मध्य प्रदेश के ग्वालियर ज़िला स्थित घाटी गांव व करैरा (शिवपुरी) के अभ्यारण्यों की, जो जंगल वालों के 'जंगल क़ानून' के चलते सोन चिरैयाविहीन हो गये हैं । और अब 'चिड़िया उड़ने के बाद' इस इलाक़े के गांवों को उजाड़ कर चिड़ियाओं को बसाने की सरकारी योजना ने नया तूफ़ान बरपा दिया है ।



'ओटीडीटी कुल' का पक्षी सोन चिरैया हुकना या तुकदार भी कहलाता है । डीलडौल में गिद्ध के समान, सिर तक की ऊंचाई कोई तीन फ़ीट वाली इस चिड़िया का वज़न तीस पाउंड तक होता है । कुछ-कुछ शुतुरमुर्ग़ की तरह दिखने वाले इस पक्षी का शरीर बग़ैर बालों वाली टांगों के समकोण पर टिका होता है । यह इसकी ख़ास विशेषता भी है । इसके ऊपरी पंख गहरे पीले और उन पर काली धारियां होती हैं । निचला भाग सफ़ेद व छाती के पास नीचे लंबी काली पट्टी होती है । सफ़ेद गर्दन, काली खोपड़ी, चौड़े पंखों की नोक के पास सफ़ेद-सा धब्बा और सिर पर कलगी : ये कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जिनके कारण सोन चिरैया को पहचाना जाता है । मध्य प्रदेश में घाटीगांव और करैरा के अलावा, राजस्थान के कंडनपुर, सोनखल्या और डेजर्ट नेशनल पार्क, महाराष्ट्र में नानाज, आंध्र प्रदेश में रोल्लापाडु और कर्नाटक में रानी बेन्नूर अभ्यारण्य में यह दुर्लभ पक्षी बामुश्किल 750 बचे हैं ।

सोन चिरैया बहुत ही शर्मिला व चौकन्ना परिंदा है, दुर्भाग्य की बात है कि यह पक्षी कभी इन्सान की नीयत पर शक नहीं करता है, और यही कारण है कि पिछले कुछ दशकों में इसका इतना शिकार हुआ है कि आज इसकी प्रजाति पर समाप्त होने का ख़तरा मंडरा रहा है । हालांकि इसका मांस रबर की तरह लचीला और खुरदुरा होता है । इसे आसानी से चबाया भी नहीं जा सकता है । इसके बावजूद इसकी दीवानगी के पीछे यह भ्रांति है कि इसकी तासीर गरम होती है और इससे पौरुष शक्ति बढ़ती है । फिर इसके पंख खूबसूरत होने के कारण सजावट में काम आते हैं । वैसे यह पक्षी काफ़ी कुछ अपनी आदतों के कारण भी मारा जाता है । अक्सर देखा गया है कि सोन चिरैया गाय, भैंस या बकरियों के झुंड में शामिल हो जाती है । फिर ग्वाले या शिकारी इनके पीछे लग जाते हैं । यहां तक लोमड़ी और कुत्ते भी इसे धर दबोचते हैं क्योंकि यह अचानक उड़ नहीं पाता है ।

1982 में मध्य प्रदेश के ग्वालियर ज़िले के घाटी गांव का 512 वर्ग किलोमीटर और शिवपुरी में करैरा का 202 वर्ग किलोमीटर जंगल सोन चिरैया के लिए संरक्षित अभ्यारण्य घोषित किया गया था । इस क्षेत्र की सिफ़ारिश विश्व प्रसिद्ध

पक्षी वैज्ञानिक डॉ॰ सलीम अली ने की थी ।

बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के युवा वैज्ञानिक डॉ॰ रफ़ीक़ रहमानी लगातार इन जंगलों में आते रहे । उन्होंने इस अद्‌भुत परिंदे के प्राकृतिक आवास, प्रजनन, आदतों आदि पर गंभीर शोध किये । डॉ॰ रहमानी ने अपने शोध की विस्तृत रिपोर्ट मध्य प्रदेश सरकार को भेजी ताकि इस प्रजाति के संरक्षण के कुछ सार्थक उपाय हो सकें ।

डॉ॰ रहमानी की रिपोर्ट फ़ाइलों के जंगलों में कहीं खो गयी और सरकार ने जंगल संवारने के नाम पर करोड़ों रुपये फूंकने जारी रखे । कोई दो दर्जन कर्मचारी यहां नियुक्त कर दिये गये । इसके बावजूद सोन चिरैया की संख्या घटती चली गयी । सरकारी रिकार्ड के अनुसार 1986 में यहां 35 सोन चिरैया थीं । 87 में 40, 88 में 30, 89 में 15, 1990 में 12, 1991 में 12, 1992 में 18, 1993 में 5 और तदुपरांत शून्य । इन जंगलों में सोन चिरैया के लुप्त होने के लिए शिकार के साथ-साथ वहां के प्राकृतिक वृक्षों की संख्या का कम होना भी ज़िम्मेदार है । खेती योग्य सरकारी ज़मीन पर नाजायज़ क़ब्ज़ा करने की साज़िश के तहत चिड़ियाओं को उजाड़ने की बात यहां के कुछ पर्यावरणविद् कहते हैं । करैरा के तुर्कनी गांव के कुछ लोगों ने बताया कि कतिपय नेता और वन अधिकारी इस बात के लिए साज़िश करते रहते हैं कि वहां का अभ्यारण्य समाप्त हो जाए ताकि जंगल की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर खेती की जा सके । इसी षड्‌यंत्र के चलते लोगों ने चिड़ियाओं को समूल नष्ट कर दिया था ।

करैरा के जंगलों में सोन चिरैया के लुप्त हो जाने पर जब बावेला मचा तो सरकार की नींद खुली । तुरत-फुरत घोषणा कर दी गयी कि इलाक़े के गांव ख़ाली करवा लिए जाएं । करैरा व नरवर तहसील के 32 गांवों की आबादी को खदेड़ने की काग़ज़ी क़वायद शुरू हो गयी है । उधर अपनी पुश्तैनी घर-कल से उजाड़े जाने के तुग़लकी फ़रमान के ख़िलाफ़ यहां के चालीस हज़ार बाशिंदे गुस्साये बैठे हैं । वहां 'मारेंगे और मरेंगे'' के नारे गूंज रहे हैं । कुछ महीने पहले ज़िले के प्रभारी सचिव सी॰एस॰ चड्‌ढा दिहायला गांव पहुंचे तो लाख कोशिशों के बावजूद एक सोन चिरैया भी नहीं दिखी । गांव वालों ने श्री चड्‌ढा को एक ज्ञापन सौंपा जिसमें कहा गया है कि एक पक्षी के लिए हज़ारों लोगों को घर-खेतों से बेदख़ल करना मानवाधिकारों का हनन है ।

इन जंगलों से सोन चिरैया उजाड़ने वाले गिने-चुने लोगों की करनी का खामियाजा हज़ारों ग्रामीणों भोगें, यह कहां तक जायज़ होगा ? मानव उजाड़ कर पक्षी बसाने की योजना वैसे भी व्यावहारिक प्रतीत नहीं होती है । पारिस्थितिकी संतुलन के लिए वन और वन्य प्राणियों का बना रहना बहुत ज़रूरी है लेकिन सदियों से जंगल और मानव एक-दूसरे के पालक रहे हैं । पहले कभी भी जंगल बसाने के लिए मानव को उजाड़ने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई । सोन चिरैया भी उतनी ही ज़रूरी है जितना पुश्तैनी गांवों का बसा रहना । ज़रूरत उन परियोजनाओं की है जो जल, जंगल, ज़मीन और जानवरों पर ख़तरा बन रही आधुनिकीकरण की आंधी के प्रति आम लोगों को सचेत कर सकें । यहां सरकार को जान लेना चाहिए कि सोन चिरैया के विलुप्त होने का मूल कारण अनुकूल वातावरण का नष्ट होना है, न कि जन-आबादी ।



साबुन का इतिहास

आजकल नहाने तथा कपड़ा धोने के लिए विभिन्न आकार-प्रकार व रूप-रंग के सुगंधित साबुन बाज़ारों में प्रचलित तथा उपलब्ध हैं । ऐसा नहीं है कि साबुन वर्तमान सभ्यता की खोज तथा उत्पाद है । प्राचीनकाल में विश्व के अनेक देशों में साबुन के निर्माण तथा प्रयोग के संबंध में अनेक तथ्यपूर्ण जानकारी मिलती है ।

2800 ईसा पूर्व बेबीलोन में साबुन बनाने के संबंध में अनेक साक्ष्य मिले हैं । इन दिनों लकड़ी की राख के साथ फैट्स को उबाल कर साबुन तैयार किया जाता था जिसका उपयोग ऊन तथा कॉटन की सफ़ाई के लिए किया जाता था । 1550 ईसा पूर्व में इजिप्ट में भी साबुन के उत्पादन तथा इस्तेमाल का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है । तब एनिमल तथा वेजिटेबल फैट्स को अल्कलाइन साल्ट के साथ उबालकर साबुन तैयार किया जाता था । इसी प्रकार प्राचीन यूरोप में सेल्टिक सभ्यता के लोगों में भी साबुन का प्रचलन था । उनके द्वारा एनिमल फैट्स तथा लकड़ियों की राख से सैपो नामक मिश्रण तैयार किया जाता था । कुछ लोगों की मान्यता है कि संभवत: सैपो से ही साबुन (सोप) बना हो ।

ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में इंग्लैंड में 12वीं शताब्दी में साबुन की पहचान बनी । फिर 19वीं सदी का आगमन होते-होते नहाने के साबुन का संपूर्ण यूरोप तथा ब्रिटेन के सभी शहरों में इस्तेमाल होने लगा । ब्रिटिश शासन काल में इंग्लैंड के लीवर ब्रदर्स ने भारत में प्रथम बार आधुनिक साबुन पेश करने का जोखिम उठाया । पहले देश में बाहर से साबुन आयात किये जाते थे । नार्थ ईस्ट सोप ऐसी पहली कंपनी थी जिसने सन 1897 में देश में पहली बार मेरठ में साबुन का कारख़ाना स्थापित किया । सन 1918 में जमशेद जी टाटा ने केरल के कोच्चि में ओ॰के॰ कोकोनट आयल मिल्स की स्थापना की जो देश में स्वदेशी साबुन का निर्माण करने वाला पहला कारख़ाना था, जिसका बाद में नाम बदलकर आयल मिल्स कंपनी कर दिया गया ।

शुरुआती दौर में साबुन समाज के धनाढ्य वर्ग में प्रयुक्त किया जाता था । आजकल समाज के हर वर्ग में ठोस व तरल दोनों रूपों में ब्रांडेड कंपनियों के क़िस्म-क़िस्म के साबुनों का प्रयोग हो रहा है । कपड़ा धोने के लिए तरह-तरह के डिटरजेंट पाउडरों ने बाज़ारों में अपनी जगह बना ली है । आजकल कपड़ा धोने हेतु सोडियम साबुन व शरीर साफ़ करने हेतु पोटेशियम साबुन का प्रयोग किया जाता है, जबकि त्वचा संबंधी बीमारियों के इलाज में कीटाणुनाशक के रूप में कार्बोलिक साबुन का इस्तेमाल होता है । ग्लिसरीन युक्त साबुन त्वचा की नमी को बनाए रखने तथा मुलायम बनाने में सहायक है । आज नहाने व कपड़ा धोने के साबुन के उत्पादन व विपणन में अनेक उद्योगपति सक्रिय हैं तथा यह देश का प्रमुख उद्योग है ।

● विद्या प्रकाश

स्कैन मास्टर : सूंघ कर बीमारी का पता लगाने वाला

लंदन के एक वैज्ञानिक जॉन स्लेटर ने एक ऐसी प्रणाली का शोध किया जिसमें न तो वैद्य हकीम की तरह नाड़ी टटोलकर न होम्योपैथ की तरह लक्षण पूछकर, न एलोपैथ की तरह आला लगाकर पेट को ठोंक बजाकर पेट के रोग का पता लगाते हैं बल्कि वह मरीज़ों की सांस को सूंघकर यह बता सकेगी कि वह किस रोग की चपेट में है । स्कैन मास्टर नामक इस कृत्रिम नाम का उन संक्रमणों की पहचान में उपयोग किया जाता है जो पेट में अल्सर और गैस्ट्रिक के लिए ज़िम्मेदार माने जाते हैं । डॉक्टर जॉन स्लेटर ने इसके विकास के लिए अनेक वर्षों तक शोध के उपरांत लंदन के बर्कनेक विद्यालय से कृत्रिम नाक की निर्मिति की । एक वर्ष पूर्व डॉक्टर स्लेटर ने अरेटेक केमिकल सोंसर्स नामक एक कंपनी स्थापित की । इस कंपनी का उद्देश्य चिकित्सा क्षेत्र के साथ-साथ औद्योगिक क्षेत्रों में उपयोग के लिए अवयव तैयार करना है । समझा जाता है कि स्कैन मास्टर का उपयोग खाद्य व अन्य उद्योगों की गुणवत्ता नियंत्रण में किया जाएगा ।

स्कैन मास्टर की पूरी प्रणाली विशेष प्रकार के आठ कणों पर आधारित है । ये कण किसी भी रसायन को अवशोषित करके एक विशेष आवृत्ति पर कंपन करते हैं इस प्रकार से स्कैन मास्टर वातावरण में मौजूद रसायनों की मौजूदगी व ग़ैर-मौजूदगी की जानकारी देता है । जांच से पहले स्कैन मास्टर की मेमोरी यानी याद्दाश्त में ख़ास रसायन की पहचान के लिए उस रसायन के नमूने को डाला

जाता । यह काम काफ़ी सरल होता है । स्कैन मास्टर को उस रसायन के वातावरण में रखना भर होता है । स्कैन मास्टर उस रसायन को सूंघकर उसकी गंध दर्ज कर लेता है । इसके बाद फिर किसी वातावरण में मौजूद उस रसायन का स्कैन मास्टर से पता लगाया जा सकता है । स्कैन मास्टर का प्रयोग अलग-अलग जीवाणुओं के कल्चर को पहचानने में सफलतापूर्वक हुआ है । इसकी सबसे बड़ी सफलता होलिकोबैक्टर पायरोली नामक जीवाणु को पहचानने में मिली, जिसको कि पेट में होने वाले कैंसर का जनक माना जाता है । इस समय डॉक्टर स्लेटर और उनके साथियों द्वारा एक ऐसे तरीक़े को विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे स्कैन मास्टर के ज़रिये मरीज़ों की सांस सूंघकर उसकी बीमारी का पता लगाया जा सके । न सिर्फ़ डॉक्टर बल्कि मरीज़ भी यही चाहेंगे कि एण्डोस्कोपी के ज़रिये गले में पाइप डलवाने के बजाय सिर्फ़ सूंघकर इस बात का पता लगाया जाएगा कि उन्हें कैंसर की संभावना तो नहीं या फिर वे अल्सर से पीड़ित तो नहीं ।

डॉक्टर स्लेटर कहते हैं कि सूंघकर इलाज करना कोई नयी बात नहीं है । चीन में परंपरागत तरीक़ों से आज भी सूंघकर मरीज़ की बीमारी के बारे में जानने की कोशिश की जाती है । उदाहरणार्थ कोई व्यक्ति बेहोश हो जाता है तो उसकी सांस सूंघकर ऐसीटोन गंध से यह पता चलता है कि यह मधुमेह के कारण कोमा में तो नहीं हैं । स्कैन मास्टर पर इन दिनों कई अन्य परीक्षण चल रहे हैं । उसे अन्य प्रकार के रसायन पहचानने के सक्षम बनाया जा रहा है ।

स्कैन मास्टर के कुछ मॉडल इस समय बाज़ार में आ चुके हैं । इन्हें बाज़ार में लाने वाली कंपनी अरेटेक का कहना है कि वह अन्य कंपनियों व उद्योगों से स्कैन मास्टर के विभिन्न उपयोग के बारे में बातचीत करके उपभोक्ताओं की ज़रूरतों के अनुसार नये मॉडल तैयार कर रही है ।

● कुमार अमित

सोच बीमार करती है इन्सान को

एक अध्ययन से वैज्ञानिकों ने इस तथ्य का पता लगाया है कि व्यक्ति को मर्ज़ नहीं बल्कि उसकी सोच बीमार बनाती है । वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर किसी व्यक्ति को कोई साधारण पेय पदार्थ शराब बताकर पीने को दिया जाए तो उस व्यक्ति को वह पेय पदार्थ पीने से भी थोड़ा-बहुत नशा हो जाता है । वैज्ञानिकों ने कुछ लोगों के साथ ऐसा ही किया और पाया कि इनमें से आधे से अधिक लोगों ने माना कि उन्हें थोड़ा-सा नशा हो गया है, जबकि वह पेय शराब अथवा कोई नशीला पेय था ही नहीं । इस घटना को 'प्लेसिबो प्रभाव' कहा जाता है ।

कुछ डॉक्टरों का कहना है कि रोगी जिस डॉक्टर पर सर्वाधिक भरोसा करते हैं, उसके इलाज से वे बहुत जल्दी ठीक हो जाते हैं । दरअस्ल सच्चाई यह है कि दवाइयों से ज़्यादा डॉक्टर पर रोगी का विश्वास ही उसके रोग का इलाज करता है । वैज्ञानिक ऐसे कई शोध करके इस तथ्य को आज़माकर देख चुके हैं । कई परीक्षणों में रोगी को सिर्फ़ चीनी का ही घोल दबा बताकर दिया गया और हैरानी की बात यह रही कि इस घोल से ही आधे से अधिक रोगियों को फ़ायदा हुआ । वैज्ञानिकों का कहना है कि यह प्लेसिबो प्रभाव मानसिक बीमारियों के उपचार में भी बहुत कारगर साबित हुआ है । प्लेसिबो प्रभाव वास्तव में रोगी की इच्छाओं और आकांक्षाओं से जुड़ा है ।

एक परीक्षण के दौरान एक रोगी का दांत निकालते समय चिकित्सकों ने उससे कहा कि अल्ट्रासाउंड मशीन से उसे बिल्कुल भी दर्द नहीं होगा और उसके बाद रोगी को बिना बताये उसका दांत निकालने से पहले चुपके से अल्ट्रासाउंड मशीन की उपस्थिति ही ज़्यादा महत्वपूर्ण थी, न कि उसका ऑन रहना, इसलिए उसे दर्द का एहसास नहीं हुआ ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि हालांकि प्लेसिबो प्रभाव से कैंसर अथवा हृदय रोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह तथ्य अभी तक पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाया है किन्तु यह पूर्णतया स्पष्ट हो चुका है कि किसी भी प्रकार के दर्द को दूर करने में प्लेसिबो प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है ।

● योगेश कुमार गोयल

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

ہماری اہم مطبوعات

رسول کریمؐ کی سیرت اور تعلیمات پر

حضرت محمدؐ: آغوش آمنہ سے غار حرا تک	علی اصغر چودھری	100.00
حضرت محمدؐ: غار حرا سے غار ثور تک	علی اصغر چودھری	125.00
حضرت محمدؐ: ہجرت سے الرفیق الاعلیٰ تک	علی اصغر چودھری	150.00
حیات رسولؐ (کویز)	علی اصغر چودھری	50.00
سرور عالمؐ	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	10.00
میلاد النبیؐ	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	10.00
محسن انسانیتؐ	نعیم صدیقیؒ	300.00
محمد عربیؐ	مولانا محمد عنایت اللہ سبحانی	150.00
اسوۂ رسولؐ اور ہم	مولانا محمد عنایت اللہ سبحانی	18.00
جلوۂ فاراںؐ (سیرت رسولؐ بیک نے انداز سے)	مولانا محمد عنایت اللہ سبحانی	100.00
رسول کریمؐ کی سماجی زندگی	متین طارق باغپتی	100.00
سیّد انسانیتؐ	نعیم صدیقی	75.00
رحمۃ للعٰلمین سیرت اور تعلیمات	مولانا سید جلال الدین عمری	16.00
حضرت محمدؐ آخری رسول-آخری رہ نما	مولانا سید جلال الدین عمری	12.00
سیرت نبویؐ پر اعتراضات کا جائزہ	ڈاکٹر محمد شمیم اختر قاسمی	130.00
حیات سرور کائناتؐ	ابوبکر سراج الدین	290.00
عہد نبویؐ کا مدنی معاشرہ	ڈاکٹر سید محمد لقمان اعظمی ندوی	330.00
سیرت رسولؐ دروس اور نصائح	محمد سعید رمضان البوطی	320.00
سیرت سرور عالمؐ [اول،دوم]	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	750.00
سیرت رسول اور ہم	مولانا سیّد احمد عروج قادریؒ	80.00
سیرت ختم الرسلؐ	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	38.00
ختم نبوت	مولانا سیّد احمد عروج قادریؒ	16.00
محمد رسول اللہؐ کا اسوۂ حسنہ و کاملہ	مولانا سیّد احمد عروج قادریؒ	14.00
سیرت النبیؐ کا مطالعہ کیسے کریں؟	مولانا سیّد احمد عروج قادریؒ	10.00
آخری رسول حضرت محمدؐ سیرت اور پیغام	مولانا سید جلال الدین عمری	8.00
انسان کاملؐ	حمید شاہد	150.00

انگریزی اور ہندی کتابیں

Muhammad S.A.W. The Benefactor of Humanity	نعیم صدیقی	225.00
Muhammad The Guide of Mankind	محمد عنایت اللہ سبحانی	110.00
Relevance of Muhammad S.A.W	ایزابو زیہ	20.00
The Life of The Prophet S.A.W	ثروت صولت	45.00
The Life of The Prophet Muhammad S.A.W	عبدالرحمٰن عظام	18.00
The Prophet of Islam	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	10.00
Finality of Prophethood	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	20.00
क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल०	नईम सिद्दीकी	70.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)का संदेश	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	16.00
हज़रत मुहम्मद का आदर्श	ताहिर थानवी	16.00
प्यारे नबी कैसे थे ?	इरफान खलीली	20.00
अल्लाह के रसूल का व्यवहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फारूक खान	10.00
जगत-गुरु	अबू खालिद	40.00
विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद(सल्ल०)	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	12.00
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मुहम्मद इनायत उल्लाह सुबहानी	115.00

اردو، ہندی اور انگریزی زبانوں میں دینی، اصلاحی، تحریکی اور نصابی کتابوں کا اہم مرکز

MMI PUBLISHERS مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025 • Phone:26981652,26984347
• Fax:26987858 • E-mail:mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

Posted on 20-21 January 2015
February 2015
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.01.2015

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(क़ुरआन)

A WELL WISHER

TARIKERE
KARNATAK